गाजीपुर के सिद्ध सन्त

योगिराज पवहारी बाबा

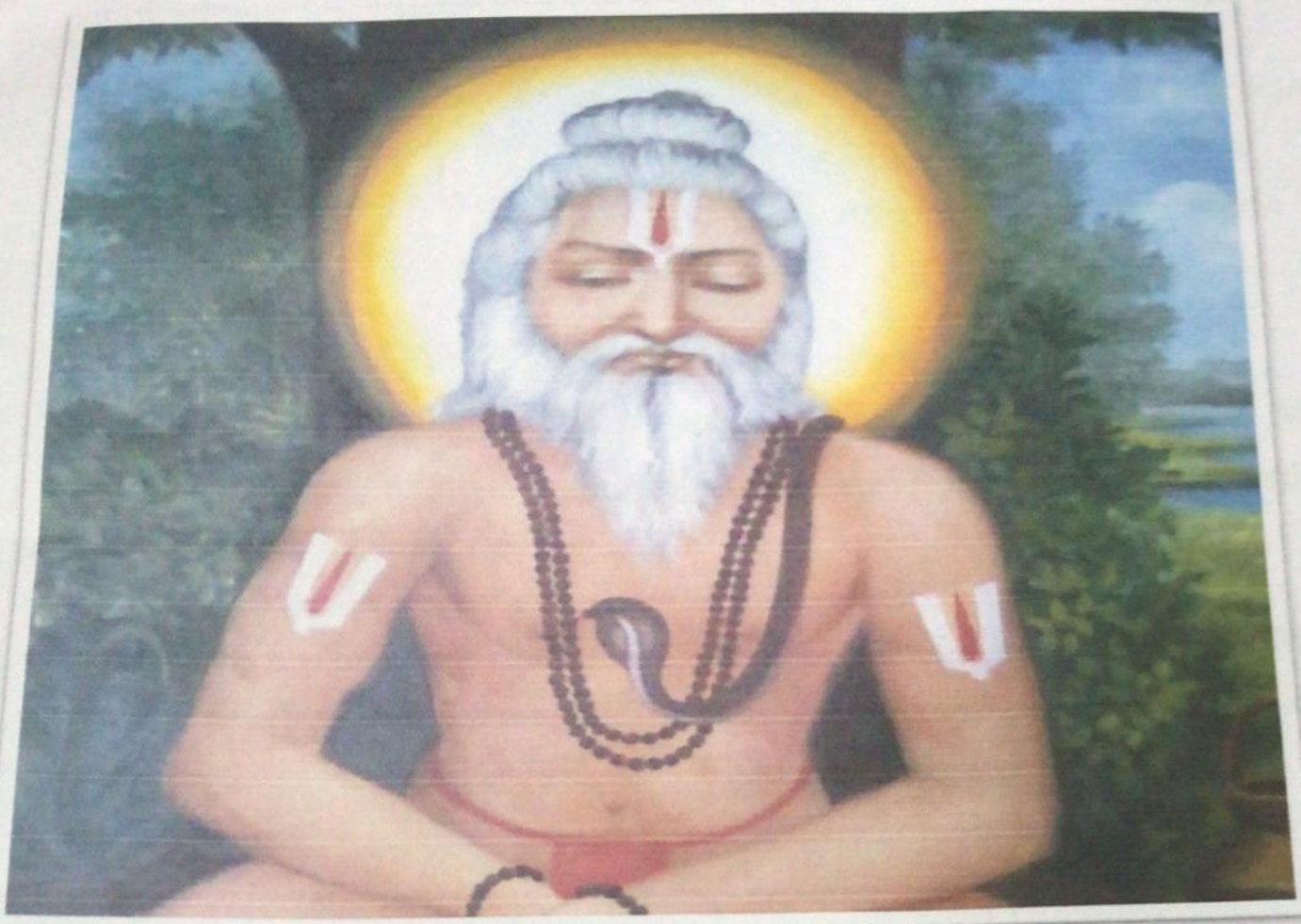

लेखिका डॉ० शकुन्तला राय

गाजीपुर जनपद का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्त्व

वैदिक काल से ही यह जनपद अपने गौरव शाली इतिहास के लिए प्रसिद्ध रहा है ऋषि परम्परा से सम्वृद्ध यह धरा अनेक विश्व विश्रुत ऋषियो महर्षियों और संतो की तपश्चर्या,अलौकिक सिद्धियों एवं आख्यानो से सम्पृक्त रही है। त्रैतायुग के महानायक मर्यादा पुरूषोतम भगवान श्री राम और लक्ष्मण की आर्य संस्कृति के संरक्षण की पृष्ठभूमि में राजर्षि से व्रह्मर्षि बने महर्षि विश्वामित्र जी का अरण्याच्छादित सिद्धाश्रम भी यही था जो सुरम्य वनराजि और यज्ञधूम से सुवासित,वेद की पवित्र ऋचाओं से सदा गुजांयमान रहता था। पार्श्व में घवल तरंगो की अवर्णनीय छटा से सुशोभित माँ गंगा की पावन धारा का प्रवल प्रवाह वन प्रांतर को अपने कल- कल निनाद और अविरल प्रवाह से दिव्यता की अनुभूति कराता रहता था ।

'उस समय अपनी दिगन्त व्यापी अक्षय कीर्ति के स्वामी व्रह्मर्षि का समस्त तपः पूत परिवेश रावण की विस्तार वादी नीति और आंतकवाद के पर्याय बने , ताड़का, मारिचि और सुबाहु के अत्याचारों से कराह रहा था। "शत्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिंता प्रवर्तते"का सिद्धांत ऋषिवर को उद्वेलित करता रहता था।

"विश्व के कल्याण,राष्ट्ररक्षा और आसुरी वृतियों के समूल नाश के लिये महर्षि ने महाराज दशरथ को आतंकवाद से घिरते जा रहे आर्यावर्त के संकट से अवगत कराया तथा यह भी बताया कि मेरे द्वारा आविष्कृत दिव्यास्त्रों को हस्तगत कर वह,राक्षसी और मायावी शक्तियों के द्वारा अपना साम्राज्य सुदृढ़ करना चाहता है ।

मेरे सिद्धाश्रम के आस-पास उसके गुप्तचर ऋषियों मुनियों द्वारा किये जा रहें यज्ञकर्म को रुधिर माँस और अस्थियों को फेकं कर यज्ञ विध्वंस के साथ-साथ तपस्यारत ऋषियों मुनियों को संत्रस्त ही नहीं कर रहे हैं वरन समस्त मानव जाति के लिये अभिशाप बन कर सनातन संस्कृति के समूल नाश पर तुले हुए हैं। इनके उत्पीड़न से देव संस्कृति को बचाने के लिये मुझे आपके पास आपके परम तेजस्वी पुत्रों राम और लक्ष्मण को मांगने के लिए आना पड़ा, मै अपनी समस्त विद्याओं एवं दिव्यास्त्रों का प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें त्रैलोक्य विजयी बना कर सनातन संस्कृति की रक्षा करूगाँ ।

महर्षि ने अपने शिष्यों राम और लक्ष्मण को बला और अतिबला जैसी अद्भुत विद्याओं और दिव्यास्त्रों का ज्ञान प्रदान कर मारिचि सुबाहु और हजारों हाथियों का बल प्राप्त करने वाली ताड़का का बध कर सम्पूर्ण क्षेत्र को इन दुष्टों से मुक्त कराया और निरापद बनाया।

उत्तर वाहिनी गंगा की रम्यता पावनता और अथाह जलराशि के विस्तीर्ण वालुका तट पर आश्रम बनाकर अपनी साधना से लौकिक और अलौकिक सिद्धियों से इस श्रेत्र को वैभव और ज्ञान विज्ञान के चरम शिखर पर पहुँचाने वाले योगियों ,मुनियों और तपस्वियों का अवदान सदैव ही इस क्षेत्र को मिलता रहा हैं|

नीरव सघन वनराजि और पुण्यतोया माँ जान्हवी की अभिराम छटा से अभिभूत साधको सिद्धो और संतो ने इस धरा धाम को अपनी तपश्चर्या का केंद्र बनाया |

महर्षि गौतम, च्यवन ऋषि,महामुनि कण्व महर्षि यमदग्नि तथा भगवान परशुराम की दिग दिगंत व्यापी कीर्तिकथा आज भी चतुर्दिक व्याप्त है |

त्रेता युग में गंगा के उस पार महर्षि यमदग्नि का आश्रम था| जब हैहयवंशी राजा सहस्त्रार्जुन द्वारा उनके आश्रम को पादाक्रांत किया गया तो भगवान् विष्णु के आवेशावतार भगवान् परशुराम ने इस अत्याचारी की सहस्र भुजाओं का उच्छेदन कर डाला| अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने वाली यह धरती परशुराम जी की तपस्थली रही है| पौराणिक इतिहास में वर्णित यह घटना कि जब महाराज भगीरथ घोर तपस्या करके अपने पुरखो को तारने के लिये माँ गंगा को पृथ्वी पर ला रहे थे तो उनके रथ का पहिया (चक्र) यही रूक गया |

महर्षि जमदग्नि के कहने पर,महाराज भगीरथ ने शिवलिंग बनाकर पूजा की तब कही जाकर रथ का पहिया बाहर निकला | ये चक्रेश्वर महादेव कहलाये और यह स्थान चक्रबन्ध कहलाया अपभ्रंश रूप में यह अब चक्काबाँघ के नाम से अभिहित किया जाता है |

यहाँ पर माँ गंगा की अथाह घुर्मिल जल राशि की अनुपम शोभा अत्यंत मनोरम और हृदय ग्राही है| त्रैलोक्य से न्यारी परम पवित्र नगरी काशी की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं से समानता रखने वाली और समतुल्य घाट-बाट के कारण ही यह जनपद लहुरी काशी भी कहलाता है|

जमनियाँ क्षेत्र को गाहड़वाड़ वंश के राजा मदन के नाम से सम्पृक्त कर मदन बनारस के नाम से भी जाना जाता है। महाराज कुशिक के पुत्र राजा गाधि का यहाँ शासन था। और उन्होंने गाधिपुर की स्थापना की, ब्रहमर्षि विश्वामित्र इन्ही के पुत्र थे।

महर्षि कण्व की तपोभूमि - गहन विजन वन में स्थित कण्व महामुनि का आश्रम गंगा के विशाल कछार में स्थित था। वन्य पशुओं पक्षियों की गूंज अनुगूँज से मुखरित आश्रम यज्ञधूम से सुरभित तथा वेदपाठी बटुकों का आश्रय स्थल था। ऋषि कन्यायें अपने निसर्ग सौन्दर्य के साथ कोमल और सहज चित्त-वृतियों वाली भी थी। विहग शिशुओं और मृग छौनो के साथ सिंह शावको के प्रति उनका सहज स्नेह सर्वविदित था। पर्ण कुटीर निवासिनी वनकन्याओं में प्रकृति के प्रति अगाध स्नेह और करूणा का भाव जड़चेतन सभी को अपने मोहपाश में आबद्ध किये हुए था।

वृक्षों को अपने आलिंगन पाश में बाधँने वाली लता वल्लरियों, पुष्पित क्यारियों और द्रुमदलो का अभिसिंचन करने वाली ऋषि कन्याओं के बीच एक आख्यान उभरता है, अप्सरा मेनका और तपोधन विश्वामित्र की प्रणय गाथा का।

राजर्षि से ब्रह्मर्षि बनने की उत्कट अभिलाषा ने गाधितनय विश्वामित्र जी को कठोर तप साधना के लिये प्रेरित किया।

ऋषिवर की घोर तपस्या इंद्र को विचलित करने लगती है। फलत: ऋषि की तपस्या भंग करने के लिये स्वर्ग की दिव्य अप्सरा मेनका को भेजना, उसका ऋषि की तपस्या को भंग करना, और सद्य: जाता कन्या को वृक्ष की छाया में छोड़कर देवलोक को प्रस्थान कर जाने वाला वृतान्त भी विश्व- विश्रुत है।

प्रत्यूष वेला में गंगा स्नान से लौटते समय ऋषि प्रवर को शिशु का करूण क्रन्दन सुनायी पड़ता है। समीप जाकर देखा, तो शकुन्त नामक पक्षी द्वारा रक्षित कन्यारत्न को अपने आश्रम में उठा लाये और कन्या को शकुंतला नाम प्रदान किया।

ऋषि कन्याओं के मध्य उसका पालन- पोषण होने लगा। अतुलनीय देवोपम सौन्दर्य की स्वामिनी शकुन्तला और हस्तिनापुर के महाराज दुष्यन्त की प्रणय गाथा ने कालान्तर में सिंह शावको के दांत गिनने वाले शौर्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति भरत को जन्म दिया। ऐतिहासिक सत्यता जो भी हो विश्वामित्र की तपोभूमि होने के कारण, कण्व ऋषि का

आश्रम जो अपभ्रंश रूप में करण्डा कहा जाने लगा है,इतना संकेत तो अवश्य करता है की उनके जीवन के घटना क्रम की साक्षी ये घटनायें यहीं कही घटित हुई होगीं ।

आज भी इस क्षेत्र में स्थित कण्वाश्रम विगत की कथा का मुखर साक्षी बना हुआ है। एक आख्यान विजनौर जनपद का भी उभरता है, जँहा महाराज दुष्यन्त और शकुन्तला के समागम से भरत की उत्पत्ति, मेनका ताल आदि का वर्णन भी महाभारत कालीन घटना क्रम में वर्णित है।

गाजीपुर के मुख्यालय से एन.एच-29 जो गोरखपुर होते हुए नेपाल जाता है,इसी सड़क के पूर्व दिशा में लगभग 35कि0मी0 दूर स्थित महाहर धाम महाराज दशरथ और श्रवण कुमार की अक्षय कीर्ति का उपाख्यान अपने आंचल में समेटे हुए है ।

यहाँ अयोध्यानरेश महाराज दशरथ की गढ़ी,विशाल सरोवर, 335 बीघे का विहंसता विशाल कमल दह स्थित है ।

घनघोर जंगलो के बीच आखेट के लिये रथमार्ग से आने वाले महाराज दशरथ को नीरवता को भेदती एक ऐसी घड़-घड़ की आवाज सुनाई पड़ती है जिससे उन्हें आभास होता है कि कोई हिंसक वन्य पशु सरोवर के पास आ पंहुचा है,और वे अपना शब्द बेधी वाण आने वाली ध्वनि को लक्ष्य कर चला देते हैं ।

ठीक उसी समय अपने नेत्रहीन माता-पिता को काँवर में बिठा कर एक किशोर तीर्थाटन के लिये ले जा रहा था। प्यास से व्याकुल माता-पिता को जल पिलाने के लिये वह पुत्र काँवर को इमली के वृक्ष पर टांग कर, धवल वर्णी सरोवर की अथाह जलराशि में जैसे घट को पानी में डुबोता है, तत्क्षण ही वह तीर उसके ह्रदय को भेद देता है आद्दत की करुण चीत्कार सुनकर महाराज जब दौड़ते हुए वहाँ आते है तो तरूण की रक्तरंजित देह को देखकर अपराध बोध से काँप उठते है।

मरते हुए श्रवण कुमार के ये शब्द की "मेरे वृद्ध और अंधे माता-पिता को अतिशीघ्र जल पिला दीजियेगा । "महाराजा दशरथ इस ह्रदय विदारक घटना को जब उन वृद्ध दम्पति को बताते है कि" उनके पुत्र श्रवण कुमार के प्राण हन्ता वही हैं, तो क्रोध संताप और पुत्र विछोह की मर्मान्तक पीड़ा से छटपटाते हुए उन्होंने यह श्राप दिया कि" जिस प्रकार हम अपने प्राण प्रिय पुत्र के वियोग में

तड़प-तड़प कर प्राण त्याग रहे हैं उसी प्रकार तुम भी पुत्र वियोग में तड़पते हुए अपने प्राण त्याग दोगे।

असह्य वेदना और कम्पितगात महराज वन में उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार कर, निर्जन वन में निकटस्थ ऋषि आश्रम में जाकर इस जघन्य ब्रहम हत्या के दोष तथा प्रायश्चित हेतु श्राप मुक्ति का कोई उपाय बताने का आग्रह किया।

ऋषिवर की आज्ञानुसार भगवान शंकर माता पार्वती तथा शिव परिवार की स्थापना का आदेश प्राप्त कर,एक भव्य मंदिर का निर्माण भी कराया।

किमवद्न्तियों के अनुसार महाराज दशरथ की गढ़ी जिसे लोग उनका महल और उसमें गड़े खजाने की बात बताते है, तथा कहते है कि जिसने भी इसे खोदने का प्रयास किया है वे दृष्टिहीन हो जाते हैं। लोग ऐसा बताते हैं कि सर्पो द्वारा रक्षित होने के कारण इसे आज तक कोई पा नहीं सका है।

ग्रामीणों द्वारा प्रयुक्त 'रथवट शब्द इस ओर इंगित करता है की,अयोध्याधिपति रथमार्ग से (जो बाद में रथवट या रथवटी के रूप में प्रयुक्त होने लगा)। आखेट के लिये यहाँ आते जाते रहते थे, यहाँ से अयोध्या की दूरी मात्र 150 कि0 मी0 है।

स्वंतत्रता के बाद यहाँ के कलक्टर ने गढ़ी या महल की खुदायी खजाने को पाने की लालसा से करायी अवश्य किन्तु सर्पो की भयंकर फुंफकार से इस पर विराम लग गया। गढ़ी के भग्नावशेष तथा अतिक्रमण के कारण निरंतर लघु कलेवर में सिमटते जाते सरोवर के किनारे प्रस्तर की एक नाव बँधी होती थी। बारह से लेकर चौदह मंदिरों के विशाल परिसर में अद्भुत और अलौकिक तेरह मुखी शिवलिंग का अवस्थित होना और युगों-युगो से जन-जन की आस्था के केंद्र बिंदु बने सभी मंदिर, ताल, गढ़ी, सरोवर आदि पौराणिक और सांस्कृतिक सत्यता का निरूपण करते हुए दिखाई पड़ते हैं। कभी घनघोर जंगलों से घिरे हुए सैकड़ो बीघो वाला विशाल सरोवर जिसमें खिले रक्त कमलो की भीनी भीनी मादक सुगंध समस्त क्षेत्र को अपने अंक में समेटे हुए ऐसे रहस्य जाल का सृजन करती है जिसका वर्णन शब्दातीत हैं।

अगरू, चंदन, मोगरा, पाटल, पुष्पों की सुगंध, रक्त कमलों का मोहक अरूणिम सौंदर्य, अपराजिता की नीलवर्णी आभा, दुग्ध शर्करा गंगाजल मिश्रित धवलधार, में पाटल पुष्पों की

पंखुड़ियों से भगवान भूत-भावन का अहर्निश होता अभिषेक श्रद्धा की वेणियों में मन को ऐसा बाँध लेता है कि निर्निमेष पलके स्थिर हो जाती हैं।

सुना था अकाल ग्रस्त जनता ने धरती से आठ दस फीट नीचे तक कुएँ के लिए खुदाई की तो आदि अंतहीन तेरह मुखी शिवलिंग प्रकट हुआ जिसकी महिमा अपरंपार है।

कहते हैं यहां आकर कोई झूठी गवाही नहीं दे सकता है। रामायण और महाभारत कालीन अनेक ऐतिहासिक सत्यों को समेटे,आस्था का केंद्र बिंदु यह स्थान जनमानस को सहज ही अपने आर्कषण में बांध लेता हैं।

उत्तर वाहिनी गंगा के तट पर मोक्षदायिनी काशी की भाँति ही अर्द्धचंद्राकर घाटों मंदिरों और प्रस्तर निर्मित भवनों का संजाल तीनों लोको से न्यारी काशी की सी छवि दर्शाता है।

मां गंगा के दूसरे किनारे का दृश्य अद्भुत ही नहीं वरन अगणित तपस्वियों और ऋषियों की तपस्थली भी रहा है महाराज गाधि द्वारा बसाई गई यह नगरी ब्रह्मर्षि विश्वामित्र भगवान परशुराम, तपोधन कण्व, महामुनि मौनी बाबा, (चोचकपुर) सचिता पट्टी के नागा बाबा गंगा दास बाबा, पवहारी बाबा आदि दिव्य विभूतियों की कीर्तिलता के मनो मुग्धकारी निर्मल वितान से आच्छादित है।

मौनी बाबा धाम - जनपद से नाति दूर चोचकपुर धाम और उसकी अंतरकथा की अनु-श्रुतियों के अनुसार गंगा के दूसरे किनारे पर स्थित चकिया जनपद की अहीर कुल की कुल वधू दही बेचने नाव से गंगा पार करके प्रतिदिन आती थी

एक दिन किन्हीं कारणों से देर हो गई । रातघिर आई, जन शून्य तीर पर कोई नौका न मिलने के कारण वह गंगा तीरी संत मौनी बाबा के आश्रम पर जाकर बिलरव- बिलरव कर रोने लगी। संसार के सभी भौतिक आकर्षणों से विरत सिद्ध संत थे मौनी बाबा । उनका नवनीत के सदृश्य सुकोमल हृदय परदुःख कातरता से द्रवित हो उठा। मुनि ने प्रश्न किया "माई रो क्यों रही है" ? तो उसने बताया बाबा मैं उस पार से रोज दही बेचने आती हूं मेरा छोटा सा बच्चा भूख से तड़प रहा होगा रात घिर आई है अब मैं क्या करूं । उसे अपने पीछे-पीछे आने का संकेत कर गंगा तो पार करा दी किंतु चेतावनी दी कि "किसी को कुछ मत बताना" । घर पहुँचते ही गृह स्वामी गरज उठा अब तक कहाँ थी ? और अब इतनी रात में कहाँ से और कैसे आई ?

सन्त की बात भला कैसे बताती ? उन्होंने मना जो किया था | पति की क्रोधाग्नि की शिकार और लांक्षित वधू प्रातः काल जब पति के साथ बाबा के समक्ष आई तो सत्य का रहस्योद्घाटन होते ही पाषाण रूप में परिवर्तित हो गयी|

बारह सौ वर्ष पुराने मठ पर कार्तिक मास की तेरस को जागृत अवस्था में मौन रह कर समाधि लेने के कारण ये संत मौनी बाबा कहलाये मठ के बगल में ही "अहिरिनिया माई" का मंदिर भी बना है |

जनश्रुतियां ज़ो भी कहें वह पुरातन काल की हो या वर्तमान काल की यहां का कण-कण ऋषियों मुनियों की अविरल साधना तथा उनके लोकोपकारी चरित्र से अनूस्यूत है|

सिद्धों संतो और ऋषि परंपरा में आने वालों की लंबी श्रृंखला में अघोर पंथ के अवधूत संत भगवान कीनाराम की तपस्थली होने का गौरव भी इस जनपद को प्राप्त है| गंगापार चकिया और चंदौली जनपद की सीमायें इसे छूती हैं यही के कुलीन क्षत्रिय परिवार में 1602 ई0 में जन्मे अवधूत भगवान कीनाराम जी की ननिहाल देवल ग्राम गाजीपुर में थी| आज भी इस पंथ से संबंधित अनेक मठ मंदिर आपकी चमत्कारिक सिद्धियों की अदभुत कथा सुनाते हैं|

चार सौ साल पुराने पेड़ के नीचे आज भी अखण्ड धूनी जल रही है, जहाँ आपने तपस्या की थी|

जनपद से लगभग 8 मील दूर परमेठ में गंगा नदी के संगम तट पर बाबा नवलनाथ जी का धाम है जहाँ स्वयंभू शिव हल की फाल से टकराकर प्रकट हुए थे |

उत्तर वाहिनी गंगा के तट पर गंगा दास बाबा का आश्रम, कुर्था आश्रम और मौनी बाबा के आश्रम के मध्य वयपुर देवकली में स्थित है

अपने जीवन काल में अतिसहज सरल पर दुःख से द्रवीभूत होने वाले इन महापुरुष का सानिध्य हम बड़भागी जनपद वासियों को मिलता रहा है| स्वयं को दास्य भाव में स्थित रखकर चरण स्पर्श करने वाले से पूर्व भक्तों का चरण छू लेने की होड़ में जो कौतुकीय दृश्य उपस्थित होता था उसे स्मरण कर आज भी आंखें सजल हो उठती है |

भोजन और प्रसाद को पाये बिना कोई भी व्यक्ति लौट नहीं पाता था। छप्पर में प्रसाद बनाने का स्थान आज सभी सुविधाओं से युक्त भवन में स्थानान्तरित हो गया है और

भव्य भवन में संगमरमर की शिला पट्टीकाओं में उत्कीर्ण उनके जीवन रहस्य का अतीव सुंदर चित्रण करने वाली कलाकृतियाँ भक्तों के हृदय को अगाध श्रद्धा से भर देती है। विशाल परिसर में कृषि और ऋषि संस्कृति का मनोरम दृश्य आज भी उन महान सन्त की याद दिलाता है ,जो जन-जन के कल्याणार्थ सदा आतुर रहते थे ।

जनपद का पश्चिमांचल प्राचीन धरोहरों का गढ़ रहा है। जनपद मुख्यालय से लगभग 32 किमी दूर जखनियाँ तहसील में बाबरी पंथ की भुड़कुड़ा शाखा का उपासना केंद्र, सिद्ध पीठ भुड़कुड़ा मठ, भौतिकता को ललकारता हुआ दृष्टिगत होता है ।

यह वह भूभाग है जहाँ सगुण और निर्गुण सम्प्रदाय के संतों के तपोबल के आगे ब्रिटिश हुकूमत को भी झुकना पड़ा।

यहाँ दो मठ है। सतनामी परंपरा के निराकार स्वरूप का उपासना केंद्र 'भुड़कुड़ा मठ' और दूसरा है 'सिद्ध पीठ श्री हथिया राम मठ 'की सन्त परम्परा जहाँ हिंन्दू देवी देवताओं के साकार स्वरूप की उपासना होती है । अद्भुत और अविश्वसनीय लगने वाली किंमवदन्तियों को नकारने वालो को भी प्रत्यक्ष खड़ी दुर्ग की भाति अभेद्य दीवारों से घिरी धवलवर्णी भुड़कुड़ा मठ की कहानी अपनी रहस्यात्मकता और अदृश्य चुम्बकीय शक्ति से सहज अभिभूत कर लेती है।

गुलाल साहब,बूला साहब ,भीखा साहब ,चतुर्भुज साहब, जयनारायण साहब, नरसिंह साहब तथा इनके बाद के संतो के समाधियाँ लगभग चार सौ पाँच सौ वर्षों का इतिहास आपने अंक में समेटे हुए हैं ।

सुर्खी चूना और पटियों से निर्मित विशाल भवन की दीवारें निर्जीव से सजीव हो उठी। रामगढ़ से चलकर शेर की सवारी करके बाबा कीनाराम बाबा, भीखा साहब से मिलने आते हैं। भीखा साहब को जब इसकी सूचना मिलती है तो कहते हैं "देखो माया का शेर लेकर आगया तुम भी अगवानी के लिए चलो" और दीवारें चल पड़ी। कैसी विलक्षण साधना थी? तपोबल द्वारा फटी स्तम्भित दीवाल का लेखन आज भी साक्षी है कि लोग इसे देश-विदेश से देखने के लिए यहाँ आते रहते हैं। मठ के प्रांगण में स्थित कुएं के विषय में बताते हैं कि इसका जल 'अनमोल रतन' है इसका पान करने के बाद व्यक्ति शराब को हाथ नहीं लगाता। न्याय गद्दी पर जाकर कोई झूठी कसमें नहीं खा सकता।

अलौकिकता से भरी चमत्कारी कुर्सी और सिद्ध संतों की गगन चारी उड़न खटोलों की कहानी को छोड़ भी दे तो सिद्ध पुरुषों की चकित कारी दिव्य शक्तियों पर मुहर लगाती वह घटना कैसे भुलाई जा सकती है, जब जयनारायण साहब काशी जाने के लिए जखनियाँ रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में बैठ गए। टिकट न होने के कारण टी.टी ने उन्हें स्टेशन पर उतार दिया। लाख प्रयत्न करने पर भी रेल नहीं चली। इंजन स्टार्ट करने के लिए सभी उपाय किये गये,किंतु असफल रहे ।

तभी किसी ने कहा कि "जिस संत को आपने उतार दिया हैं उन्हें बिना बैठाये यह ट्रेन नहीं जा पाएगी"। क्योंकि वह सिद्ध-संत चुपचाप उतर तो गए किंतु इतना ही कहा कि "अरे बउरहिया हम एइजे रहब आ तू चल जइबू ?

तभी तो लंदन की सरकार ने सिद्धो संतों और सन्यासियों के लिए ट्रेन में टिकट का प्राविधान खत्म कर दिया था|

ज्ञान और विज्ञान को चुनौती देने वाली यह विलक्षण और सत्य घटना सनातन संस्कृति और अति मानस की शक्तियों का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो ज्ञान और विज्ञान के ऊपर परम ज्ञान पर अपना आधिपत्य रखते हैं|

<u>सिद्ध पीठ हथिया राम मठ</u> - घनघोर वनों से आच्छादित बेसों नदी के तट पर आज से लगभग नौ सौ वर्ष पूर्व एकांतिक साधना में लीन एक संत "माटी की चौरी" बना कर उपासना किया करते थे|

हाथियों के झुंड के झुंड उन्हें घेरे रहते थे| फलत: जन-जन द्वारा आदृव संत ग्राम वासियों के लिए श्रद्धा और विश्वास के केंद्र बन गये और वे उनका पूजन करने लगे।

कालांतर में उनके द्वारा पूजित स्थान को लोग बुढ़िया माई या (मृण्मयी चौरी की) बृद्धाम्बिका माता का स्थान मान कर श्रद्धा विभूत हो उठे|

गुरु दत्रात्रेय शुकदेव और शंकराचार्य से आरम्भ हुई वैदिक परंपरा के अनुसार इस विशाल मठ के यज्ञ मंडप में वैदिक मंत्रों द्वारा हवन पूजन भंडारा इत्यादि निरन्तर चलता रहता है | आदि गुरुओं का सम्बन्ध सुदूर दक्षिण में तिरुपति बालाजी मंदिर से भी जुड़ा हुआ है, यतियों, सिद्धों और संतों की तपस्या की समस्त ऊर्जा इस सिद्ध पीठ के कण-कण में समाहित है।

लगभग 700 वर्षों से यहाँ अनके सिद्ध पुरुषों के तपोबल द्वारा असाध्य रोगों के निदान की परंपरा भी चली आ रही है। यहाँ पर पक्षाघात से पीड़ित व्यक्तियों को विभूति तथा 40 दिन तक दर्पण देखकर वृद्धाम्बिका माता के आशीर्वाद स्वरुप रोग मुक्त होते भी देखा जाता है।

कहते हैं यहाँ की पवित्र धरती किसी भी सन्त को सिद्ध बना देती है। यह स्थल सिद्ध संतों के तप के प्रकाश का पूंजीभूत रूप है ।

नवरात्र में लगने वाले विशाल मेलों में भक्तों की अपार भीड़, "माता वृद्धाम्बिका" और "सिद्धिदात्री माँ" के साथ उन सिद्धों, संतों और यतियो को भी नमन करने आती है, जिन्होंने अपनी संपूर्ण ऊर्जा को इस दिव्य परिधि में पूंजीभूत कर दिया है।

जूना अखाड़े ने पूर्व पीठाधीश्वर सन्त शिरोमणि पवहारी बाल कृष्ण यति जी महाराज को महामंडलेश्वर की उपाधि प्रदान की। वर्तमान समय में हथियाराम मठ के पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर पूजनीय भवानी नन्दन यति जी महाराज जूना अखाड़े के वरिष्ठ महामंडलेश्वर है। आपका कथन है कि "सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो विश्व का कल्याण हो", के ध्येय वाक्य पर विश्वास करता है|

जनपद का पूर्वोत्तर भाग- ऐतिहासिक धरोहरों और ध्वंसावशेषों के आधार पर बौद्ध कालीन शिलालेखों स्तूपों तथा स्तम्भों की प्रामाणिकता इस ओर इंगित करती है कि यह स्थान भगवान बुद्ध की शिक्षा स्थली रहा है।

आज का (औड़िहार) कभी औहरहार कहलाता था| तथागत की तप:स्थली सारनाथ से अधिक दूर नहीं है। यह भाग देश की अस्मिता और सुरक्षा से भी सम्बंद्ध रहा है। गुप्त राजवंश के महान प्रतापी सम्राट स्कंद गुप्त का शिलालेख और विजय स्तंभ पर उत्कीर्ण गौरवगाथा अखण्ड भारत के शौर्य पराक्रम और अतीत के वैभव का प्रामाणिक साक्ष्य है|

स्वर्ण और रजत मुद्राओं, चाँदी के बर्तनों, मूर्तियों तथा बहुमूल्य पुरातात्विक अवशेष गुप्तवंश के स्वर्णयुग के वैभव पराक्रम और असाधारण कीर्ति के मूक उद्घोषक बनकर खड़े हैं। बर्बरता के लिए कुख्यात हूणों का समूल नाश करके लौटते समय सैदपुर भीतरी के इसी स्थान पर विश्राम करने वाले सम्राट स्कंदगुप्त का लाल पत्थरों से निर्मित विजय स्तम्भ आज भी उस शौर्य पुरुष के प्रति अगाध श्रद्धा का केंद्र बिंदु बनकर 'लठबीर' बाबा

के नाम से पूजित है, 'विदा' की डोली हो या अर्थी, हर्ष और अमर्ष के क्षणों में भी कुछ पल के लिये विलम कर अपराजेय पौरूष को नमन करके ही यहाँ से विदा होती हैं।

यत्र तत्र सर्वत्र बिखरे इतिहास के हीरक कणों का बिखराव इस जनपद के कण-कण में रचा बसा है। आध्यात्मिकता का अविरल प्रवाह हो या शूरों की धरती का गौरव अपने मान बिंदुओं

के रक्षण में तत्पर बलिदानी धरती की कोख से जन्मे असंख्य नर नाहर अपने प्राणों की आहुति देकर भी स्वधर्म और स्वदेश के रक्षण में तत्पर रहे हैं।

यह क्षेत्र सम्राट पृथ्वीराज के वंशज राजा मान्धाता का गढ़ कहा जाता था| दिल्ली सल्तनत की आधीनता स्वीकार न करने के कारण मुहम्मद बिन तुगलक के सिपहसालार सैयद मसूद अल हुसैनी से राजा का भयंकर युद्ध हुआ। (कुष्ट-पूत) कठउत मे दोनों सेनाओ में भीषण मार-काट मची। विजयी हुसैनी को सुल्तान की ओर से मलिक अल-सादात गाजी की उपाधि से नवाजा गया। इसने गौसपुर को अपना गढ़ बनाया, जो पुण्य सलिला मां गंगा की अभिराम छटा से शोभित मार्ग के दूसरे भाग में अवस्थित है| राजा मान्धाता का एक मंदिर भी यहां स्थित है, जो इतिहास पुरुष की स्मृति को सजीव करने में अब भी समर्थ है|महाराज कुशिक के पुत्र राजा गाधि द्वारा स्थापित गाधिपुरी कालान्तर में गाजीपुर बन गया।

केवड़े के विशाल वृक्षों,वेला,जूही,चम्पा,चमेली,गेंदा,गुलाब,सुवर्ण केतकी पुष्पों की तीव्र और मंद सुगंध से सुरभित यहाँ की धरती काल के अगणित रहस्यों को अपने में छुपाए हुए है। अतर गुलाब जल इत्र के लिए विख्यात, विज्ञान और ब्रिटिश हुकूमत को नकारती दिलदार नगर रेलवे स्टेशन की वह टेढ़ी रेलवे लाइन ग्राम देवी सायर माता के प्रताप की कथा सुनाती हो या वीर प्रसू गहमर गांव के शूरवीरों का यशगान करती मां गंगा की लहरें, जहाँ हर घर से एक नौजवान मां कामाख्या का अर्शीर्वाद लेकर भारत मां की रक्षा के लिए सेना में भर्ती होकर अपने प्राण हथेली पर रखकर सदा प्राणोत्सर्ग के लिए तत्पर रहता है|

ब्रिगेडियर उस्मान की मातृभूमि प्रियता हो या भारत पाक युद्ध में अमेरिकी पैटन टैंको की धज्जियाँ उड़ाने वाले परमवीर चक्रविजेता वीर अब्दुल हमीद की यशोगाथा को भला कौन नहीं जानता? शेरपुर गांव के अष्टशहीदों का अप्रतिम बलिदान युगों-युगों तक जन-जन को अनुप्राणित करता रहेगा |

सन् 1857 के महानतम विद्रोह और जंग के प्रेरणा स्रोत प्रथम स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडेय की जन्मभूमि का गौरव भी इसी जनपद को प्राप्त है। यद्यपि वह गांव आज बलिया जिले के अंतरगत आता है। बलिया 1879 में गाजीपुर से अलग हुआ था | मनस्वियों, शूरवीरों, तत्व चिंतकों और युग की धारा को मोड़ने वाले कलमवीरों का गढ़ भी यहाँ की धरती रही है।

सहस्त्राब्दियों पूर्व रचित भारतीय संस्कृति के महानतम धर्मग्रन्थ "महाभारत" की पटकथा तथा सम्बाद के लेखक तथा आधुनिक वेदव्यास की संज्ञा से नवाजे जाने वाले डॉ० राही मासूम रजा गाजीपुर के गंगोली गांव में जन्मे ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने युगधार बदल दी।

हिंदू और मुसलमानों के बीच की लकीर ही खत्म कर दी। संवादों की अप्रतिम लोकप्रियता ने विश्वभर में महाभारत की अमरगाथा की अनुगूँज को गुंजित कर दिया|

"मैं समय हूँ" की पंक्तियों का यह छोटा सा अंश सुनते ही गलियाँ सुनसान हो जाती थीं| मंत्रमुग्ध जन-जन तब तक यंत्रवत बैठा रहता था, जब तक सीरियल समाप्त नहीं हो जाता था।

स्वयं को गंगा का बेटा कहने वाले डॉ० साहब का या उदघोष की "मैं ही लिखूँगा महाभारत" और अंत में गंगा की लहरों में स्वयं को समाहित कर देने की उत्कट अभिलाषा रखने वाले यह कलावन्त यहीं की विभूति तो थे ?

आंग्ल साहित्य के उदभट विद्वान जब हिंदी साहित्य के ललित निबंधों में वेदों, उपनिषदो, आरण्यकों तथा पौराणिक आख्यानों के साथ अपने मौलिक चिंतन तथा अद्भुत शिल्प सर्जना के द्वारा सनातन संस्कृति की व्याख्या में उतरे आचार्य कुबेरनाथ राय के प्रति मन अगाध श्रद्धा से भर उठा। एक साक्षात्कार में कुतुहलवश कुछ जानने की जिज्ञासा से पूछा था "गुरुवर आपकी रचनाओं को पढ़ने और समझने के लिए क्या करना चाहिए?

तो एक मोहक मुस्कान और मृदुहास्य से गौरववर्णी आनन दीपित हो उठा "बोल उठे" देखो शकुंतला! तुम्हारे गुरुवर डॉ० विवेकी राय 'आम' के लिए लिखते हैं और मैं 'खास' के लिए।

मेरी रचनाओं को समझने के लिये वेदों, पुराणो, उपनिषदों तथा आर्षग्रंथों को पढ़ लेना चाहिए। मेरा हृदय श्रद्धा से पूरित हो गया। धन्य है यमदग्नि ऋषि की यह पवित्र धरा

जहाँ ऐसे मनीषी युग-युगों तक दीप स्तम्भ की भाँति ज्ञान ज्योति का आलोक बिखरते रहेंगें।

अपने गुरुजनों के प्रति श्रद्धा की अछोर छोर में बंधा मेरा मन अपने गुरुदेव डॉ० विवेकी राय जी की विपुल कालजयी रचना धार्मिता को स्मरण कर भाव विभोर हो उठा, जिनके 'पवहारी बाबा' पर वर्णित लेख को पढ़कर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम और साहित्यिक मित्र आचार्य विष्णुकांत शास्त्री जी इस पुस्तक के महानायक 'योगिराज पवहारी बाबा' का दर्शन करने के लिए यहाँ पधारे थे| आश्रम के पुजारी पूजनीय श्री अमरनाथ तिवारी जी उनके द्वारा बार-बार रज कणों का स्पर्श कर अपने मस्तक पर लगाते हुए देखकर भावाभिभूत हो गये|

दोनों मित्रों का 'पवहारी बाबा' के प्रति यह अनन्य प्रेमाभक्ति भीतर तक भाव उर्मियो की लहरों से मन को तंरगित कर गया |

किंम् बहुना इस माटी में उपजे रससिद्ध गीतकारों की श्रृंखला में भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गीतकार भोलानाथ गहमरी जी को भला कैसे न स्मरण किया जाय?

"अंजुरी भर मोती के रचनाकार ने 'सबेरा' फिल्म के गीतों के साथ-साथ"

"जय जय गाधिपुरी की जय है|

जय महासन्त पवहारी"

की रचना कर महासन्त को अपनी विनम्र श्रद्धांजली अर्पित की है|

साहित्य, संगीत, कला में ही नहीं वरन मल्ल युद्ध में अपनी विजय का डंका बजाने वाले हिंद केशरी स्व० मंगला राय और पहलवान हरिनारायण राय जी की अजेय ख्याति की एक झलक तब दिखाई पड़ी जब मल्लयुद्ध में भयंकर सिंह को उन्होंने अपने बाहुबल से यमलोक पहुँचा दिया। यही की माटी में लोट-पोट कर बड़े हुए थे।

किसान आंदोलन के जनक दण्डी स्वामी, 'स्वामी सहजानंद सरस्वती' जी की जन्म भूमि भी यही हैं । कहने का तात्पर्य यही है कि राजा गाधि की इस नगरी का कण-कण अजस्र उर्जा से उर्जस्वित हैं|

"उत्तिष्ठत, जाग्रत प्राप्य बरान्निबोधयत" के मूल मंत्र के उद्घोष द्वारा जन-जन को आत्म गौरव के शिखर तक पहुँचाने वाले, महीनों तक एकत्रित सूखी रोटियों को जल में भिगोकर अपनी क्षुधा मिटाने वाले अपने देश के अकिंचन दरिद्र नारायणों की दीन-हीन दशा को देखकर क्षुभित होने वाले तथा भयंकर स्वार्थपरता से ग्रसित मानसिकता वाले लोगों की राष्ट्र धर्म की सुप्त चेतना की आग को दावानल बनाकर धर्म के माध्यम से राजनितिक और सांस्कृतिक युद्ध को लड़ने वाले आध्यात्मिकता और दार्शनिकता के आधार पर अखंड राष्ट्र के निर्माण की अभिलाषा लिए हुए एक तरुण तपस्वी स्वामी विवेकानंद इस पावन धरती पर जिस महायोगी की दर्शनाभिलाषा से पदार्पण करते हैं वह है "योगीराज पवहारी बाबा"।

ब्रिटिश राज में यह धरती अफीम और नील की खेती के लिए प्रयुक्त की जाने लगी।

यूरोपीय देशों में नील की अधिक मांग तथा राजस्व की उगाही का प्रमुख आधार अफीम की खेती से अपना राज्य कोष भरने के लिए क्षारोद कारखाने (अफीम फैक्ट्री) की स्थापना ने इन जनपद को विश्व पटल पर अंकित कर दिया ।फलत: नील की खेती से भूमि के बंजर होने तथा अफीम की खेती से इस देश के भावी कर्णधारों को नशे का आदी बनाने के कुचक्र के दुहरे अन्याय का नया अध्याय शुरू हो गया। इधर दो-दो युद्धों का सामना करते हुए चीन ने भी अपना महाद्वार जलमार्गीय व्यापार विनियम के लिए खोल दिया। बंगाल के अनेक लोग क्षारोद कारखाने में कार्यरत थे। नील माधव घोष, मुंसिफ श्रीशचंद्रवसु, गगन चंद्र राय तथा सतीश चंद्र मुखोपाध्याय गंगा तीरी गुफावासी योगीराज पवहारी बाबा से अत्यंत प्रभावित थे।

स्वामी रामकृष्ण देव एवं विवेकानंद के सानिध्य में आने वाले तत्कालीन प्रख्यात साहित्यकार, समाज सुधारक एवं लब्ध प्रतिष्ठ ब्राह्म समाजी केशव चन्द्र सेन अपने अनुरागी अनुयायियों के साथ सन् 1880 में पवहारी बाबा का दर्शन करने आये थे।

उन्होंने 5 जून 1981 की पत्रिका में "उल्लेखनीय तपस्वी सन्त" शीर्षक में अपने समकालीन चार संतों का उल्लेख किया है। स्वामी दयानंद सरस्वती, गाजीपुर के पवहारी बाबा, डुमरॉव के सिक्ख संत नागाजी एवं कोलकाता के रामकृष्ण परमहंस जी।

नील माधव, विजय एवं अन्य ब्राह्म समाजियों के साथ 27 अक्टूबर सन् 1882 को गंगाजी में जल विहार करते हुए केशव चंद्र सेन ने रामकृष्ण परमहंस जी को यह बताया कि "इन लोगों ने पवहारी बाबा को देखा है। वे गाजीपुर में रहते हैं आपकी तरह एक और हैं"। उन्होंने आपका फोटो ग्राफ अपने कमरे में रखवा रखा है। (1)

त्रैलोक्य नाथ सान्याल द्वारा लिखित "नववृंदावन" नामक नाटक का मंचन केशवचंद्र सेन के घर पर हुआ था, जिसमें रामकृष्ण देव जी पधारे थे। इसमें केशव चंद्र सेन और विवेकानंद जी ने क्रमशः पवहारी बाबा और योगीश्वर अमेदानन्द की भूमिकाये निभायी थी। (2)

बंगाल में ब्राह्म समाज के संस्थापक, पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित, दार्शनिक तत्ववेता एवं समाज सुधारक केशवचंद्र सेन का जन्म 19 नवंबर सन् 1838 को हुआ था। अपने अकाट्य तर्कों तथा अद्भुत बौद्धिक क्षमता से इंग्लैंड की महारानी को भी चमत्कृत करने वाले केशवचंद्र सेन ने, लाखों अनुयायियों, के जीवन के आधार तथा ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति रामकृष्ण परमहंस जी के साथ अपने चुने हुए 100 शिष्यों को लेकर उनकी आध्यात्मिक मान्यताओं को खण्डित करने का निश्चय किया था।

परमहंस जी के शिष्यगण भयाकुल थे कि कहीं हमारे महानगुरु इन नास्तिक कुतर्कियों से हार न जाय। पौर्वात्य और पाश्चात्य संस्कृति का द्वन्द चरम पर था। भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के प्रति ऋषि तुल्य असाधारण व्यक्तित्व वाले प्रोफेसर मैक्समूलर के रम्य कुटीर में स्वामी विवेकानंद जी जब उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धा निवेदित करने पहुँचे तो प्रोफ़ेसर साहब ने केशव चंद्र के प्रति यह जानने में रूचि दिखलाई की किस शक्ति के द्वारा इनके जीवन में सहसा महत्वपूर्ण परिवर्तन घटित हुआ?

विवेकानंद जी ने बताया कि "घटना इस प्रकार घटित हुई की सन् 1875 में दक्षिणेश्वर से दूर एक बाग में अपनी शिष्य मंडली के साथ परमहंस जी को डिबेट में हराने के लिये वह पधारे और ललकारते हुए कहा कि "मैं तुम्हारे गुरु से बहस करने आया हूँ"।

---

1. श्री रामकृष्ण परिक्रमा (वंगला) पृष्ट 212 काली जीवन देश शर्मा

2. श्री राम कृष्णओं वंगीय रंगमंच (बांगला) पृष्ट 8 नलिनी रंजन चट्टोपाध्याय

रामकृष्ण परमहंस जी ने शिष्यों की चिन्तित मुरव मुद्रा को देखकर कहा की "आने दो उसे"। और प्रतीक्षा में सड़क पर आकर खड़े हो गये।

आते ही अपने प्रतिद्वन्दी को गले से लगाते हुए पूछा "पहले क्यों नहीं आया"? और अपने साथ मंदिर में लेकर चले गये।

अपार जनसमूह के समक्ष यह मंच आयोजित हुआ था।

गुरु ने कहा "शुरू करो" ।

प्रथम स्पर्श की पुलक से स्तम्भित सेन से कहा "मेरे पास आओ, मुझे देखो" माना कि तुम्हारे पास बेहतरीन बुद्धि है तो यह बुद्धि कहाँ से आयी? ब्रह्माण्ड की प्रकृति बुद्धि युक्त है"। और आनन्दा तिरेक से नाचने लगे। केशव की नकारात्मकता तिरोहित हो गयी। केशव रूपान्तरित हो चुके थे। उनकी भव्यता और आनंद को देखते हुए अपनी तर्क बुद्धि से रिक्त हो चुके थे। चरणों पर गिर पड़े और क्षमा याचना की।

गुरुवर ने कहा "मैं एक शर्त पर माफ करूँगा कि आये दिन मिलने आया करोगे"?

अविद्या रूपी पूँछ झड़ गयी। अपने साथियों के साथ जहाज में बैठ कर गुरुदेव के पैरों के पास फल आदि रख कर चरणों में बैठ जाते कभी-कभी अपने कमल कुटीर पर बुला कर सत्संग करते ।

गुरुवर के दिव्य सानिध्य ने केशव को बैदिक धर्मानुरागी बना दिया। अब वे परमार्थ की राह पर चल पड़े। इन्हीं केशव चन्द्र सेन पर गुरु का इतना असीम स्नेह उमड़ा कि उनके व्याधिग्रस्त होनें पर उन्हें रोग मुक्त करने के लिए जगदम्बा से कहने लगे "माँ गुड़ और नारियल चढ़ाउँगा"।

केशव के प्रति कितना प्रेम था यह तो तब दिखा जब उनकी मृत्यु के पश्चात रामकृष्ण देव जी ने कहा था "तीन दिनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा, लगता था एक अंग ही गल कर गिर गया है"।

परमहंस देव की विकलता अकारण नहीं थी, बंगभूमि में ब्राह्म समाज के संस्थापक केशव चंद्र सेन, निराकार ब्रह्म की साधना द्वारा ईश्वर प्राप्ति का तत्वज्ञान और फिलासफी की भावधारा में अनेकों अनुयायियों जिनमें त्रैलोक्य नाथ एवं प्रतापचंद्र & आदि जैसे तत्व ज्ञानी

थे, रामकृष्ण देव ने उनकी संकुचित मनोवृति पर आघात करते हुए बताया कि "पुस्तकीय ज्ञान के बिना भी व्याकुल अंतः करण से पुकारने पर प्रभु अवश्य दर्शन देगें। साकार या निराकार दोनों भाव से उनका साक्षात्कार कर सकेंगे" ।

दास्य सख्य, वात्सल्य और मधुर भाव द्वारा प्रभुभक्ति की अहैतुकी भक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा ।

1875 से लेकर 1882 तक के सानिध्य ने केशवचंद्र के हृदय को अपूर्व रूप से परिवर्तित कर दिया। समस्त ब्राहम समाज भक्ति रस की दिव्य माधुरी में डूबने लगा।

अपने मित्र मंडली के साथ साधना के उच्च शिखर पर आरूढ़ पवहारी बाबा के दर्शन के निमित्त वे गाजीपुर आये थे।

रामकृष्ण परमहंस जी के निर्वाण प्राप्ति के पश्चात उनके उत्तराधिकारी विवेकानंद जी पवहारी बाबा से पूर्व परिचित तो थे ही, तीव्र तितीक्षा और दर्शन की अदम्य लालसा उन्हें गाज़ीपुर खींच लाई।

डॉ विवेकी राय जी के शब्दों में "स्वामी विवेकानंद कुरथा गांव गाजीपुर में 22 जनवरी 1890 को सिद्ध संत पवहारी बाबा का दर्शन करने के लिए उनके आश्रम में गये थे।

इस रेल यात्रा के बीच एक विचित्र रोचक घटना घटी। ट्रेन में बैठे एक धनी और नास्तिक वणिक ने गेरुआ धारी एक युवा सन्यासी को देखा तो व्यंग्य से कटाक्ष तथा अपमानित करते हुए कहने लगा कि "अरे"! देखो पैसे में कितनी शक्ति है? तुम तो पैसा कौड़ी रखते नहीं, उसका फल भोग रहे हो? तभी एक दैवीय घटना घटी। ताड़ीघाट स्टेशन पर एक अनजान व्यक्ति एक सुराही जल, सिर पर गठरी और हाथ में दरी लिये हुए, प्लेट फार्म पर विस्फारित नेत्रों से चारों ओर देख रहा था। वह स्वामी जी के पास पहुंचकर बोला "आप धूप में क्यों बैठे हैं? छांव में चले, मैं आपके लिये भोजन पानी लाया हूँ ।

स्वामी जी ने कहा "तुम भूल कर रहे हो" तब उसने अपने स्वप्न की बात बतलायी की "श्री रघुनाथ जी" ने स्वप्न में मुझे आदेशित किया है कि "मेरा एक साधु स्टेशन पर भूखा-प्यासा पड़ा हुआ दुःख भोग रहा है, तू तुरंत जाकर उसकी सेवा कर| स्वामी जी ने पूछा "तुमने कैसे पहचाने कि मैं ही वह साधु हूँ"? और श्रद्धा से विगलित होते हुए उसने कहा कि "यह सब राम जी की लीला है"। मैं एक हलवाई हूँ| भोजन के पश्चात निद्रित अवस्था

में यह स्वप्न देखा, और इसे मन का भ्रम समझ कर करवट ली, और पुन: सो गया। पुनः श्री राम जी का स्वप्न में आदेश पाकर सुबह की बनी मिठाईयाँ और पूड़ी सब्जी बनाकर लाया हूँ"।

अब बारी उस व्यापारी की थी, जिसने स्वामी जी को टीनशेड में भी बैठने नहीं दिया था। यह सब देखकर अनिष्ट की आशंका से नतमस्तक व्यापारी अब स्वामी जी से क्षमा याचना कर रहा था, जो अब तक व्यंग्य बाण चला रहा था।

स्वामी जी गाजीपुर पहुँच कर अपने बाल्य सखा सतीशचन्द्र मुखोपाध्याय के आवास पर पहुँचे।

आचार्य कुबेर नाथ राय के शब्दों में "स्वामी विवेकानंद ने **A saint of Ghazipur"** नामक पुस्तिका लिखी है। इन्हें अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस देव के समकक्ष साधना में मानते थे। स्वामी जी ने पवहारी बाबा पर लिखी पुस्तिका में उनके व्यक्तिगत जीवन पर ज्यादा प्रकाश नहीं डाला है, और फिर सन्यासी का व्यक्तिगत जीवन होता ही कहाँ है? फिर साधना के बाद व्यक्तिगत जीवन का कोई महत्व नहीं रहता। तो भी जनकल्याण के लिये उनका एक जीवन चरित्र लिखा जाना जरूरी हैं।

और इन्हीं शब्दों का आश्रय लेते हुए इन अद्भुत और अलैकिक महासन्त के जीवन परिचय का वृतांत प्रारम्भ होने जा रहा है।

जन्मस्थान- काशी के निकट वर्ती जनपद जौनपुर के अंतर्गत यादवेंद्र नगर जिसका पूर्ववर्ती नाम केशवनगर था, जौनपुर स्टेशन से पहले पड़ता है, उसी से चार फर्लांग की दूरी पर गोमती नदी के अंक में प्रेमापुर नाम का गांव बसा हुआ है। पवहारी बाबा का जन्म 1840 ई0 में वेदज्ञ तपोनिष्ठ ब्राह्मण कुल में हुआ था। पिता अयोध्या तिवारी के ज्येष्ठ भ्राता बाल ब्रह्मचारी विरक्त सन्यासी लक्ष्मी नारायण जी, विशिष्ट अद्वैतमत के बडकली शाखा के आचारी वैष्णव थे, जो नासिका के ऊपर त्रिशूलाकार तिलक लगाते हैं।

जनपद जौनपुर से गाजीपुर की विस्मयकारी

यात्रा - पवहारी बाबा के ज्येष्ठ पिता लक्ष्मी नारायण जी तमिस्त्राच्छादित हिंसक जीवों से व्याप्त इस लघु अरण्य की छाया में उत्तर वाहिनी कल-कल निनादिनी सुरसरि का अजस्र और अविरल प्रवाह देख रहे थे| कानन की रम्यता ने मन को मोह लिया, वे तीन दिनों तक यहाँ ठहर कर योग साधना की बात सोच ही रहे थे कि अश्वारूढ़ अंग्रेज अधिकारी अपने साथियों के साथ आ धमका| उसने कुपित होकर उन्हें वहाँ से तत्काल चले जाने का आदेश दिया| घर लौटने पर अपने किसी परिजन को असाध्य रोग से ग्रस्त देखकर वह हतप्रभ रह गया| अपने परिचारक द्वारा यह पूछने पर कि "आपने किसी संत, महात्मा का अपमान तो नहीं किया है? वह विस्मित होकर क्षमा याचना के लिए पुन: आया| इस विषय में पूछने पर बाबा ने अपनी अनभिज्ञता व्यक्त की| उसके अनुरोध पर एक चुटकी विभूति उसे दे दी |

घर आने के पूर्व ही रोग का निदान हो चुका था| इस चमत्कारी घटना से विस्मय, विमुग्ध अधिकारी ने बाबा से मिलकर उनसे यहीं निवास करने की विनती की और उन्हें एक भूखण्ड आश्रम के लिये प्रदान कर दिया| स्वामी लक्ष्मी नारायण जी यहीं आश्रम बनाकर कुर्था कुटीर में रहने लगे|

हिंदी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान आचार्य कुबेरनाथ राय ने "पवहारी बाबा" लघु निबंध में पवहारी बाबा के पूर्वाधिकारी को "बुढ़ऊ पवहारी बाबा" कहा हैं| और उनके चमत्कारों और लोकोक्तियों के आधार पर उन्हें युवा पवहारी से अधिक बहुश्रुत माना हैं|

योगिराज पवहारी बाबा की अलैकिक ख्याति-

कुर्था कुटीर पर दो पवहारी बाबा हुए, एक तो वे जिन पर स्वामी विवेकानंद जी ने एक **"A great Saint of Ghazipur"** नामक पुस्तक लिखी है वे, और दूसरे पवहारी बाबा थे इनके ही पूर्वाधिकारी संत लक्ष्मीनारायण जी जो इनके ज्येष्ठ पिता थे। आचार्य कुबेरनाथ राय जी के शब्दों में-

---

"उनके चमत्कारों के बारे में भी लोकानुश्रुतियाँ प्रचलित है, जो इस वैज्ञानिक युग में विश्वसनीय नहीं है। परंतु विज्ञान एक सीमा बद्ध शास्त्र है। अधिमानस (Super mind) की प्रचण्ड शक्तियों का जगत इसकी सीमा से बाहर है। अतः यह घटनाएं सत्य भी हो सकती है"।

बुढ़ऊ पवहारी बाबा विशिष्टाद्वैत के श्री सम्प्रदाय में दीक्षित थे| तथा समेना गांव (आजमगढ़) के स्वामी रामाचार्य या रामाचारी जी से दीक्षित हुए थे, जिन्होंने दक्षिण के तिरुनेवल्ली और तिरुचि जैसे श्री सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गढ़ों में जाकर गहन शास्त्राध्ययन किया था। आचार्य कुबेरनाथ राय के प्रपितामह स्व० पलकूराय, गाजीपुर के पवहारी बाबा तथा विशुनपुर के पं० रामनारायण तिवारी के वंशज तथा अन्य ग्रामवासी भी पवहारी बाबा के प्रभाव मे आकर उनके गुरु स्वामी रामाचारी जी से ही दीक्षित हुए थे|

उन दिनों डुँमराव महाराज के दरबार मे दुर्गादास नामक शैवागम का और प्रत्यमिज्ञा दर्शन का बहुत बड़ा पंडित रहता था | वह इतना अहंकारी था की रास्ते मे कोई वैष्णव तिलक लगाये मिलता था, तो उसे जबरजस्ती पकड कर शास्त्रार्थ करता और उसे हराकर उसका तिलक धुलवा देता था | स्वामी रामाचार्य ने स्वंय जाकर उसे शास्त्रार्थ के लिए आहान किया था, और उसकी शैव मंडली को एक-एक कर पराजित किया था|

फलत: उनकी कीर्ति काशी क्षेत्र में व्यापक हो गयी|..... पवहारी बाबा ने गुरु दक्षिणा में स्वामी रामाचार्य को "श्री रामानुजाचार्य" के "गद्यत्रयम् की विस्तृत टीका लिख कर अर्पित की थी, हिंदी और संस्कृत में | अयोध्या तिवारी जी के ज्येष्ठ भ्राता बाल ब्रह्मचारी लक्ष्मी नारायण जी की ख्याति दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी | कुर्था ग्राम के निर्जन वन में पर्ण कुटीर में साधना रत महात्मा, योग साधना तथा भगवद्भजन में निमग्न रहते थे| बारह वर्षो तक अन्न त्याग देने के कारण लोग उन्हें पवहारी बाबा कहने लगे|

एक दिन वर्ष 1850 में पवहारी बाबा के पिता और लक्ष्मी नारायण जी के कनिष्ठ भ्राता अयोध्या तिवारी कुर्था के पर्ण कुटीर में भ्राता का दर्शन करने आये। उन्होंने देखा कि वे रुग्ण थे। मुख व पैरों में सूजन, क्षीण होती काया, धीमी होती जा रही नेत्र ज्योति देख कर मेट्ट प्रेम में विह्वल होकर रोने लगे।

उनके इस अनुरोध पर कि "बड़े पुत्र को आपकी सेवा में भेज देता हूँ। महात्मा लक्ष्मी नारायण जी ने कहा मैं तुम्हारे मंझले पुत्र शुक्राचार्य को ही चाहता हूँ"।

पवहारी शब्द का शुद्ध रूप है पय +आहारी अर्थात दुग्ध पान करने वाला

सन्त के इस आदेश में एक महासन्त की भूमिका निर्धारित हो चुकी थी ।

पवहारी बाबा (हरभजन दास जी) का जन्म 1840इ० में हुआ था। आप तीन भाई थे। ज्येष्ठ गंगा तिवारी कनिष्ठ बलिराम तिवारी और मंझले हरभजन दास जी थे। इनकी एक भगिनी भी थीं ।

शैशव काल से ही सौम्य शांत और सुपुष्ट देह यष्टि वाले हरिभजन दास जी की तेजस्विता को देखकर, महात्मा लक्ष्मी नारायण जी ने जब यह जाना कि माता के प्रकोप से (चेचक) इनकी एक आँख विनष्ट हो गई है, तब लक्ष्मी नारायण जी ने यह भविष्य वाणी की थी कि "यह राज लक्षण है। राजा रणजीत सिंह भी ऐसे ही थे"। (1) भविष्य द्रष्टा संत की वाणी अक्षरशः सत्य हुई । वे योगिराज राजाओं से भी बढ़ कर हुए। अयोध्या तिवारी जी अपने दस वर्षीय पुत्र शुक्राचार्य को लेकर पर्ण कुटी कुर्था आश्रम पर पहुंचे।

आश्रम हिंसक वन्य जीवो से भरा था। घोर अंधकार से घिरे हुए हंइसा के विशाल कंटीले बन, मां गंगा की अभिराम छटा और प्रकृति के निसर्ग सौंदर्य को देखकर सुकुमार कलेवर वाला बालक जो अभी शैशव की क्रीड़ाओ में रत रहता था, अब यहां आकर एक सर्वथा नवीन परिवेश को पाकर भी धीर गंभीर और शांत मन से महात्मा लक्ष्मी नारायण जी की सेवा में समर्पित हो गया।

माँ का स्नेहिल आंचल छूट गया था किंतु बाल सुलभ कौतूहल भरी विनोद प्रियता अभी शेष थी

बाल सखाओं के बीच ओल्हा पाती का खेल,जो वृक्षों की डाली पर चढ़कर खेला जाता था, बड़े उत्साह से खेलते थे। हरि भजन जी आश्रम के सभी दायित्वों को पूर्ण करने में सदैव तत्पर रहते थे। मां गंगा की सैकत शय्या ही उनका क्रीड़ागंण था।

1. मूल लेखक गगन चन्द्र राय बंगला अनुवाद " महात्मा पौहारी बाबा " अनु० स्व० रंगनाथ त्रिपाठी राकेश

ज्येष्ठ पिता की सेवा, उनके शिष्यों के साथ श्री रघुनाथ जी एवं अन्य देव विग्रहों के निमित्त राग-भोगादि को तैयार कराते हुए ये अपने अद्भुत चकितकारी भविष्य की संरचना में निमग्न हो गये।

विद्यारम्भ- कुशाग्र बुद्धि बालक ने हुसेनपुर नामक ग्राम में शिवरतन पंडित के यहाँ जाकर संस्कृत की प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। सकरा गांव निवासी नंदा पंडित से बालबोध, शीघ्रबोध, और कौमुदी का तथा नगर के बेचन पंडित से सारस्वत और चन्द्रिका, का छोटा महादेवा ग्राम के वेदान्त दर्शन के ज्ञाता गोपाल पर्वत परमहंस से 'पंचदशी' का अध्ययन किया।

शास्त्रों एवं वेद-वेदांगों के विधिवत अध्ययन से प्राप्त ज्ञान की दिव्य ज्योति से ज्योतित मुख्यमंडल, सुपुष्ट देहयष्टि, मृदुल स्वभाव वाले किशोर हरभजन जी आश्रम वासियों और ग्राम वासियों को सहज ही अपने आकर्षण में बाँध लेते थे।

एक बार वे ममतामयी माता के दर्शन करने के लिए जौनपुर गए हुये थे। बहुत दिनों के पश्चात देवोपम सौंदर्य सेदीपित पुत्र के मुखमंडल को निरखते हुए आनंदातिरेक से भावविह्वला मां की आंखों से छलकते हुए अश्रुकणों को देखकर कह उठे "माताजी इतनी शोक विह्वलता न दिखाओ संसार नश्वर है"।

जीवन की क्षणभंगुरता का बोध और लौकिकता से विरक्ति - बाल्य काल से ही जिन महात्मा ने अपनी दिव्य दृष्टि से बालक हरिभजन की विलक्षणता को परख कर उन्हें ही अपना उत्तराधिकारी चुन लिया था, वे अब जीवन के अंतिम सत्य तथा धर्म के गूढ़ रहस्यों के साक्षात्कार के लिये समर्पित जीवन के उत्तरार्ध में अपनी समस्त आध्यात्मिक ऊर्जा को किशोरवय हरभजन जी में समाविष्ट कराने की समस्त पृष्ठभूमि पहले से ही निर्धारित कर चुके थे। पिता अयोध्या तिवारी जी सभी सांसारिक जीवो की भाँति अपने पुत्र के लिये विवाह का प्रस्ताव लेकर आश्रम पर आये। परंतु पुत्र ने अत्यंत विनम्र भाव से दृढ़ता पूर्वक कहा कि "मैं विवाह नहीं करूँगा" और पिता विवश होकर लौट गये।

पृष्ट 6 'महात्मा पौहारी बाबा' बंगला से अनुदित अनुवाद रंगनाथ राकेश जी

शैशव और कैशौर्य की वय:संधि की वेला में असाधारण क्षमता से संपन्न यह तरुण प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व मां गंगा की अथाह जलराशि में स्नान कर वन में साधन भजन कर आश्रम पर लौट आते। देव विग्रहों के पूजन अर्चन के उपरान्त ज्येष्ठ पिता के शिष्यों के साथ मिलकर श्री रघुनाथ जी, श्री सीता माता, श्री लक्ष्मण जी,श्री राधा कृष्ण जी, श्री बलदाऊ जी, श्री रंग जी, एवं श्री बालाजी एवं हनुमंत लाल जी आदि देव प्रतिमाओं के राग भोग की व्यवस्था किया करते| महात्मा लक्ष्मी नारायण जी अपने उपास्य श्री रघुनाथ जी के साथ अन्य देव विग्रहों की भी प्रतिमा उपासना किया करते थे |

ज्येष्ठ पिता की सेवा और एकान्तिक साधना की असीम ऊर्जा का उल्लासमय जीवन आनंद पूर्वक बीत रहा था, तभी 1856 में महात्मा लक्ष्मी नारायण जी के गोलोक गमन की हृदय विदारक घटना से मर्महत तथा सत्यान्वेष्ण की प्रबल तितीक्ष ने किशोर मन को तिर्थाटंन के लिये उद्वेलित किया |

अब वे आश्रम के सभी कार्यों का कुशलता पूर्वक निर्वहण करते हुए कभी दुग्धपान कभी कुछ विल्वपत्र का रस, लालमिर्च या कड़वी नीम के पत्तों का रस पीकर तथा कालान्तर में निराहार रहकर साधना भजन में लीन रहने लगे |

1857 में आश्रम के समस्त कार्यभार गुरु शिष्यों को सौंप कर वह ज्ञान तृष्णा की पिपासा को शान्त करने के लिये व्याकुल हो उठे |

महात्मा की आध्यात्मिक साधना का शक्तिपात किशोर हरभजन दास पर हो चुका था | ऊर्जा के हस्तांतरण से युक्त यह युवा सन्यासी चारों धाम की यात्रा पर पैदल ही निकाल पड़े|

चारों धाम की यात्रा में पूर्व में जगन्नाथ पुरी, दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में द्वारिकापुरी और उत्तर में ब्रदीनाथ धाम |

"पावन प्रसंग बाबा के" लेखक गगन चन्द्र राय के अनुसार "प्रथमत: वे बद्रीकाश्रम की ओर गये, मार्ग में उन्हें एक महात्मा के दर्शन हुए। पर्वत श्रृंगो के मध्य अंधकार से आच्छन्न कानन में एक महात्मा से मिले। महात्मा जी के अंतिम दिन थे | अतः पवहारी जी ने उनकी सेवा की | पंद्रह बीस दिन के अन्दर ही महात्मा ने शरीर त्याग दिया; शरीर छोड़ते

समय उन्होंने पवहारी जी को आशीर्वाद दिया और क्षुधा (भूख) तृषा (प्यास) निवारण करने वाली जली-बूटियाँ उन्हें दी"।

पश्चिम में द्वारिका जाते हुए पवहारी बाबा रैवतक पर्वत जो आज गिरनार पर्वत के नाम से जाना जाता है महायोगी अवघूत गुरु दत्तात्रेय की 12 हजार वर्षों की साधना से परम पवित्र स्थान माना जाता है, यहाँ आये | दत्तात्रेय भगवान की चरण पादुका के चिन्ह आज भी मंदिर में विद्घमान है |

यहाँ लगभग 9999 सीढ़ियाँ हैं, बौद्घ और हिन्दू धर्म अनुयायियों की साधना स्थली होने के कारण अनेक सूक्ष्म समाधियों की ऊर्जा यहाँ के कण-कण में समाहित है । आज भी किसी-किसी भाग्यवान को यहाँ सिद्धों, सन्तों और महायोगियों के दुर्लभ दर्शन हो जाते है ।

पवहारी बाबा को भी गिरनार पर्वत पर गुफावासी एक महायोगी के दर्शन हुए । वहाँ उनकी भेट एक पंजाबी बाबा से भी हुई । इसी प्रवास काल में उन्होंने सुना कि एक सिद्ध पुरुष पर्वत के गह्वर में रहते है, जो व्याघ्र चीते आदि हिंसक जीवो से घिरा हुआ है , वहाँ पहुँचना असम्भव है।

अपनी प्रबल तितीक्षा और सन्त समागम की अदम्य लालसा लिये हुए वे उस महायोगी के दर्शन के लिये चल दिये।

मार्ग में दो अन्य सन्यासियों से उनकी भेट हुई, जो वही जा रहे थे।

सायंकाल तक तीनों व्यक्ति गुफा द्वार तक पहुंच गये। सिंह गर्जना के भीषण दहाड़ को सुनते ही संन्यासियों ने कहा "महाराज वहाँ जाने पर केवल मृत्यु ही हाथ लगेगी, चलिये लौट चलें" । परंतु पवहारी जी ने दृढ़ स्वर में कहा-"बाबा मृत्यु तो एक बार ही होती है, यदि वह इसी सिंह के हाथ होगी तो कोई बुरा तो नहीं- पर मर जाऊंगा, अवश्य! हाँ आप लोग मेरी प्रतीक्षा कीजियेगा, यह कहकर वे गह्वर के अन्तराल में घुसे।

घोर तमिस्त्राच्छादित गुफा में गहन अंधकार छाया था| हाथ को हाथ नहीं सूख रहा था | एक क्षीण प्रकाश की रेखा में एक शिला खंड पर योगी पुरुष को निद्रित अवस्था में लेटे देखा| योगी के सिरहाने एक कंमडलु रखा था| पवहारी जी योगी के पैर दबाने लगे, निद्रा टूटी तब उन्होंने उनको देखा और प्रश्न किया कि "यहाँ आते समय कोई विध्न नहीं हुआ?" पवहारी जी ने कहा "हमारे संगी संन्यासियों को व्याघ्र गर्जना सुनायी पड़ी, वे लौट गये पर

मुझे तो कुछ भी नहीं सुनाई पड़ा|" महापुरुष ने पवहारी जी को एक फल दिया और निर्झरिणी का जल कंमडल में दिया -फल दाड़िम जैसा था, वह अत्यन्त ही मीठा स्वादिष्ट और बलबर्धक था | वैसा फल अत्यन्त्र नहीं मिल सकता है| महात्मा जी ने पवहारी जी को निर्झरिणी दिखाई, पवहारी जी ने वहाँ जाकर स्नान किया और फिर महात्मा के पास आये महात्मा ने उन्हें दो-चार बातें बतायी और कहा कि इसे किसी को मत बताना"| (1)...

पवहारी बाबा ने कहा "दास आपकी ही सेवा में रहना चाहता है, और कहीं नहीं जाना चाहता है"|

परंतु महात्मा ने कहा -"यहाँ रात्रि को मैं किसी को रहने नहीं देता, तुम शीघ्र ही यहा से चले जाओ, पवहारी जी ने उनके चरण छुए| सिद्ध पुरुष ने आशीर्वाद दिया- तुम्हारे सदृश्य योगी इस काल में कोई नहीं होगा"|

लगभग 2 वर्षो तक सभी तीर्थो का परिभ्रमण पवहारी बाबा ने पैदल ही किया था| साधु संतों और महात्माओं के समागम से उन्हें अनेक दुर्लभ वस्तुएं, योग साधना की गूढ़ रहस्यमय क्रियायें, तथा सदुपदेशो की प्राप्ति हुई थी| प्रवास काल में बंगला, तमिल, तेलुगू, आदि बहुविध भाषाओं का गहन ज्ञान प्राप्त कर वे आश्रम पर लौट आये| वाल्यकाल के मित्रों और पुरवासियों ने उनके ज्ञानदीप्ति से दीपित मुख्य मंडल की आभा देखकर ब्रह्म ज्योति के दर्शन कर स्वयं को कृतार्थ माना |

आश्रम पर पधारे युवा ब्रह्मचारी का स्वागत करने वालों में अधिकांशत: उनके वाल्यकाल के मित्रगण ही थे, जो सांसारिकता का आश्रय लेकर गृहस्थ धर्म में प्रविष्ट हो चुके थे| इन्होंने देखा कि इनके प्रियतर बालसखा, तरूण ब्रह्मज्ञानी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में विस्मयकारी रहस्यमयता का समावेश हो चुका था |

---

1. गाजीपुर के पवहारी बाबा उन्नीसवी सदी के महान संत पृष्ट 13

पावन प्रसंग बाबा के (बंगला) मूल लेखक

श्री गगन चन्द्र राय गाजीपुर के पवहारी बाबा

उन्नीसवी सदी के महान सन्त पृष्ट 13

इस परिवर्तन को देखकर इन सभी लोगों का हृदय श्रद्धा भिभूत हो उठा| आश्रम में नव जीवन संचारित होने लगा| पूर्व की अपेक्षा सभी गति विधियाँ में अभूत पूर्व परिवर्तन दृष्टिगत होने लगा |

पवहारी बाबा ने स्वयं को ईश्वर पूजा, अतिथि सेवा सत्कार तथा अन्य कर्तव्यो के लिये समर्पित कर दिया | सृष्टि के समस्त प्राणियों को बाबा, स्त्रियों को माताजी एवं स्वंय को दास कह कर सम्बोधित करने लगे |

"सर्वं विष्णु मयं जगत" के ध्येय वाक्य ने चराचर जगत को उनके लिये नमनीय बना दिया ||

काशी वास करने वाले अपने सन्यासी गुरु से प्रेरित होकर उन्होंने भूमि के भीतर एक गुफा बनवा ली, और उसमें प्रवेश कर अधिकाधिक समय बिताने लगे| योगियो ने शीत-ताप नियंत्रित नीरव स्थान को ही साधना के लिये उत्तम माना है| दिन भर वे आश्रम में अपनी दैनिक जीवनचर्या का निर्वाह करते, अपने आराध्य श्री रघुनाथ जी तथा अन्य विग्रहों की पूजा करते, पाक कला में निष्णात तो थे ही, अत: स्वादिष्ट व्यंजनों को तैयार कर, इनका भगवान को भोग लगाकर अपने मित्रों तथा दरिद्र नारायणों को प्रसाद रूप में वितरित कर रात्रि तक उनकी सेवा में लगे रहते |

सभी लोगों के सो जाने पर, चुपके से गंगाजी में कूद कर तैरते हुए इसके दूसरे किनारे पर पहुँचकर पूरी रात साधना-भजन में व्यतीत कर प्रात:काल से पूर्व ही आश्रम में लौट आते तथा मित्रों को जगाकर पुन: नित्यकर्म में प्रवृत्त हो जाते |

अपने आहार के विषय में उनके नियम अत्यंत कठोर थे| दिनभर में केवल एक मुठ्ठी नीम के कड़वे पत्ते या कुछ लालमिर्च का सेवन करते और योगाभ्यास के कारण अन्न त्याग कर दूध तथा बेलपत्र के रस का सेवन करने लगे | कुछ समय पश्चात रात में माँ भागीरथी के उस पार जंगल में जाना छोड़ दिया, और अधिकांश समय अपनी गुफा में बिताने लगे| कई-कई दिनों यहाँ तक की महीनों तक गुफा में योग साधना तथा समाधि में समय व्यतीत करने के बाद वे बाहर आते |

इतने लम्बे अन्तराल तक वे वहाँ कैसे बिना कुछ खाये-पिये रहते हैं, यह अन्य लोगों को आश्चर्यचकित करने वाली बात थी| अतः अब समस्त लोग उन्हें "पवआहारी (पवहारी)

अर्थात वायु-भक्षण करने वाले बाबा पवहारी बाबा कहने लगे| प्रयागराज में कुंभ से लौटने के बाद गंगा तट पर पर्ण कुटी बना कर साधना रत रहने लगे| कुछ दिनों पश्चात वाराणसी के विद्वान सन्यासी निरंजन स्वामी से अद्वैत का अध्ययन करने के बाद आजमगढ़ के समिना गाँव के रामाचारी जी से भागवत की व्याख्या सुनी तथा गाजीपुर के नन्दा पंडित से वाल्मीकि रामायण की व्याख्या सुनी |

दीक्षा प्राप्ति की तीव्र तितीक्षा के कारण वे पुन: गिरनार पर्वत की यात्रा के लिये निकल पड़े| मार्ग में अवस्थित अयोध्या नगरी में जिस गुरु से दीक्षा प्राप्त करने के लिये रुके, वहाँ उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका गोलोक गमन हो चुका है| वही के एक वैष्णव संत से दीक्षित होकर वह अपने आश्रम पर आ गये |

अपने ज्येष्ठ पिता का अनुगमन करते हुए वह भी श्री सम्प्रदाय की बदाकलई सम्प्रदाय की परम्परा से जुड़कर साधना के कई सोपानों को पार करते हुए अपनी गुफा में महीनों निवास करने लगे| गंगा की रेती पर योगाभ्यास, प्रतिदिन धार्मिक ग्रंथो का पाठ करते तथा रात्रि में पुरजनों की प्रार्थना को स्वीकार कर वे एकादशी के दिन बाहर आते थे| मंदिर का पट सदा बंद रहता| मंदिर के बाहरी कक्ष में ग्रामवासी दूध, मक्खन फलादि रख जाते | रात्रि के समय कभी- कभार वह सामग्री वहाँ से ले लेते थे | परंतु कोई भी व्यक्ति उनको देख नहीं पाता था |

अभिव्यक्ति मौन में घटित हो गयी | अब पवहारी बाबा की ख्याति सर्वत्र व्याप्त होने लगी| उनके बड़े भाई गंगा तिवारी जी उनकी सेवा के लिये कुर्था ग्राम में आ गये| अब वर्ष पर्यन्त वे अपने भूगर्भ में ही साधनारत रहने लगे| केवल रथ यात्रा के समय बाहर निकलते | समस्त ग्रामवासी उस दिन को एक बड़े उत्सव के रूप में मनाते |

कुंभ के अवसर पर प्रयाग प्रवास में बाबा त्रिवेणी तट पर पर्ण कुटी बना कर रहने लगे| "गाजीपुर की एक महानविभूति महात्मा पौहारी बाबा" के बंगला अनुवादक श्री रंगनाथ त्रिपाठी राकेश जी ने अपने शब्दों में पृष्ठ 15 पर लिखा है कि "तुषार मंडित शिला की भाँति उनकी देह शुभ्र सुमन से भी कोमल थी| शीत वातास आदि के स्पर्श से उनके चमड़े में विकार उत्पन्न हो गया, और उनकी शक्ति क्षीण होने लगी| ज्वर के प्रतिदिन आने के कारण उनकी शक्ति अत्यंत क्षीण हो गयी | (1)

1. महात्मा पौहारी बाबा लेखक (बंगला भाषा में) पृष्ठ 15

एक दीन ब्राह्मण उन्हें औषधि सेवन कराने लगा स्वस्थ होते ही अपनी मातृभूमि के दर्शनार्थ प्रेमापुर होते हुए मातृ दर्शन कर कुर्था आश्रम लौट आये ।

यहाँ पर साधु सन्यासियों और अभ्यागतो की सेवा अत्यंत मनोयोग से करने लगे| सेवा का जो व्रत बाल्यकालसे ही लिया था, उसका आजन्म पालन करते रहे| ज्येष्ठ पिता के समय से ही ग्राम वासियों व जमींदारों से जो भी भोज्य पदार्थ (आटा, चावल, दाल,) आदि पाते, उसे चैत्र में या अगहन में सभी को बाँट देते । यज्ञानुष्ठान होने पर दीन-हीन मनुष्यों को भोजन आदि करवाते थे ।

कुछ दिनों बाद माँ भागीरथी ने पूर्व दिशा की ओर हटना शुरू किया और आश्रम के समक्ष एक बड़ा भूभाग उपजाऊ भूखण्ड के रूप में उभर आया जिस पर गंगा बाबा ने खेती करना शुरू कर दिया| ऐसा लगा मानो माँ गंगा ने अनायास की साधु संतों की सेवा तथा जीवन निर्वाह की व्यवस्था स्वत: ही कर दी हो । कोई भी अभ्यागत कुटीर से भूखा नहीं लौटता ।

इस क्रम में एक अप्रत्याशित घटना घटी| कहते हैं पवहारी बाबा ने अयोध्या के ही किसी विश्रुत संत से दीक्षा ली थी । फलत: एक पाखण्डी सन्यासी स्वयं को अयोध्या वासी बता कर आश्रम में रहने लगा|

पवहारी बाबा तीर्थ यात्रा हेतु जाना चाहते थे| ग्रामवासी आर्थिक सहयोग राशि जुटा रहे थे |तभी उस सन्यासी ने ग्रामवासियों को भ्रमित कर अनेक उपद्रव खड़े कर दिये ।

उसने अपने लिये,भोजन वस्त्र तथा धन की मांग की । रिजु स्वभाव वाले ग्रामवासी तो पवहारी बाबा के भक्त थे । उन्होंने उस व्यक्ति को मात्र एक थान कपड़ा पकड़ा दिया लोभी संन्यासी धन न पाकर अत्यन्त क्रोधित हुआ ।

एक दिन एकान्त में पवहारी बाबा को पाकर, उसने पूछा "ये साधारण व्यक्ति तुम्हारे ऊपर इतनी श्रद्धा रखते हैं, सदाव्रत और यज्ञ भी तुम करते हो - निश्चय ही तुम्हारे पास अर्थाभाव नहीं है, अतुल संपत्ति होगी'|

पौहारी बाबा बोले "दास के पास क्या रखा है जो कुछ भी हो आप ले सकते हैं" सन्यासी लोभी था बोला - (1) .....

1.गाजीपुर के एक महान सन्त महात्मा पौहारी बाबा" बंगला अनुवाद श्री रंगनाथ त्रिपाठी

"ठाकुर जी के ये वस्त्र अलंकार कहाँ से आये हैं?

धन से हीन पौहारी बाबा बोले- "यदि तुम्हारी इच्छा है तो तुम ले सकते हो,"

सन्यासी इतने पर भी संतुष्ट नहीं हुआ, बोला "यदि तुम कुछ धनलाभ नहीं करते तो क्यों इस वन्य प्रदेश में प्राण दे रहे हो"?

पौहारी जी ने कहा - "दास को क्या आज्ञा है"? संन्यासी ने उत्तर दिया - "तुम यहाँ से चले जाओ"|

एक भोरहरी में बाबा ने द्वार बंद कर चाभी नीचे रख दी तथा वहाँ से चले गये| जंगल में लगी आग की तरह यह खबर पाते ही समस्त नरनारी शोक संतप्त होकर बिलखने, लगे तभी वह सन्यासी वहाँ से भाग निकला| निर्जन वन, गंगातट और हड़सा के घनघोर जंगलों में उनकी खोज की गयी किंतु उनका पता कहीं नहीं लगा | इधर पवहारी बाबा जगन्नाथ पुरी होते हुए मुर्शिदाबाद पहुंचे| वहाँ ब्रह्मपुर नामक ग्राम में अस्वस्थता के कारण रूकना पड़ा| एक भद्र बंगाली ने प्राण-पण से उनकी सेवा की तथा नदी तट पर एक पर्ण कुटी बनवा दी, जहाँ वे साधना भजन करने लगे| यहीं पर उस सेवाभावी बंगाली से उन्होंने बंगला भाषा सीखी तथा 'चैतन्य चरिता मृत' आदि अनेक ग्रंथ प्राप्त किये| लगभग एक वर्ष के बाद आजमगढ़ के ब्रह्मचारी जी ब्रह्मपुर गये और उन्हें आश्रम पर ले आये |

पवहारी बाबा ने अपने प्रवास काल में तमिल, तेलुगू, बंगला आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया तथा दक्षिण भारत के वैष्णव संतो की पुस्तके मूल भाषा में पढ़ी | आश्रम में आते समय अनेक ग्रंथ भी अपने साथ लाये |

कुर्था कुटीर में वापस लौटने पर अब उनका दर्शन प्राप्त करना सुलम हो चला था| एकादशी तथा अन्य पर्वो पर कुटी का द्वार खुलता| सुदूर क्षेत्रों से दर्शनार्थी और भक्तजन आते और आशीर्वाद प्राप्त कर धन्य हो जाते | वे भक्तों के प्रश्नों का उत्तर भी देते तथा उनकी शंकाओं का समाधान भी करते | कभी-कभी गुफा के द्वार के पीछे रहकर बातें करते थे| देश देशान्तर से सभी सम्प्रदायों के साधु गण तथा सन्यासी उनके पास आते| एकान्तिक साधना का यह क्रम चलता रहा| वर्ष 1884 में एक लम्बी अवधि तक गुफावास करते रहे| पहले जब वह अपनी गुफा से बाहर आने को होते तो भीतर से यज्ञ की अग्नि से उठने वाले धूम्रवलयों की सुगन्ध समस्त परिसर को सुगन्धित ही नहीं करती वरन लोग यह

अनुमान लगा लेते कि अब बाबा का दर्शन होगा| पूजा की समस्त व्यवस्था वह स्वयं करते थे तथा द्वार के पीछे से लोगों से बातचीत भी करते| किंतु इस बार इस तरह की कोई क्रिया दृष्टिगत न होने से लोगों ने अनुमानत: यह सोच लिया कि कहीं बाबा ने अपने शरीर को त्याग तो नहीं दिया ?

किंतु किसी भी व्यक्ति को द्वार तोड़कर भीतर जाने की हिम्मत नहीं हुई, लोग आते और निराश होकर चले जाते |

दिन बीतते जा रहे थे| अन्तत: चार या पाँच वर्षों के पश्चात एक दिन घंटी बजने की मधुर ध्वनि सुनायी पड़ी| भगवान की पूजा अर्चना के बाद पवहारी बाबा बाहर आये | लोगों का हृदय आनन्दा तिरेक से भाव विह्वल हो गया | पूर्व की भांति ही आश्रम में नव-जीवन का संचार हो उठा | इस उपलक्ष्य में एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक साधु सन्यासियों, ब्राह्मणों और दरिद्र नारायणों को भोजन करवाया गया| योगिराज पवहारी बाबा एक बार सूर्य ग्रहण के अवसर पर गंगा स्नान के लिए गये थे | चतुर्दिक नीरवता का पहरा था | बाबा स्नान के बाद साधना में निमग्न थे, तभी एक व्यक्ति स्नान हेतु जल में उतरा| यद्यपि उसने इन्हें देखा नहीं परंतु योग साधना में व्याघात पहुँचने से बाबा का शरीर कुछ काल के लिये रुग्ण हो गया| अब योगिराज पवहारी बाबा ने प्राचीर परिसर में ही एक कुँआ खुदवाने का निर्णय लिया, जिससे वह वहीं पर स्नान आदि कर सके |

कहते हैं कि कूप का निर्माण उन्होंने स्वत: ही किया था | आज भी इस कूप का जल स्वच्छ और पीने योग्य है| कुँए की जगत पर बेलबूँटो की चित्रकारी अत्यन्त मनोहारी है |

कुछ समय पश्चात आषाढ़ की पूर्णिमा को एक विशाल यज्ञ आयोजित हुआ| यह यज्ञ एक माह तक चला| राजारंक सभी शारिरिक मानसिक और आर्थिक रूप से अपना सहयोग प्रदान कर रहे थे | दीन-हीन और निर्धन व्यक्ति जंगलो को काट कर लकड़ियाँ आदि इकठ्ठा कर रहे थे | सेठ साहूकार संभ्रान्त जन प्रचुर मात्रा में भोज्य सामग्री और धन-दान करने के साथ-साथ अपनी श्रद्धा और सेवाये अर्पित कर इस महायज्ञ को सम्पादित करने में प्राण-पण से जुटे हुए थे |

सघन बनराजि को काट कर समतल भूमि में एक ओर नगर के गणमान्य जनों का स्थान सुनिश्चित किया गया था तो दूसरी ओर सिद्धो संतों और महात्माओं के लिए अलग पर्ण

कुटीर बनाये गये थे। सर्वसाधारण के लिये तीसरी और पर्ण कुटीरो का स्थान निर्धारित किया गया था।

देश के सभी तीर्थो से साधु सन्यासी यति गृहस्थ, परमहंस परिब्राजक आदि, घोड़े, बैलगाड़ी, रेल, तथा पैदल ही इस अनुष्ठान में आये और सेवा भाव में आकन्ठ डूबे ग्रामवासी यथायोग्य इनका सत्कार करते रहे।

शास्त्रा लोचन तथा शास्त्रार्थ परंपरा में तर्क-वितर्क के खंडन-मंडन की परंपरा चल रही थी। विभिन्न संप्रदायों के महात्मा शास्त्रार्थ कर रहे थे, कुछ सुधीगण पवहारी बाबा के पास गये और उनसे विनम्र अनुरोध किया कि आप हमारा मार्ग दर्शन प्रदान करें, किन्तु योगिराज ने साधुवाद देकर विनीत भाव से यही उत्तर दिया कि "इस दास को क्या आता है"? महायज्ञ की समापन बेला का अत्यन्त हृदय ग्राही चित्रण इन शब्दों में वर्णित है"

एक मास तक यह महायज्ञ चलता रहा। महात्माओं की पूजा दक्षिणा होती रही।..... कुशासन पर बैठे हुए जटा-जूट धारी महात्मा लोग उस समय अत्यंत शोभित हो रहे थे। एक ताम्र पात्र में जल लेकर उन्होंने सबका पैर धोया, उसको मस्तक पर लगाया फिर पौहारी जी ने सभी की धूप-दीप नैवेद्य से पूजा की सभी को एक-एक उत्तरीय (पीताम्बर) और दक्षिणा दिया"। (1)

विशाल भंडारे के साथ यज्ञ समाप्त हुआ। अब वे पुनः अपनी गुफा में साधनालीन हो गये, कुछ समय उपरांत कुटीर के पीछे वाले भाग में गृह निर्माण के साथ एक प्राचीर की नीव खुदवा दी, आश्रम के भीतर की मिट्टी कठोर थी। अतः बाबा ने गाँव के ठाकुर से कहलवाया कि "दास के कुटी द्वार के सम्मुख मिट्टी रखवा दी जाय तो दास कुछ कार्य कर लेता", गाँव के ठाकुर के 25-30 आदमियों ने गंगा तीर से नर्म मिट्टी लाकर सांयकाल तक छः सात हाथ ऊँची मिट्टी का ढेर लगा दिया। प्रातः काल सभी ने देखा की सारी मिट्टी वहाँ से हट गयी है और परिसर की दीवार तैयार कर ली गयी है, यह आश्चर्यजनक कार्य बाबा के द्वारा ही सम्भव हो सका। प्राचीर के अन्दर वृन्दा जूही चम्पा, चमेली, बेला, मोगरा, गेंदा, पाटल, आदि प्रजातियों के पुष्प तथा अनेक प्रकार की वृक्ष बल्लारियाँ इस उघान की शोभा बढ़ाती रही है।

महात्मा पौहारी बाबा बंगला भाषा से अनूदित श्री रंगनाथ त्रिपाठी राकेश पृष्ट 23

पवहारी बाबा के हाथों से लगायी गयी मौल श्री की छतनार गाँछ जिसे हम लोगों ने आज से पचासों वर्ष पूर्व देखा था, बहुत दिनों तक अपनी हरीतिमा से सभी को मुग्ध करती आ रही है | अतीव आश्चर्य तो तब हुआ जब कुछ वर्षों पूर्व वह उकठ गयी, तो ठीक उसी स्थान पर दूसरी मौल श्री की गाँछ पूर्व की भाँति आज भी लहलहा रही है, और इस बात की प्रतीति करा रही है कि योगिराज पवहारी बाबा का आशीर्वाद हम सभी को हरक्षण प्राप्त हो रहा है|

कुटीर के चतुर्दिक आम, आंवला, पीपल, इमली, जामुन, आम, बरगद, कनेर, पारिजात गुड़हल, सागौन, आदि के विशाल वृक्ष आश्रम को लघु अरण्य का मोहक स्वरूप प्रदान कर रहे हैं|

अलौकिक सामर्थ और अपराजेय पौरुष सम्पन्न योगिराज के विषय में स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु भाइयों को लिखे पत्रों में "धैर्य पवित्रता तथा निरंतर प्रयत्न करते रहने पर" अत्यधिक बल दिया है | और इसको ही किसी कार्य की सफलता की कुंजी बताया है| पवहारी बाबा में यह गुण प्रचुर मात्रा में था |

चाहे रघुनाथ जी की पूजा कर रहे हो अथवा पूजा के बर्तन साफ कर रहे हो, वह अपने कार्य में पूर्ण रूप से लीन हो जाया करते थे| वे कहा करते थे कि "साधना से उसी प्रकार प्रेम करना चाहिए जैसे कि वह साध्य हो"| (1).....

जीवन के समस्त क्षेत्रों में नैपुण्य प्रप्ति का कारण भी सम्भवत यही था| शिल्पकला, काष्ठकला, प्रस्तरकाला, मूर्तिकला | सभी कार्यों को करने में वे प्रवीण थे | श्री सीता राम लक्ष्मण श्री रंग जी श्री बालाजी श्री राधे कृष्ण और बलदाऊ जी के मुकुट आदि अलंकारों के लिये मृतिका से नमूने तैयार कर रामेश्वर दयाल जी को देते थे तथा बन्दी स्वर्णकारो से वैसे ही स्वर्णाभूषण तैयार करने के लिये कहते थे | स्वर्णकार भी आश्चर्य चकित हो जाते थे | बार-बार प्रयत्न करने पर ही नमूनों के अनुरूप आभूषण तैयार हो पाते थे |

."पवहारी बाबा" (तीन विद्वान संतों की दृष्टि में)

1. सम्पादक द्वय उमा शंकर राय डा० सुरेश राय पृष्ट 43

उनके ह्रदय में पुरातन के प्रति अनुराग और श्रद्धा का भाव अत्यंत प्रवल था | प्रस्तर के अनेक दीपा-धार(दीवट) मंदिर में पड़े थे | उनमे से एक टूटे-फूटे दीपा धार को कुशलता पूर्वक जोड़ कर सुन्दर स्वरूप प्रदान कर दिया था | एक अति प्रचीन घड़ी उनके पास थी| लोगों ने कहा "इसे फेंक दीजिये दूसरी आजाएगी"| प्रत्युत्तर में बाबा ने कहा "इसी के द्वारा दास का कार्य निर्वाह हो जायेगा"।

लौहकला में इतनी प्रवीणता थी कि आश्रम के छोटे-मोटे कार्य वे स्वत: सम्पन्न कर लेते थे, हथौड़ी, वसुली, रूरवानी, आरी, आदि सामग्री उनके पास प्रचुर मात्रा में थी।

एक बार स्व निर्मिप कूप की प्रस्तर शिलाओ पर चित्रकारी करने की बात कही गयी, किंतु जैसा आप चाहते थे वैसा नही बन पाने पर सुन्दर बेल बूँटो को स्वत: ही उत्कीर्ण कर डाला था| लेखन कला का अद्भुत प्रमाण विविध धार्मिक ग्रंथो के प्रतिलिपि के रूप में आज भी आश्रम में विद्यमान है | अनेक ग्रंथ क्षतिग्रस्त हो गये या लोगों द्वारा ले जाने के बाद लौटा ये ही नहीं गये| पांडुलिपियों के लघु संग्रहालय में विविध वर्णी चटकीले सुनहरे काले कत्थई रंगों की चकितकारी चित्रकला की उत्कृष्टता मन को बरबस मोह लेती है |

भागवत और गीता की हस्त लिखित प्रतिलिपियोंका स्पर्श मन को बरबस ही विस्मय विमुग्ध कर देता है कि कभी अलौकिक और अद्भुत शक्ति संपन्न योगिराज ने अपने पावन कर कमलो द्वारा इनका प्रणयन किया होगा | विलक्षण और अनुपमेय सामर्थ्य का ही परिणाम था|

कि बाबा ने रात भर में अकेले ही मिट्टी के ढेर को उठाकर परिसर की दीवार खड़ी कर दी | गाँव के लौहकारो द्वारा बनाये गये, सुदृढ़ काष्ठ गृह को तीस-चालीस बलिष्ठ लोगों द्वारा परिसर की दीवार पर चढ़ाया गया और बाबा ने अकेले ही उसे सफलता पूर्वक उतार लिया |

अद्भुत शारीरिक क्षमता का एक और प्रमाण तब मिलता है जब वे एक बार कुंभ के मेले में भाग लेने के लिये तीर्थराज प्रयाग पहुँचे | वहाँ पर व्याधि ग्रस्त हो गये| स्वस्थ होने के पश्चात 112 मील की दूरी को एक ही रात में पैदल चलकर अपने आश्रम पर लौट आये |

प्राणिमात्र में एक ही सत्ता की अनुभूति करने वाले योगिराज के लिये समस्त सृष्टि "सर्वं विष्णु मयं" थी | तभी तो भूगर्भ में अपनी साधना में निरत बाबा को एक बार एक भयंकर

विषधर में डंस लिया। तीक्ष्ण विष के प्रभाव से मृतप्राय होकर गिर पड़े। कई घंटो के उपरांत चेतना लौटी तो उनके शुभेच्छुओं ने उनसे इस दुर्घटना के बारे में जानना चाहा।

बाबा ने उन्हें बताया कि "वह नाग देवदूत था। एक चूहा बाबा आये और उनकी गोद में प्राणरक्षा के लिये गिर पड़े"। उन्होंने उसको अपने कपड़ों में छिपा कर शरण दे दी, "नागबाबा जो उनका पीछा कर रहे थे क्रुद्ध हो गये और उनके कंधे पर काट लिया"।

कैबल्यावस्था को प्राप्त ब्रह्मज्ञानी पवहारी बाबा कर्म में अकर्म की भावना से जीव मात्र की सेवा के लिये स्वयं को समर्पित कर दिये थे।

"आत्मवत सर्वभूतेषु" की प्रखर अनुभूति का एक बिम्ब तब उभरता है जब आश्रम में चोरी करने के लिये रात्रि में कुछ चोर प्रविष्ट हुए। प्रतिमाओं और उनके आभूषण आदि को लेकर वह लोग जाने वाले ही थे, कि पवहारी बाबा ने कक्ष में प्रवेश किया। चोर सारे सामानों की गठरी वहीं छोड़कर भागने लगे। बाबा ने उनका पीछा किया और उन्हें रोक कर अत्यंत विनम्रता से कहा "बाबा लोगो ने दया करके दर्शन दिया है, तो निराश क्यों लौट जा रहे हैं। जो कुछ चाहे ले ले। दास का कौन सा अपराध है, जो आप इसे नहीं ग्रहण कर रहे हैं"? लज्जा और ग्लानि के मारे सभी चोर तत्काल वहाँ से भाग निकले।

भूगर्भ स्थित साधना स्थली में चार-चार पांच-पांच वर्षों तक अखण्ड समाधि में लीन रहने वाले योगीराज ऐसे दिव्य और अलौकिक संत थे जिन्हें वहाँ पर जीवनो पयोगी किसी भौतिक सामग्री की आवश्यकता नहीं थी। बद्रिका आश्रम तथा गिरनार पर्वत की दुर्लभ उपत्यिकाओ में रहने वाले महायोगियों और सिद्धो से अलभ्य क्षुधा-तृषा निवारक जड़ी बूटियाँ उन्हें प्राप्त थी, कुण्डलिनी शक्ति, खेचरी मुद्रा तथा महासमाधि की क्रियोओं का ज्ञान भी योगिराज को इनकी ही कृपा से प्राप्त हुआ था।

एक बार लंबे समय तक समाधिस्थ रहने के बाद योगिराज गुफा से बाहर आये तो बृहद यज्ञानुष्ठान आयोजित हुआ। साधु संन्यासियों का आगमन होने लगा था। पवहारी बाबा द्वार के पीछे से सबका मार्ग दर्शन कर रहे थे, अनुष्ठान प्रारम्भ होने में मात्र एक सप्ताह रह गया था। बड़े भाई गंगा तिवारी जी ने उनको सूचित किया कि वे लोग एक कुआं खुदवाने का निश्चय कर रहे हैं, क्यों कि माँ गंगा वहाँ से बहुत दूर थी। ग्रीष्म रितु में तप्त बालुका तट से जल लाना दुष्कर था, तथा भोजनादि को बनाने के लिये भी जल की भहती आवश्यकता थी।

बाबा ने पूछा "क्या माँ गंगा को आमंत्रित किया गया है ?"

उनका उत्तर था 'नहीं' ।

पवहारी बाबा ने उन्हें आदेशित किया कि "अविलम्ब फल, मिष्ठान्न, पुष्प माला, पूजन की सामग्री और एक सुंदर साड़ी के साथ मेरा निमंत्रण पत्र माँ गंगा को दे आये ।

माँ गंगा को लिखित निमंत्रण पत्र साहित समस्त सामग्री को लेकर वे लोग नाव से गंगाजी की बीच धारा में गये और श्रद्धा पूर्वक समस्त सामग्री को समर्पित कर दिया और विनती की कि "माँ आप अपनी कृपा बनाये रखियेगा"।

भौतिकता में आकान्ठ निमग्न लोगों के लिये यह विषय संदेहास्पद था किंतु जिन्हें पवहारी बाबा पर श्रद्धा थी उनके लिये सब कुछ सम्भावित था। मात्र तीन दिन शेष रह गये थे। चिंतिंत गंगा बाबा को योगिराज धैर्य बधाते रहे ।

आश्रम के निकट एक सूखी नहर है जो वर्षा ऋतु में वर्षा के जल को लगभग दस मील दूर से लेकर आती है और आधा मील की दूरी पर उत्तर दिशा में गंगाजी में छोड़ देती है। यह नहर आज भी आश्रम के समीप है, तथा पुरानी ईटों से बनी साढ़ियाँ इस बात की प्रमाण है की बाढ़ के समय जब नहर में पानी भर जाता है तो लोग इन साढ़ियाँ का प्रयोग करते रहे हैं ।

किंतु ग्रीष्म ऋतु में नहर में पानी आने की कोई सम्भावना नहीं रहती ।

योगीराज पवहारी बाबा की माँ गंगा के प्रति अविचल भक्ति हो या उनकी अपरिमित योग शक्ति माँ भागीरथी धीरे-धीरे पश्चिम की ओर मुड़कर नहर में प्रवेश कर गयी, भंडारे वाले दिन हर-हराती हुई गंगा धारा कुटीर तक आ पहुँची ।

आश्चर्य चकित लोग इस समस्त घटना का श्रेय योगिराज को देकर निहाल हो गये ।

भंडारा सकुशल संपन्न हो गया और अगले दिन नहर पुन: सूख गयी। प्रत्यक्ष देवी माँ गंगा की कृपा किस पर नहीं बरसी ? जिसने उन्हें हृदय से पुकारा, सबको उन्होंने तारा! चाहे काशी में पंडित राज जगन्नाथ की आर्तपुकार की गंगा लहरी को सुनकर अपने अंक में उन्हें समेट लिया, या संत रविदास ने उन्हें अपने कठौते में प्रकट कर लिया। गाजीपुर के मौनी

धाम में गंगा तीरी संत मौनी बाबा ने अपने योगवल तथा माँ गंगा की कृपा से गंगा पार की ग्वालिनको माँ की लहरों पर चलकर किनारे पर पहुँचा दिया था।

जीवन पर्यन्त माँ गंगा के अंक में साधना रत रहते वाले, अपने अनन्य योग बल से संपन्न इस महायोगी पुत्र की करुण पुकार सुनकर यदि माँ उनके द्वार पर आ गई हो तो क्या आश्चर्य? स्वामी विवेकानंद जी ने अपने लेख "पूज्य स्तवन" में उन क्षणों का उल्लेख किया है, जब वे पवहारी बाबा से पूछते हैं कि "संसार की सहायता के लिये वे अपनी गुफा से बाहर क्यों नहीं आते ?

उन्होंने अपने स्वाभाविक विनय शीलता तथा विनोद प्रियता के अनुरूप निम्न लिखित उत्तर दिया।

एक दुष्ट मनुष्य कुछ दुष्कर्म करते हुए पकड़ा गया और उसकी नाक काट ली गयी। अपना नकटा चेहरा दुनिया को दिखलाने में लज्जा का अनुभव करने के कारण वह अपने से विरक्त होकर एक जंगल में भाग गया। वहाँ उसने एक शेर की खाल बिछायी और जब वह देखता कि कोई आ रहा है, तो वह तुरंत गंभीर ढोग करके उस पर बैठ जाता। ऐसा करने से वह लोगों को दूर तो नहीं कर सका उल्टे झुंड के झुंड लोग इस अद्भुत महात्मा को देखने तथा उसकी पूजा करने के लिये आने लगे। उसने देखा कि यह अरण्यवास तो उसके लिये जीवन निर्वाह का सरल साधन वन गया है। इस प्रकार कई वर्ष बीत गये अंत में उस स्थान के लोग इस मौन व्रत धारी ध्यान-परायण साधु के मुख से कुछ उपदेश सुनने के लिए लालयित हुए और एक नवयुवक उस 'साधु' के संप्रदाय में सम्मिलित होने के निमित दीक्षा लेने के लिये विशेष रूप से उत्सुक हो उठा। अंत में ऐसी स्थिति पैदा हुई कि अधिक विलम्ब करने से साधु की प्रतिष्ठा भंग होने के आशंका हो गयी। तब तो एक दिन वह अपना मौन छोड़कर उस उत्साही युवक से बोला "बेटा कल अपने साथ एक तेज धार वाला उस्तरा लेते आना"। इस आशा से कि उसके जीवन की महान आकांक्षा शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगी उस युवक को बड़ा आनंद हुआ और दूसरे दिन सवेरा होते ही वह एक तेज छुरा लेकर साधु के पास जा पहुंचा। फिर वह नकटा साधु उस नवयुवक को जंगल में दूर एक निर्जन कोने में ले गया और एक ही आघात में उसकी नाक काटली और गंभीर आवाज में बोला "बेटा इस संप्रदाय में मेरी दीक्षा इसी प्रकार हुई थी और जो आज मैंने तुम्हें दी है। अवसर पाते ही तू भी उत्साह के साथ दूसरों को इसी दीक्षा का दान देना। लज्जा के कारण युवक अपनी इस अद्भुत दीक्षा का रहस्य किसी के पास प्रकट नहीं कर सका और वह

अपने गुरु के आदेश का पालन पूर्ण रूप से करने लगा| इस प्रकार होते-होते देश में नकटे साधुओं का एक पूरा संप्रदाय बन गया |"तुम्हारी क्या ऐसी इच्छा है कि मैं भी इसी प्रकार के एक और संप्रदाय की स्थापना करूं? (1).....

इसी विषय पर पुनः प्रश्न पूछने पर उन्होंने गम्भीर भाव से उत्तर दिया "तुम्हारी क्या ऐसी धारणा है कि केवल स्थूल शरीर द्वारा ही दूसरो की सहायता हो सकती है? क्या शरीर के क्रियाशील हुए बिना केवल एक मन दूसरों के मन की सहायता नहीं कर सकता? एक दूसरे अवसर पर जब उनसे पूछा गया कि "ऐसे श्रेष्ठ योगी होते हुए भी वे होमाग्नि क्रिया तथा श्री रघुनाथ जी की पूजा आदि कर्म जो साधना की केवल आरम्भिक अवस्था के लिये समझे जाते हैं, क्यों करते हैं? तो उन्होंने उत्तर दिया "तुम वही क्यों समझ लेते हो कि प्रत्येक व्यक्ति अपने निज के कल्याण के लिये ही कर्म किया करता है ? क्या एक मनुष्य दूसरों के लिये कर्म नहीं कर सकता ? प्रसिद्धि लाभ की इच्छा से विरत "शब्द द्वारा नहीं बल्की जीवन द्वारा शिक्षा देनी चाहिये" और जो व्यक्ति सत्य धारण करने के योग्य है, उन्हीं के जीवन में वह प्रतिफलित होता है" उनका जीवन इसी भारतीय आदर्श का एक उदाहरण था |..... उनके निकट धर्म सामाजिक कर्तव्यों की प्रेरक शक्ति नहीं है, वरन इसी जीवन में सत्य का प्रखर अनुसंधान एवं सत्य की उपलब्धि है | वे काल के किसी एक क्षण में अन्यान्य क्षणों की अपेक्षा अधिक क्षमता स्वीकार नहीं करते | अतएव अनंत काल के प्रत्येक क्षण के एक समान होने के कारण वे इस बात का पर जोर देते हैं कि मृत्यु की बाट न जोह कर इसी लोक में तथा प्रस्तुत क्षण में ही आध्यात्मिक सत्यों का साक्षात्कार कर लेना चाहिए | (2)...

---

1. गाजीपुर के पवहारी बाबा 19वीं सदी के एक महान संत सम्पादक डा० विवेकी राय सन् 1982 पृष्ट 7

2. पूज्यस्तवन' विवेकानंद पृष्ट 9-10 गाजीपुर के पवहारी बाबा 19वीं सदी के एक महान सन्त संपादक डा०विवेकी राय

अपने लेख में विश्वस्त समकालीन व्यक्तियों से सुनी हुई कथाओं का उल्लेख विवेकानंद जी के साहित्य में उपलब्ध है| वह कथा चाहे सांप नेवले और भूषक की हो या चोरों द्वारा मंदिर में चोरी करने की| योगिराज पवहारी बाबा से सहज वार्तालाप हो या तत्कालीन दृश्यों का प्रामाणिक चित्रण डा० विवेकी राय के निबंध में उल्लिखित है कि पवहारी बाबा के संबंध में जो तीन पुस्तके मिलती है उसमें सबसे कम चमत्कारों का वर्णन स्वामी विवेकानंद ने किया है फिर भी कुछ चमत्कार उसमें भी आ गये हैं |

इसके बाद ऋषिकेश के स्वामी निर्वेदानंद की पुस्तक "पौहारी बाबा ए सेन्ट ऑफ द नाइन्टीन्थ सेन्चुयारी" में भी पर्याप्त चमत्कारों का उल्लेख है| सबसे अधिक अलौकिक चमत्कारों का जिक्र राय बहादुर गगन चंद्र राय की बंगला पुस्तक "महात्मा पवहारी बाबा" में किया गया है| इस पुस्तक का हिंदी रूपान्तरण पवहारी बाबा के सिद्ध साहित्य कार वंशज श्री रंगनाथ त्रिपाठी 'राकेश' जी ने किया है | (1)

तो हम उनके उन चमत्कारों को यहाँ छोड़ दे तब भी एक सहज चमत्कार पूर्ण आकर्षण शेष रहा जाता है, और वह हैं उनका अवशिष्ट आश्रम जहाँ गंगा उत्तर वाहिनी होकर वहती हैं, ऐसे गाजीपुर शहर से नीति दूर कुर्था गांव से सटी वह तपस्थली अपने सम्मोहक प्राकृतिक परिवेश में दर्शकों को विरमा लेती है| बहुत काँट-छाँट और सँवार-सुधार के बाद भी अरण्य का अवशिष्ट किसी अलिखित अरण्यक की भाँति कण-कण में मुखर हैं |

डॉक्टर विवेकी राय ने अपने निबंध में श्री गगन चंद्र राय की जिस पुस्तक का विवरण दिया है उसमें उन्होंने लिखा है कि "उन्होंने स्वयं आत्मज्ञान द्वारा ब्रह्म का साक्षात्कार किया | माया भ्रम आसक्ति को छोड़कर वह परम धर्म वे ब्रह्म में लीन हो गये थे | स्वामी विवेकानंद जी जब आए थे तो उन्होंने कहा था देवताओं की उपसना का प्रेरक वही है माया और भ्रम उसी सत्ता के अंश हैं, अपने को अकिंचन समझता चाहिए, ब्रह्मांड को ईश्वर प्रेरितसमझना चाहिये | (2)

1. "डॉ० विवेक राय एक सिद्ध सन्त की स्मृति" -शताब्दी गाजीपुर के पवहारी बाबा 19वीं सदी के एक महान संत सम्पादक डा०विवेकी राय पृष्ट 20

2. महात्मा पौहारी बाबा पृष्ट 35-36 गगन चन्द्र राय मूल लेखक ,बंगला अनु० रंगनाथ त्रिपाठी राकेश

आत्मा और परमात्मा का सानिध्य ही मनुष्य को मोक्ष द्वार तक पहुँचाता है| ब्रह्म एंव जीव तृषा एवं जल के समान है, बिना अनुसंधान किये जल नहीं मिल सकता है, इसी प्रकार ब्रह्म भी हैं | "गृहस्थो को दीन-दुखियों, सन्यासियों और अतिथियों की सेवा करनी चाहिए, उसी से उनकी मुक्ति हो जाये गी| एक जिज्ञासु जन ने पवहारी जी से पूछा- नेत्र मूँद लेने पर क्या होगा ? इस तरह तो हम प्रकाश भी देखते हैं, पर नयन निमीलित कर लेने पर तो हमें अंधकार ही दिखाई पड़ता है"|

पवहारी बाबा ने हँस कर कहा था- चर्म चक्षु को मूँद लेने पर भौतिक जगत में तुम्हें अंधकार ही दिखाई पड़ेगा, लेकिन उसी अंधकार में प्रकाश की किरण दिखाई पड़ सकती है ,बाबा |" (3) सभी धर्म सम्प्रदाओं के प्रति बाबा की समान आस्था थी| सभी सम्प्रदायों के महात्माओं का वे आदर करते थे |

नव विधान समाज के आचार्य केशव चंद्र सेन बंगाली श्री प्रताप चंद्र मजूमदार, श्रद्धास्पद महामहोपाध्याय श्री आदित्य राम भट्टाचार्य एम० ए०, पं० शिवनाथ शास्त्री एवं जगत प्रसिद्ध स्वामी विवेकानंद जी पौहारी बाबा के दर्शन के लिये आये थे| कई दिनों तक ये लोग पौहारी बाबा जी से धर्मालाप एवं अन्य विषयक बातें करते रहे, योगिराज पवहारी जी ने सभी का यथोचित आदर सत्कार किया और सभी की जिज्ञासा शान्त की |

वाल्यकाल से ही अत्यन्त शान्त और संयत स्वभाव वाले महासंत को जीवन में केवल एक ही बार क्रोध आया| उस समय वे एकान्त वास नहीं कर रहे थे| रथ-यात्रा का आयोजन था रथ पर ठाकुर जी की मूर्तियाँ विराजमान थी| भक्त गण रथ को तीव्र गति से खींच रहे थे| रथ के प्रकम्पित होने से मूर्तियाँ पृथ्वी पर गिर पड़ीं | पवहारी बाबा के पुकारने पर भी कोलाहल के कारण जब किसी ने उनकी बात नहीं सुनी तो अन्त में क्रोधावेश में आकर उन्होंने कहा "सभी बाबा लोग रथ की रज्जू का परित्याग करें और रथ को काट डालें"|

पवहारी बाबा के आदेशानुसार दर्शक गण रथ को नष्ट करने पर उतारू हो गये | अन्ततः भीषण जन-रव में ठाकुर जी के सिंहासन पर कुठार प्रहार हो ही गया आज भी सिंहासन पर कुठार प्रहारक चिन्ह दृष्टिगत होता हैं | तब तक गंगा बाबा आये और कहने लगे "महाराज! लोग आपको दोषी नहीं कहेंगे, हमी को कहेंगे, आपसे मै क्षमा माँगता हूँ, इसे नष्ट न करवाइये | पर पवहारी जी ने उनकी नहीं सुनी| गंगा बाबा आश्रम छोड़कर चले गये |

---

3. "महात्मा पौहारी बाबा" गगन चंद्र राय अनूदित बंगला श्री रंगनाथ त्रिपाठी राकेश पृष्ट

पवहारी बाबा अग्रज के चले जाने से भावविह्वल हो उठे| गंगा बाबा पैदल ही अयोध्या चले गए थे | कुछ दिनों बाद मातृभूमि पर समय व्यतीत करके वे सात महीने बाद पुन: आश्रम पर लौट आये |

"सर्व विल्विंद ब्रह्म" की अवधारणा ने महासन्त के कुटीर के कण-कण को एक ऐसी भाव ऊर्जा से भर दिया था कि साँप, नेवला, भूषक, कुत्ता, बिल्ली, और व्याघ्र जैसे हिंसक जीवों ने भी स्वाभाविक स्वभाव के वैरभाव को त्याग दिया था और कुटीर में बाबा के समीप निवास करने लगे थे |

एक बार एक कुत्ता रोटी लेकर भागा तो बाबा दौड़े पड़े "ठहरो! प्रभु रोटी में घी तो चुपड़ लेने दो"| "सर्व भूतहितेरता" का यही स्नेहिल भाव बाबा के हृदय में प्राणिमात्रक लिये निरंतर प्रवहमान रहता था| समत्व ममत्व और एकत्व का ऐसा भाव और कहाँ मिलेगा ?

समाज चाहे जिन्हें कितना ही नगण्य समझता रहा हो, पवहारी बाबा की दृष्टि में सभी समान थे| जितना अनुराग वे सन्तो सिद्धो और विद्वत जनों से रखते थे, उतना ही प्रगाढ़ प्रेम अपने प्रिय भक्त शंकर घोवी के प्रति भी उनके हृदय में था |

योगिराज जव अपने प्रिय भक्तों के लिए सर्व सुलभ थे तो एक दिन उदास और चिंतित दूर बैठे हुए शंकर घोवी को देखकर पूछ बैठे "शंकर बाबा क्या बात है? आप इतने चिंतित क्यों है ?

तो अत्यंत दीन भाव से भक्त ने निवेदन किया "कि महाराज दो-दो बार ईट का भठ्ठा लगाया हूँ, बहुत अधिक धन की हानि हो गई है, कैसे ऊबर पाऊँगा? और बाबा का करुणा से भरा हुआ मधुर स्वर गूँज उठा "फिर से प्रयत्न करो बाबा!" और इस बार शंकर घोवी निहाल हो गया |

संम्भवत: विवेकानंद जी ने 30 जनवरी 1890 को गाजीपुर से अपने परम मित्र प्रमदादास मित्र को जो पत्र लिखा है, वह विवेकानंद साहित्य ग्रंथावली के प्रथम भाग में संकलित है उसमें तत्कालीन आश्रम का प्रामाणिक परिचय मिलता है, "तब पूरा आश्रम ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरा था| बाहर से देखने में वह साहवो के बंगलों सा प्रतीत होता था| उसके भीतर रमणीय उघान था| ऊपर-ऊपर से ही दो चिमनियाँ दिखाई पड़ती थी| आश्रम के भीतर प्रवेश कठिन था| पवहारी बाबा भीतर गुफा अथवा तहखाना में रहते थे | (1)...

सम्भवत: असामान्य रूप से ऊँची और सुदृढ़ दीवारे आज भी तीन तरफ से विद्यमान है, पूर्व की ओर नव निर्मित समाधि स्थल पर उनकी खड़ाऊ तथा संग्रहालय की पुस्तके सुरक्षित रखी हुई है| अतीत के झरोखों से झाँकती शंकर की श्रद्धा की यह कहानी परिसर की मूक दीवारे आज भी दृढ़ता से दुहरा रही है| मृत्यु के बाद आश्रम की दक्षिण दिशा में अवस्थित शंकर बाबा की तथा उत्तर पूर्व दिशा में अवस्थित 'बघउत बाबा' की समाधि यह विश्वास दिला रही है कि अनन्य भक्त चिर निद्रा में लीन होने पर भी बाबा का सानिध्यलाभ प्राप्त कर रहे हैं |

दरिद्र नारायण की सेवा ही प्रभु की सेवा है, सर्वभूत हितेरता की साधना ने ही उन्हें स्वयं को 'दास' तथा सभी को बाबा अर्थात दिव्य भाव से देखने की समदृष्टि प्रदान की थी | उन्होंने अपनी ज्ञानाग्नि से कर्म बन्धनों को भस्भसात कर दिया था| वे आकाश सदृश्य शुचिता को प्राप्त कर निरुपाधिक स्वात्म स्वभाव में स्थित हो चुके थे |

सम्पूर्ण जगत केवल चिन्मात्र ब्रह्म ही है, इसी भाव की प्रचण्ड अनुभूति के कारण जिस एकाग्रता से वे "रघुनाथ जी की पूजा करते थे, उसी तन्मयता से ताम्बे का एक साधारण वर्तन भी माँगते थे| स्वामी विवेकानंद जी को कर्म रहस्य की यह शिक्षा दी थी कि"जस साधन तस सिद्धि" ध्येय प्राप्ति के साधनों से वैसा ही प्रेम करना चाहिए मानो वे स्वंय ध्येय हो |

"ईशा वास्य मिंद सर्वं" इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह जगत है, सब ईश्वर से परि व्याप्त है, चराचर जगत ब्रह्ममय है |

अत: दास्य भाव स्वीकारते हुए किसी को भी अपना शिष्य नहीं बनाया और स्वामी विवेकानंद से इस विषय पर वार्तालाप में छद्म वेशी नकटा साधु की रोचक कथा सुना दी| एक बार किसी भक्त ने श्रद्धा भिभूत होकर दीक्षित होने का आग्रह किया तो उन्होंने श्रेष्ठ आचार्य से दीक्षा दिलवा दी |

अलौकिक सिद्धि, अपूर्व धैर्य और अपराजेय पुरुषार्थ के स्वामी योगिराज पवहारी बाबा का जीवन अद्भुत और विलक्षण था | स्वामी विवेकानंद जी का अपने गुरु परम हंस रामकृष्ण देव जी के परलोक गमन के पश्चात गाजीपुर में 21 या 22 जनवरी 1890 को आना हुआ था| तत्कालीन भारत में संतों के बीच मुकुटमणि की तरह सुशोभित परमहंस रामकृष्ण देव के परम प्रिय शिष्य का प्रयागराज से गाजीपुर आना एक असाधारण

घटना थी| अपने प्रवास काल में हृदय की जिन अतल गहराइयो से विवेकानंद जी ने पवहारी बाबा को परखा उसे उन्होंने अपने मित्रों को लिखे पत्रों में अभिव्यक्त किया है |

विश्व पटल पर लोक प्रख्याति से दूर समस्त संसारिक आकर्षणों से मुक्त "सर्व विष्णुमय जगत" की आराधना में प्राणिमात्र की कल्याण की अमीप्सा रखने वाले योगीराज की ख्याति का एकमात्र श्रेय विश्ववंद्य विवेकानंद जी को ही जाता है। अन्यथा आत्म स्वरूप में स्थित पवहारी बाबा के रहस्यमय चरित्र से यह विश्व कैसे सुपरिचित हो पाता ? यहाँ आकर वे अपने वाल्य सखा सतीशचंद्र मुखोपाध्याय मुखर्जी के आवास पर ठहरे। प्रत्येक रविवार राय बहादुर गगन चंद्र राय के यहाँ एक छोटी सी धर्मसभा होती थी, जिसमें नगर के अनेक प्रबुद्ध जन स्वामी जी के साथ सत्संग तथा उनका मधुर भजन सुनने की इच्छा से आते थे|

सभा में समाज सुधार, हिंदू धर्म के महान सार्वभौमिक आदर्शो के आधार पर शिक्षा का प्रसार तथा सनातन हिंदू जाति के उद्देश्य पर गहन चिन्तन के साथ वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान पर गहन विचार-विमर्श होते थे |

स्वामी जी ने अपने ढ़ाई महीने के प्रवास काल में कुल 26 पत्र लिखे हैं, जिनमें 12 पत्र वाराणसी के प्रमदादास मित्र को 7 पत्र कोलकाता के बलराम बोस को तीन पत्र हिमालय की यात्रा के लिये गये हुए अखण्डानन्द जी को एक-एक पत्र अभेदानंद, सदानंद, तुलसीराम बोस, तथा अतुलचंद्र घोष को लिखे |

21 जनवरी को पहला पत्र उन्होंने प्रमदादास मित्र को लिखा| पत्र मे उन्होंने गाजीपुर की उत्तम जलवायु, कष्टसाध्य गंगा स्नान तथा यहाँ आने का प्रथम उद्देश्य पवहारी बाबा का दर्शन ही है, का उल्लेख किया है | (1)

---

1. विवेकानंद साहित्य खण्ड 9 पृष्ट 351-52

(श्री प्रमदादास मित्र को लिखा गया पत्र)

पूज्यपाद,

24जनवरी 1890 वाले पत्र में लिखा है की मैं तीन दिन हुए, शकुशल गाजीपुर पहुँच गया| यहाँ मैं अपने एक बाल-सखा बाबू सतीशचंद्र मुखर्जी के यहाँ ठहरा हूँ। स्थान बड़ा मनोरम है| गंगा जी पास ही बहती है, परंतु उसमें स्नान करना कष्टसाध्य है, क्योंकि कोई सीधा रास्ता वहाँ तक नहीं है और रेत में चलना बहुत कठिन है| मेरे मित्र के पिता बाबू ईशानचंद्र मुखर्जी- वे महानुभाव जिनका उल्लेख मैंने आपसे किया था- यहाँ है| आज वे वाराणसी जा रहे हैं| वाराणसी होते हुए कोलकाता जायेंगे| फिर मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं वाराणसी आता; परंतु अभी तक बाबाजी के दर्शन नहीं हुए| यही मेरे यहाँ आने का अभिप्राय है| इसीलिए दो-चार दिन का विलम्ब होगा| यहाँ और सब तो ठीक है, सभी लोग सज्जन है, परंतु उनमें बहुत अधिक पाश्चात्य भाव आ गया है खेद की बात है कि मैं पाश्चात्य भावों के विरूद्ध खड्गहस्त रहता हूँ| केवल मेरे मित्र का ही झुकाव उस ओर कम है| कैसी रद्दी सम्यता विदेशी यहाँ लाये हैं| उन्होंने जड़वाद की कैसी मृग-मरीचिका उत्पन्न की है, विश्वनाथ इन दुर्बल हृदयों की रक्षा करें| बाबा जी से मिलने के बाद मैं आपको सविस्तार हाल लिखूँगा|

आपका

विवेकानंद

पुनश्च- भगवान शुक की इस जन्मभूमि में वैराग्य को आज लोग पागलपन और पाप समझते हैं | अहो भाग्य:-

(श्री बलराम वसु को लिखित)

श्री रामकृष्ण जयति

गाजीपुर 30 जनवरी 1890

पूज्यपाद,

मैं अब गाजीपुर में सतीश बाबू के यहाँ ठहरा हूँ| जिन स्थानों को देखने का मुझे मौका मिला, उनमें यह स्थान स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है | वैद्यनाथ का जल अत्यंत खराब है, हजम नहीं होता| इलाहाबाद अत्यंत घनी बस्ती है-

वाराणसी में जब तक रहा, हर समय ज्वर बना रहा, वहाँ इतना मलेरिया है।

गाजीपुर में, खास कर जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ की जलवायु स्वास्थ्य के लिये अत्यंत लाभदायक है, पवहारी बाबा का स्थान देख आया हूँ। चारों तरफ ऊँची दीवाले है, देखने में साहबों का बंगला जैसा है, अंदर बगीचा है, बड़े-बड़े कमरे तथा चिमनी इत्यादि हैं। किसी को वे भीतर जाने नहीं देते, जब कभी इच्छा होती है, तब स्वयं ही दरवाजे पर आकर भीतर से ही बात-चीत करते हैं। एक दिन वहाँ जाकर बैठा-बैठा सर्दी खाकर लौटा था। रविवार को वाराणसी जाना हैं। इस बीच में यदि उनसे भेट हुई, तो हुई, नहीं तो ना सही। प्रमदा बाबू के बगीचे के बारे में वाराणसी से निश्चय कर लिखूँगा। काली भट्टाचार्य यदि आना ही चाहे, तो रविवार को मेरे वहाँ जाने के बाद आये-न आना ही अच्छा है । वाराणसी में दो-चार दिन रहकर शीघ्र ही हृषीकेश जाना है प्रमदा बाबू के साथ भी जा सकता हूँ आप लोग तथा तुलसीराम आदि मेरे यथायोग्य नामस्कारादि ग्रहण करें। तथा फकीर राम कृष्णमयी, आदि से मेरा आशीर्वाद कहें।

आपका नरेंद्र

पुनश्च- मेरे मतानुसार आप यदि कुछ दिन गाजीपुर में रहे, तो अच्छा है। आपके रहने के लिये बंगले की व्यवस्था सतीश कर सकेगा और गगन चंद्र राय नामक और एक व्यक्ति है, जो आबकारी दफ्तर में बड़े बाबू हैं, अत्यंत ही सज्जन, परोपकारी तथा मिलन सार है- वे लोग सब कुछ व्यवस्था कर देंगे। यहाँ मकान का किराया 19-20 रुपये है; चावल महंगा है, दूध रुपये में 16-20 सेर है, अन्यान्य वस्तुएँ सस्ती है। इन लोगों की देख-रेख में आपको किसी प्रकार के कष्ट की आशंका नहीं है, परंतु कुछ अधिक खर्च अवश्य होगा। 40-50 रुपये से अधिक खर्च पड़ेगा। वाराणसी अत्यंत मलेरिया ग्रस्त शहर है।

प्रमदा बाबू के बगीचे में मैं कभी नहीं रहा हूँ वे कभी मुझे अपने से पृथक नहीं होने देते। बगीचा वास्तव में अत्यंत सुंदर, सुसज्जित विशाल तथा खुले स्थान में है। अबकी बार वहाँ कुछ दिन ठहरकर तथा मलीभाँति देख-भालकर श्रीमान को सव समाचार लिखूँगा। इति।

आपका नरेंद्र

(श्री प्रमदा दास मित्र को लिखित)

ईश्वरो जयति

गाजीपुर 31जनवरी 1890

पूज्यपाद-

बाबा जी से भेंट होना अत्यंत कठिन है वह मकान से बाहर नहीं निकलते इच्छा अनुसार दरवाजे पर आकर भीतर से ही बातें करते हैं अत्यंत ऊंची दीवारों से घिरा हुआ उद्घानयुक्त तथा दो चिन्हयों से सुशोभित उनके निवास स्थान को देख आया हूं भीतर जाने का कोई उपाय नहीं है लोगों का कहना है कि भीतर गुफा यानी तहखाना जैसी एक कोठरी है जिसमें वे रहते हैं क्योंकि कभी किसी ने देखा नही एक दिन मैं वहाँ जाकर बैठा-बैठा कड़ी सर्दी खाकर लौटा था फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा, रविवार को वाराणसी धाम के लिये प्रस्थान करूँगा यहाँ के लोग मुझे नहीं छोड़ रहे हैं, नहीं तो बाबा जी के दर्शन की अभिलाषा तो मेरी समाप्त हो चुकी है आज ही मैं चला आता अस्तु रविवार को प्रस्थान कर रहा हूं आपका हृषीकेश जाने का क्या हुआ?

आपका नरेंद्र

(श्री प्रमदा दास मित्र को लिखित)

ॐ विश्वेश्वरी जयति

गाजीपुर 4 फरवरी

1890

पूज्यपाद,

आपका पत्र मिला| बड़े भाग्य से बाबा जी का दर्शन हुआ| वास्तव में वे महापुरुष हैं| बड़े आश्चर्य की बात है कि इस नास्तिकता के युग में भक्ति एवं योग की अद्भुत क्षमता के वे अलौकिक प्रतीक है| मैं उनकी शरण में गया और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया, जो हर एक के भाग्य में नहीं| बाबा जी की इच्छा है कि मैं कुछ दिन यहाँ ठहरू, वे मेरा कल्याण करेंगे| अतएव इन महापुरुष की आज्ञानुसार मैं कुछ दिन और यहाँ ठहरूँगा। निःसन्देह इससे आप भी आनन्दित होंगे| घटना बड़ी विचित्र है| पत्र में न लिखूँगा| मिलने पर बताऊँगा| ऐसे महापुरुषों का साक्षात्कार किये बिना शास्त्रों पर पूर्ण विश्वास नहीं होता |

आपका नरेंद्र

पुनश्य, इस पत्र की बातें गोपनीय हैं|

(श्री प्रमदा दास मित्र को लिखित)

विश्वेश्वरी जयति

गाजीपुर 9 फरवरी 1890

पूज्यपाद,

आपका पत्र अभी मिला। बड़ा हर्ष हुआ। बाबा जी आचारी वैष्णव प्रतीत होते हैं; उन्हें योग, भक्ति एवं विनय की प्रतिमा कहना चाहिए। उनकी कुटी के चारों ओर दीवारें हैं उनमें दरवाजे बहुत थोड़े हैं। पर कोटे के भीतर एक बड़ी गुफा है जहाँ वे समाधिस्थ पड़े रहते हैं। गुफा से बाहर आने पर ही वे दूसरों से बात-चीत करते हैं। किसी को यह मालूम नहीं कि वे क्या खाते-पीते हैं। इसलिए लोग उन्हें पवहारी (केवल पवन का आहार करने वाला) बाबा कहते हैं एक बार जब वह पाँच साल तक गुफा के बाहर नहीं निकले, तो लोगों ने समझा कि उन्होंने शरीर त्याग दिया है। किंतु वे फिर उठ आये। पर इस बार वे लोगों के सामने निकलते नहीं और बातचीत भी द्वार के भीतर से ही करते हैं। इतनी मीठी वाणी मैंने कहीं नहीं सुनी, वे प्रश्नों का सीधा उत्तर नहीं देते, बल्कि कहते हैं, "दास क्या जाने"। परंतु बात करते-करते मानो उनके मुख से अग्नि के समान तेजस्वी वाणी निकलती है। मेरे बहुत आग्रह करने पर उन्होंने कहा, "कुछ दिन यहाँ ठहरकर मुझे कृतार्थ कीजिये। परंतु वे इस तरह कभी नहीं कहते इसलिये मैंने यह समझा है कि वे मुझे आश्वासन देना चाहते हैं और जब कभी मैं हठ करता हूँ, तो वे मुझे ठहरने के लिये कहते हैं। आशा में अटका पड़ा हूँ। वे निःसन्देह बड़े विद्वान है, पर कुछ प्रकट नहीं होता। वे शास्त्रोंक्त कर्मकाण्ड करते हैं। पूर्णिमा से सक्रान्ति तक होम होता रहता है। अतएव यह निश्चय है कि वे इस अवधि में गुफा में प्रवेश न करेंगे। मैं उनसे अनुमति किस प्रकार माँगू? वे तो कभी सीधा उत्तर ही नहीं देते। 'यह दास' मेरा 'भाग्य' इत्यादि कहते रहते हैं। यदि आपकी भी इच्छा हो, तो पत्र पाते ही तुरंत चले आइये: अन्यथा उनके शरीर त्याग के बाद पछताना पड़ेगा। दर्शन करके दो दिन में लौट जाइये कहने का मतलब यह है कि बाहर से बातचीत हो जाएगी मेरे मित्र सतीश बाबू सहर्ष आपका स्वागत करेंगे। इस पत्र के पाते ही सीधे चले आइये। इस बीच में बाबा जी को आपके विषय में सूचना दे दूँगा ।

आपका

नरेंद्रनाथ

पुनश्य- इनका सत्सङग न होने पर भी, यह निश्चित है कि ऐसे महापुरुष के लिये कोई भी कष्ट उठाना निरर्थक न होगा।

नरेन्द्र

(श्री बलराम बसु को लिखित)

ॐ नमो भगवते राम कृष्णाय

मुखर्जी

द्वारा सतीश

गोरा बाजार, गाजीपुर

14 फरवरी1890

पूज्यपाद-

मुझे आपका वेदना पूर्ण पत्र मिला| मैं अभी यहाँ से शीघ्र न जा सकूँगा| बाबाजी (पवहारी बाबा) का अनुरोध ठुकरा देना असम्भव है|आपको इस बात का पछतावा है कि आपने साधुओं की सेवा कर कोई बड़ा लाभ नहीं उठाया| यह सच है, और नहीं भी| आदर्श आनंद की दृष्टि से तो यह सच है, परंतु यदि आप साधनारंभ की दशा की ओर सिंहावलोकन करें, तो आपको मालूम होगा कि पहले आप पशु थे, अब मानव है और आगे चलकर आप एक देवता अथवा स्वयं ईश्वर हो जायेंगे| आपका इस प्रकार का पश्चाताप और असंतोष आपकी भावी उन्नति का सूचक है, क्योंकि उसके बिना उन्नति होना असंभव है| जो चुटकी बजाते ही ईश्वर का दर्शन पा लेता है, उसके लिये इसके आगे उन्नति का रास्ता बंद समझिये| इस प्रकार का असंतोष की 'क्या लाभ हुआ, क्या लाभ हुआ'-तो एक वरदान है| विश्वास कीजिए, कोई भय की बात नहीं है। आप स्वयं बड़े समझदार हैं। और आप भली भांति जानते हैं कि धैर्य ही सफलता की कुंजी है।

आपका नरेन्द्र

(श्री प्रमदा दास मित्र को लिखित)

ईश्वरो जयति

गाजीपुर 25 फरवरी 1890

प्रिय महोदय,

कमर के दर्द से बहुत कष्ट हो रहा है, अन्यथा मैं पहले ही आपके यहाँ आने की चेष्टा करता| मन को अब यहाँ शांति नहीं मिलती | बाबा जी के स्थान से आये हुए तीन दिन हुए, परंतु वे कृपापूर्वक प्राय: नित्य ही मेरे संबंध में पूछताछ करते हैं| जैसे ही

कमर का दर्द कुछ अच्छा होगा, मैं बाबा जी से विदा माँगूगा | आप मेरे अनन्त प्रमाण स्वीकार करें |

आपका नरेंद्र

(श्री प्रमदा दास मित्र को लिखित)

ईश्वरो जयति

गाजीपुर 3 मार्च

1890

पूज्यपाद ,

आपका कृपापत्र अभी मिला | शायद आप नहीं जानते कि मैं कठोर वेदांती विचारों का होता हुआ भी बहुत ही कोमलहृदयी हूँ, और इसीसे मेरा बड़ा अनिष्ट होता है| थोड़ा भी आघात मुझे विचलित कर देता है, क्योंकि मैं कितना है स्वार्थपरायण रहने का प्रयत्न करूँ, दूसरे की हानि-लाभ देखते ही मेरा सारा प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है| इस बारे मैंने आत्म-लाभार्थ दृढ संकल्प कर लिया था| परंतु एक गुरुभाई की बीमारी का समाचार पाकर मुझे इलाहाबाद दौड़ना पड़ा| अब हृषीकेश से सूचना मिली है, इस कारण मेरा मन वहीं लगा है| मैंने शरत् को तार दे दिया है, परंतु अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला| कैसी जगह है कि जहाँ से तार आने में भी इतना विलंब लगता है ! कमर का दर्द जरा भी अच्छा नहीं हो रहा है| बहुत कष्ट है| कुछ दिनों से मैं पवहारी जी के यहाँ नहीं जा रहा हूँ | पर उनकी बड़ी कृपा है कि वह प्रतिदिन किसी को भेजकर मेरी खोज-खबर लेते रहते हैं | किंतु अब तो मैं देखता हूँ 'उल्टा समझलि राम'- पहले मैं उनके द्वार का भिखारी था, पर अब वे ही मुझसे कुछ सीखना चाहते हैं,

ऐसा लगता है कि यह संत अभी पूर्ण सिद्ध नहीं हुए हैं, क्योंकि वे बहुत से कर्म, व्रत, आचार इत्यादि में लिप्त हैं और गुप्त भाव तो बहुत ही अधिक है | समुद्र पूर्ण होने पर कभी वेलाबद्ध नहीं रह सकता, यह निश्चित है | इसलिए अब इन साधु को व्यर्थ कष्ट देने से कोई लाभ नहीं | शीघ्र ही विदा लेकर प्रस्थान करुँगा | क्या करूँ, मेरा ईश्वरदत्त कोमल स्वभाव ही मेरे नाश का कारण बन गया है | बाबा जी तो मुझे जाने देते नहीं और गगन बाबू (इन्हें शायद आप जानते हो, एक धार्मिक, साधु और सहृदय व्यक्ति हैं) मुझे छोड़ते नहीं | यदि तार के उत्तर से मेरा वहाँ जाना आवश्यक हुआ, तो जाऊँगा, नहीं तो कुछ दिनों में आपके पास वाराणसी पहुँचूँगा | मैं आपको सहज छोड़ने वाला नहीं- आपको हृषीकेश जरुर ले जाऊँगा | आपका कोई बहाना न चलेगा | किन स्वच्छताविषयक कठिनाइयों का

तीर्थस्थानों और संन्यासियों को तो आप जानते ही है, वे कैसे हैं | रुपए खर्च कीजिये और मंदिर के पुजारी आपके लिये जगह करने के निमित्त देवमूर्ति को भी हटा देंगे, ठहरने के लिये स्थान की तो बात ही क्या है ? वहाँ आपको कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा | गर्मी तो वहाँ भी पड़ने लगी होगी, पर वाराणसी जैसी नहीं, इतना अच्छा है| वहाँ ठंड होने के कारण अच्छी नींद तो आयेगी |

आप इतना डरते क्यों हैं? मैं इस बात का भार लेता हूँ कि आप सकुशल घर लौटेंगे और आपको कहीं कुछ कष्ट न होगा | ब्रिटिश राज्य में फकीर या गृहस्थ को कोई कष्ट नहीं, यह मेरा अनुभव है |

क्या मैं यों ही कहता हूँ कि हमारा-आपका पूर्व जन्म का कुछ संबंध है देखिए न, आपके एक पत्र से मेरे सारे संकल्प हवा हो गये और मैं सब छोड़कर वाराणसी की ओर उन्मुख हो गया |

गंगाधर को मैंने फिर लिखा है और इस बार उससे कहा है की मठ में लौट आये | यदि वह आयेगा, तो आपसे मिलेगा | वाराणसी की जलवायु अब कैसी है? यहाँ ठहरने से मैं मलेरिया से मुक्त हो गया हूँ | केवल कमर की पीड़ा ने मुझे बेचैन कर रखा है | दर्द दिन-रात बना रहता है और मुझे बहुत बेचैनी रहती है | मैं कह नहीं सकता कि मैं पहाड़ पर कैसे चढ़ूँगा | मैंने बाबा जी में अद्भुत तितीक्षा देखी है और इसलिये मैं उनके कुछ प्रसाद का भिक्षुक हूँ, पर वे कुछ देना नहीं चाहते, केवल मुझसे ही ले रहे हैं | इसलिये मैं भी

चला |

आपका नरेन्द्र

पुनश्च - अब किसी बड़े आदमी के पास न जाऊँगा |

'रे मन, तू अपने में स्थिर रह, जा न किसी के द्वार

केवल शांत चित्त हो, कर तू विनय विवेक-विचार |

परम अर्थ का जिसमें रहता सदा भरा भंडार,

वह पारस-मणि तो तुझमें है, कर उससे व्यवहार

-कमलाकान्त

अतएव मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि श्री रामकृष्ण की बराबरी का दूसरा कोई नहीं। वैसी अपूर्व सिद्धि वैसी अपूर्व अकारण दया, जन्म-मरण से जकड़े हुए जीव के लिये वैसी प्रगाढ़ सहानुभूति इस संसार में और कहाँ? या तो वे अपने कथनानुसार अवतार है अथवा वेदांत दर्शन में जिसे नित्यसिद्ध महापुरुष **लोक-हिताय मुक्तो ऽपि शरीरग्रहणकारी"** कहा गया है वे है, निश्चत-निश्चत इति में मति:। ऐसे महापुरुष की उपासना के विषय के पांतजल सूत्र **ईश्वरप्रणिधानाद्वा या महापुरुषप्रणिधानाद्वा** के किंचित् परिवर्तित रूप में उल्लेख किया जा सकता है।

अपने जीवन-काल में उन्होंने मेरी कोई भी प्रार्थना नहीं ठुकरायी, मेरे लाखों अपराध क्षमा किये। मेरे माता-पिता में भी मेरे लिए इतना प्रेम न था इसमें कोई कविजनसुलभ अतिशयोक्ति नहीं है। यह एक नितांत सत्य है, जिसे उनका प्रत्येक शिष्य जानता हैं। बड़े-बड़े संकट और प्रलोभन के अवसरों पर मैंने करुणा के साथ रोकर प्रार्थना की, "भगवन रक्षा करें", और किसी ने भी उत्तर नहीं दिया, किंतु इस अद्भुत महापुरुष ने -अथवा अवतार या जो कुछ समझिये, उसने-अपने अन्तर्यामित्व गुण से मेरी सारी वेदनाओं को जानकर, स्वयं आग्रहपूर्वक बुलाकर उन सबका निराकरण किया। यदि आत्मा अविनाशी है और यदि वे इस समय है, तो मैं बारंबार प्रार्थना करता हूँ, "हे अपार दयानिधे, ममैक शरणदाता रामकृष्ण भगवान्, कृपा करके हमारे इस नरश्रेष्ठ बंधुवर की सारी मनोवांछा पूर्ण कीजिये"। आप पर वे मंगल-वर्षा करें, वे-जिनको ही मैंने इस जगत् में अहेतुकदयासिंधु पाया है।
शान्ति: शान्ति: शान्ति:

आपका नरेन्द्र

पुनश्च - कृपया शीघ्र उत्तर दीजिये

नरेन्द्र

(स्वामी अखण्डानन्दको लिखित)

ॐ नमो भगवते रामकृष्णाय

गाजीपुर मार्च

1890

प्राणाधिकेषु ,

कल तुम्हारा पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं इस समय यहाँ के अद्भुत योगी और भक्त पवहारी जी के पास ठहरा हूँ। वे अपने कमरे से कभी बाहर नहीं आते। दरवाजे

के भीतर से ही बातचीत करते है | कमरे के अन्दर एक गुफा में वे रहते हैं | कहा जाता है कि वे महीनो समाधिस्थ रहते हैं | उनमें अद्भुत तितीक्षा है | अपना बंग देश भक्ति और ज्ञानप्रधान है; वहाँ योगी की कभी चर्चा तक नहीं होती | जो कुछ है, वह केवल विचित्र श्वास -साधना इत्यादि हठयोग- वह तो केवल एक प्रकार का व्यायाम है, इसलिये मैं इस अद्भुत राजयोगी के पास ठहरा हूँ | इन्होंने कुछ आशा भी दिलायी है| यहाँ एक सज्जन है, जिनके छोटे बगीचे में एक सुंदर बंगला है | मैं वहाँ ठहरना चाहता हूँ | वह बगीचा बाबा जी के निवास-स्थान से निकट है | वहाँ बाबा जी का एक भाई रहकर साधुओं की सेवा करता है | मैं उसी स्थान पर भिक्षा लिया करूँगा | यह लीला अंत तक देखने के लिये मैंने पहाड़ों पर जाने का अपना इरादा अभी स्थागित कर दिया है | दो महीने से मुझे कमर में बात-पीड़ा हो रही है, जिसके कारण पहाड़ों पर चढ़ना असम्भव होगा | अतएव यहाँ रुककर देखूँ की बाबा जी से क्या मिलता है |

मेरा मूलमंत्र है कि जहाँ जो कुछ अच्छा मिले, सीखना चाहिए | इसके कारण बराहनगर में मेरे बहुत से गुरुभाई सोचते हैं कि मेरी गुरु-भक्ति कम हो जायेगी | इन्हें मैं पागलों तथा कट्टरपंथियों के विचार समझता हूँ, क्योंकि जितने गुरु हैं, वे सब एक उसी जगदगुरु के अंश तथा आभासस्वरूप है | यदि तुम गाजीपुर आओं, तो गोराबाजार में सतीश बाबू या गगन बाबू से मेरा ठिकाना पूछ लो | अथवा पवहारी बाबा को तो यहाँ का बच्चा-बच्चा जानता है | उनके आश्रम पर जाकर पूछ लेना कि परमहंस जी कहाँ रहते हैं | लोग तुम्हें मेरा स्थान बता देंगे | मुगलसराय के पास दिलदारनगर नामक एक स्टेशन है, जहाँ से तुमको ब्रांच रेलवे द्वारा तारीघाट तक जाना होगा | तारीघाट से गंगा पार करके तुम गाजीपुर पहुँचोगे | अभी तो मैं कुछ दिन गाजीपुर ठहरूँगा; देखता हूँ, बाबा जी क्या करते हैं | यदि तुम आ गये, तो हम दोनों साथ-साथ बंगले में कुछ दिन रहेंगे और फिर पहाड़ों पर या किसी ऐसी जगह, जहाँ इरादा होगा, चलेंगे | बराहनगर में किसी को इस बात की सूचना मत देना कि मैं गाजीपुर में ठहरा हूँ | साशीर्वाद,

सतत

मंगलाकांक्ष

नरेन्द्र

(स्वामी अखंडानंद को लिखित)

ॐ नमो भगवते राम कृष्णाय

गाजीपुर मार्च

1890

प्राणाधिकेषु

अभी-अभी तुम्हारा एक और पत्र मिला, लिखावट स्पष्ट न होने के कारण समझने में अत्यंत कठिनाई हुई। पहले के पत्र में ही मैं सब कुछ लिख चुका हूँ। पत्र को देखते ही तुम चले आना। नेपाल होकर तिब्बत जाने के मार्ग के बारे में तुमने जो लिखा है, उसे मैं जानता हूँ। जिस प्रकार साधरणतया किसी को तिब्बत में नहीं जाने दिया जाता हैं, उसी प्रकार नेपाल में भी उसकी राजधानी काठमाण्डू तथा दो-एक तीर्थो को छोड़कर अन्यत्र कहीं किसी को नहीं जाने दिया जाता है। किंतु इस समय मेरे एक मित्र नेपाल के राजा के तथा राजकीय विद्यालय के शिक्षक हैं, उनसे पता चला है कि जब नेपाल से चीन को प्रतिवर्ष राजकर जाता है, तब वह ल्हासा होकर जाता है। कोई साधु विशेष प्रयत्न से उसी तरह ल्हासा, चीन, तथा मंचूरिया (उत्तर चीन) स्थित तारा देवी के पीठस्थान तक गया था। मेरे उक्त मित्र के प्रयास करने पर हम भी मर्यादा तथा सम्मान के साथ तिब्बत, लहासा तथा चीन इत्यादि सब कुछ देख सकेंगे। अतः शीघ्र ही तुम गाजीपुर चले आओ। यहाँ पर कुछ दिन बाबा जी के समीप ठहरकर, उक्त मित्र से पत्र-व्यवहार कर अवश्य ही मैं नेपाल होकर तिब्बत जाऊँगा। किमधिकमिति। दिलदारनगर स्टेशन पर उतरकर गाजीपुर आना पड़ता हैं। दिलदारनगर मुगलसराय स्टेशन से तीन-चार स्टेशन बाद है। यदि यहाँ के निमित्त तुम्हारे लिये किराया जुटाना संभव होता, तो मैं अवश्य भेजता; अत: तुम स्वयं ही इसकी व्यवस्था कर चले आना। गगन बाबू जिनके यहाँ मैं हूँ -इतने सज्जन, उदार तथा हृदयवान व्यक्ति है कि मैं क्या लिखूँ। काली को ज्वर हो गया है, सुनकर तत्काल ही उन्होंने हृषीकेश में उसके लिये किराया भेज दिया तथा मेरे लिये भी उन्होंने काफी खर्च उठाया हैं। ऐसी दिशा में कश्मीर के किराये के लिए पुन: उन पर बोझ डालना सन्यासी का धर्म नहीं, यह सोचकर मैं विरत हो गया हूँ। किराये की व्यवस्था कर तुम पत्र देखते ही चले आना। अमरनाथ दर्शन का आग्रह अब स्थागित रखना ही ठीक है। इति।

नरेन्द्र

बेलूड़ मठ में सन् 1902 में स्वामी जी अस्वस्थ अवस्था में शिष्य से वार्तालाप कर रहे थे। वार्तालाप के दौरान शिष्य ने उनसे जिज्ञासा की और उसी संदर्भ में स्वामी जी ने पवहारी बाबा के बारे में जो कहा वह निम्नलिखित है -

शिष्य- महाराज, श्री रामकृष्ण के शरीर छूट जाने के बाद क्या आपको उनका दर्शन प्राप्त हुआ था ?

स्वामी जी- श्री राम कृष्ण के देह-त्याग के बाद मैंने कुछ दिन गाजीपुर में पवहारी बाबा का संग किया था। उस समय पवहारी बाबा के आश्रम के निकट एक बगीचे में मैं रहता था।

लोग उसे भूत का बगीचा कहा कहते थे, परंतु मुझे भय नहीं लगता था | जानता तो है कि मैं ब्रह्मदैत्य भूत-फूत से नहीं डरता| उस बगीचे में नींबू के अनेक पेड़ थे और वे फलते भी खूब थे | मुझे उस समय पेट की सख्त बीमारी थी, और इस पर वहाँ रोटी के अतिरिक्त और कुछ मिक्षा में भी नहीं मिलता था| इसलिये हाजमे के लिए नींबू का रस खूब पीता था पवहारी बाबा के पासआना-जाना बहुत अच्छा लगता था | वे भी मुझे बहुत प्यार करने लगे| एक दिन मन में आया कि श्री राम कृष्ण देव के पास इतने दिन रहकर भी मैंने इस रुग्ण शरीर को दृढ़ बनाने का कोई उपाय तो नहीं पाया| सुना है, पवहारी बाबा हठयोग जानते हैं | उनसे हठयोग की क्रिया सीख कर देह को दृढ़ बनाने के लिये अब कुछ दिन साधना करूँगा | जानता तो है, मेरा पूर्व बंगाली हठ जो मन में आयेगा, उसे करूँगा ही | जिस दिन मैंने पवहारी बाबा से दीक्षा लेने का इरादा किया, उसकी पहली रात एक खटिया पर सोकर पड़ा -पड़ा सोच ही रहा था कि देखता हूँ | श्री राम कृष्ण मेरी दाहिनी और खड़े होकर एक दृष्टि से मेरी ओर टकटकी लगाये हैं, मानो वे विशेष दु:खी हो रहे हैं।

जब मैंनें उनके चरणों में सर्वस्व समर्पण कर दिया है तो फिर किसी दूसरे को गुरु बनाऊँ? यह बात मन में आते ही लज्जित होकर मैं उनकी ओर ताकता रह गया | इसी प्रकार शायद दो-तीन घंटे बीत गये| परंतु उस समय मेरे मुख से कोई भी बात नहीं निकली| उसके बाद एकाएक वे अंतर्हित हो गये| श्री रामकृष्ण को देखकर मन न जाने कैसा हो गया! इसीलिये उस दिन दीक्षा लेने का संकल्प स्थगित रखना पड़ा| दो-एक दिन बाद फिर पवहारी बाबा से मंत्र लेने का संकल्प उठा| उस दिन भी रात को फिर श्री रामकृष्ण प्रकट हुए- ठीक पहले दिन की ही तरह| इस प्रकार लगातार इक्कीस दिन तक उनका दर्शन पाने के बाद दीक्षा लेने का संकल्प एक दम त्याग दिया| मन में सोचा, जब भी मंत्र लेने का विचार करता हूँ, तभी इस प्रकार दर्शन होता है, तब मंत्र लेने पर तो इष्ट के बदले अनिष्ट ही हो जायेगा |

सम्पादक द्वय उमशंकर राय

डा० सुरेश राय

स्वामी विवेकानन्द के इन पत्रों में आशा और निराशा के द्वन्दात्मक भावों की परिपुष्टि भी सहज ही उजागर हुयी हैं।

योगीराज से मिलने की आकुल-व्याकुल प्रतीक्षा में रत युवा संन्यासी का अंतरमन उद्विग्न हो उठता हैं, जब कड़ाके की ठंड में घंटो प्रतीक्षा रत रहने पर भी उन्हें दर्शन नहीं होते तो कह उठते हैं "बाबा जी के दर्शन की अभिलाषातो मेरी समाप्त हो चुकी है|" आज ही मैं चला आता: 4 फरवरी के पत्र में आशा कि एक किरण उन्हें आत्मविभोर कर देती है वह कहते हैं

"इस नस्तिकता के युग में भक्ति एवं योग की अद्भुत क्षमता के वे अलौकिक प्रतीक है| उनके दर्शन के पश्चात प्रमदा दास मित्र को लिखते हैं की घटना बड़ी विचित्र है| पत्र में न लिखूँगा मिलने पर बताऊँगा | (1)

3 मार्च वाले प्रमदा दास मित्र को लिखे पत्र में कहते हैं "यह संत अभी पूर्ण सिद्ध नहीं हुए हैं, क्योंकि वह बहुत से कर्म व्रत आचार इत्यादि में लिप्त है, और गुप्त भाव भी बहुत अधिक है|..... इस लिये अब इन साधुको व्यर्थ कष्ट नहीं दूँगा अब एक अन्य पत्र में लिखते हैं, "मैं ने बाबा जी में अद्भुत तितीक्षा देखी है मैं उनके कुछ प्रसाद का भिक्षुक कहूँ | (1)

---

1. पृष्ट 21 से लेकर पृष्ट 34 तक "पवहारी बाबा"

विवेकानन्द साहित्य प्रथम भाग से संकलित

विश्व के इतिहास में 18वीं और 19वीं सदी के अवतारी पुरुषों का उल्लेख इसलिए आवश्यक हो गया है कि ब्रह्म चैतन्य में निवास करने वाले महायोगी जन इंद्रियातीत सत्य की खोज कर अपनी इच्छाशक्ति के द्वारा सूक्ष्म ऊर्जा से किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ थे | पवहारी बाबा भी इन गुरुओं के महान गुरु थे |

निर्जन साधना की लंबी अवधि में गुफावास के उपरांत अपने सुरम्य उद्यान में बैठकर माँ सरस्वती की साधना के प्रत्यक्ष प्रमाण उनके अपने कर कमलों द्वारा लिखी गयी पुस्तके हैं, उनमें श्री घर स्वामी की टीका सहित श्रीमद् भागवत, श्री रामानुज का वेदान्त सूत्र पर श्री भाष्य; श्री विद्यारण्य की पंचदशी संस्कृत भाषा की पुस्तके थी |

कुछ पुस्तके हिंदी भाषा की भी थी, जिसमें भक्ति आधारित प्रेम -विलास और आध्यात्मिक रामायण प्रमुख हैं| ये सभी पुस्तकें अलग-अलग पन्नों पर लिखी गयी थी ये वृहत रचनाये स्वर्णाभा की छवि में अंकित हैं | किनारों पर बने कलात्मक बेल बूँटों की मनोहारी छटा से पाठक मंत्रमुग्ध हो उठता हैं | अपरिमित धैर्य और परीश्रम का प्रमाण यह रचनायें आज भी दिव्य प्रभा से दमक रही है|

विविध-वर्णी रंगों के संयोजन से चित्रित हस्त लिखित ग्रंथों की दिव्याभा को निरखता मन घंटो आत्म विभोर होकर उनके स्पर्श मात्र से पुलक और रोमांच का अनुभव करने लगता हैं, मानो योगिराज का सुधा सिक्त आशीर्वाद, मन-प्राण को नवीन स्पन्दन से भर रहा है | उनकी अपरूप काया का साक्षात्कार इन शब्दों में प्रतिभासित हो उठाता है की "उज्जवल गौर वर्ण की देह से ज्योति निकल रही थी | उस समय उन्हें असीम बल प्राप्त था | केश उनके पृष्ठ भाग में लटकते रहते थे |

उनके केश सुवर्ण की भाँति चमकते रहते थे | श्मश्रु (दाढ़ी,मूँछ) उनकी बड़ी सुंदर थी| पवहारी बाबा साधारण सन्यासियों की भाँति भस्म अथवा धूल आदि नहीं लगाते थे| अपने केशों को जटा की भाँति आगे बांध लेते थे |

परिधान- उनका वस्त्र कोई अधिक नहीं था | केवल एक कौपीन नीचे पहनते थे और ऊपर एक झूल पहनते थे |

स्वामी निर्वेदनन्द जी ने उनके अलौकिक क्रिया कलापों के विषय में सत्य ही लिखा है की "न केवल लेखन अपितु उनके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य सुंदरता का एक अनुपम उदाहरण होता था यहाँ तक कि उनका स्वर भी अत्यंत मधुर था| स्वामी विवेकानंद ने

कहा था कि "उन्होंने अभी तक जितने मधुरतम स्वर सुने थे, उनमें एक स्वर पवहारी बाबा का था" |

प्रात: स्मरणीय महायोगी पवहारी बाबा ने जीवन के अंतिम क्षणों में स्वयं को मानव दृष्टि से दूर कर लिया था | गुफा से बाहर निकल कर पूजाघर के बंद द्वार के पीछे से ही लोगों से वार्तालाप किया करते थे |

किसी के भी समक्ष वो प्रकट रूप से सामने नहीं आते थे | अपने महाप्रयाण की वेला से पूर्व एक बार उन्होंने अपने भतीजे बद्री नारायण से कहा कि "उनके शरीर त्यागने के पश्चात आश्रम में मंदिर में पूजा अर्चना वही किया करेगा और वही इस दास की पुस्तकों की देखभाल करेगा"| वर्ष 1898 की ज्येष्ठ मास की अमावस्या को शुक्रवार का दिन था|

प्रातः काल गंगा बाबा, बद्री नारायण और कुछ अन्य लोग स्नान के उपरांत बाहर प्रांगण में बैठे थे |

उन लोगों ने भीतर से भारी मात्रा में धुँआ निकलते देखा और सोचा कि, बाबा हवन कर रहे हैं, इसी से धुँआ निकल रहा है| कुछ दिन पूर्व ही भक्त गण उनके लिये काफी मात्रा में हवन सामग्री और घी लाये थे|

अग्नि की लपलपाती ज्वालाओं की विकरालता देखकर बद्री नारायण जी परिसर की दीवार के पास गये और अग्नि बुझाने के लिये बाबा से अनुमति प्राप्त करने की अनुमति मांगी| किंतु बाबा जी ने कोई उत्तर नहीं दिया एक पत्थर पर चढ़कर बद्री नारायण जी ने जब भीतर झाँका, तो लकड़ी की झोपड़ी जल रही थी| उन्होंने देखा कि बाबा जी अपने बालों पर लेप लगा रहे हैं|

बद्रीनारायण पुन: चिल्लाये कि यदि आपकी आज्ञा हो तो हम अग्नि को बुझाने की व्यवस्था करें! बाबाजी ने बस अपने हाथ को ऊपर उठा दिया और उनकी ओर देखा| फिर अपना कमण्डलु लेकर शान्तिपूर्वक उस जलती हुई झोपड़ी में प्रवेश कर गये| (1)

इस बीच अनेक ग्रामवासी दौड़ते हुए आये | किंतु परिसर में भीतर प्रवेश करने का साहस कोई नहीं जुटा पा रहा था|

---

1. पृष्ट 14 पवहारी बाबा उन्नीसवी शताब्दी के एक सन्त लेखक निर्वेदानन्द , वशिष्ट गुहा ऋषिके

कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के सुझाव पर अन्ततः दरवाजा तोड़ा गया| जब उन लोगों ने भीतर प्रवेश किया तो देखा की पवहारी बाबा अपने हवन कुंड में पद्मासन लगाये बेठे हैं | लकड़ी की झोपडी धू-धू कर जल रही थी |उनका शरीर भी जल रहा था| घी के कुछ पीपे, हवन सामग्री और उनकी कुछ पुस्तके उनके पास रखी थी | थोड़ी ही देर में पवहारी बाबा का ब्रह्मरंध्र (खोपड़ी के ऊपर स्थित) खुल गया और उनके जीवन का अंत हो गया|

विवेकानंद जी ने अपने हार्दिक उद्गार में अभिव्यक्त किया है कि "उनकी मृत्यु के पश्चात भी किसी को कोई कष्ट न हो, इसलिये उन्होंने पूर्ण स्वस्थ शरीर तथा मन से आर्योचित रीति से यह शेष आहुति भी समर्पित कर दी थी"| महायोगी ने स्वयं को पूर्णाहुति के रूप में होमाग्नि में होम कर दिया" | (1)

गगन चंद्र राय की इस सूचना से कि "बाबा अब नहीं रहे," उन्होंने अपनी मार्मिक अभिव्यक्ति इन शब्दों में

व्यक्त की है कि "प्रस्तुत लेखक इस परलोक गत संत के प्रति चिरकृतज्ञ तथा परम ऋणी है| लेखक ने जिन श्रेष्ठतम आचार्यों से प्रेम किया है तथा जिनकी सेवा की है, उनमें से वे एक है| उनकी पवित्र स्मृति में वह यह पंक्तियाँ,चाहे जितनी भी अयोग्य हो, समर्पित करता है|

स्वामी विवेकानंद ने कालिदास द्वारा रचित 'कुमारसम्भवम्' की इन पंक्तियों में यह व्यक्त किया हैं कि

"अलोक सामान्य मचिन्त्य हेतुकम् |

निन्दन्ति मंदाश्चरितं महात्मनाम" || (2)

अर्थात मन्दबुद्धि व्यक्ति महात्माओं के कार्यों की निंदा करते हैं, क्योंकि ये कार्य असाधारण होते हैं तथा उसके कारण भी सर्व साधारण व्यक्तियों के विचार शक्ति के परे भी होते हैं|

---

1. पृष्ट16"पवहारी बाबा लेखक निर्वेदानन्द जी" पृष्ट 14-15 पवहारी बाबा स्वामी निर्वेदानन्द

2. पृष्ट 19'पवहारी बाबा' लेखक स्वामी विवेकानन्द'

मौन योग साधना में निरत, प्रेम विनय और पवित्रता की साक्षात प्रतिमूर्ति, योगिराज पवहारी बाबा का जीवन असाधारण दिव्यता से परिपूर्ण था | जीवन के अंतिमक्षणों की सत्यता का भान हो जाने पर जहाँ अंतिम क्रिया में नौमन काष्ठ घृत और अन्यान्य वस्तुएँ भी शरीर को भस्तीभूत करने में यथेष्ट नहीं हो पाती है, वहाँ समिधा की कुछ हवन सामग्री और अल्पमात्रा में प्रयुक्त होने वाली लकड़ियों की विसात ही क्या? साधना के चरम शिखर पर आरूढ़ योगिराज जैसे पावन चरित्र "न भूतो न भविष्यति"|

जिस स्थान पर अंतिम समय में बाबा ने अपने पार्थिव शरीर को यज्ञ कुंड की समिधाग्नि में होम किया था, वहीं पर एक एक शिला खण्ड स्थापित है| समाधि स्थल के पास ही बाबा की परम पवित्र खड़ाऊ का दर्शन कर आज भी भक्तगण अनिर्वचनीय भाव तरंगों में डूब जाते हैं| बहुत-बहुत पुरानी श्री रामकृष्ण देव की एक छोटी तस्वीर भी उसी कक्ष में रखी हुई है|

पवहारी बाबा प्रभु के अंतरंग साम्राज्य के अधिकारी थे | विस्मयाभिभूत करने वाले चमत्कारों को यदि छोड़ भी दे तो सिद्ध पुरुष सहज की प्राकृतिक नियमों के उलंघन में सर्व समर्थ है | संत के लिए यह शरीर ऊर्जा का केवल घनीभूत रूप है, और इच्छानुसार परिवर्तनीय भी | ईश्वर से एकात्म हुए सिद्ध पुरुष अपनी दैवी उपलब्धियों को अपने उन्नत शिष्यों में संचारित करने में समर्थ होते हैं |

परमहंस राम कृष्ण जी ने अपनी समस्त आध्यात्मिक ऊर्जा को शक्तिपात के द्वारा विवेकानंद को हस्तान्तरित कर उन्हें पाश्चात्य जगत में भारत की सनातन संस्कृति (वेदों के ज्ञान) को विस्तारित करने के लिए प्रेरित कर विश्व के रंगमंच पर भेजा | प्रसिद्धि से दूर गहन आत्मानुसंधान में निरत पवहारी बाबा का असीम स्नेह प्राप्त कर अपनी शिकागों यात्रा में निकले 32 वर्षीय अनुपम युवा संन्यासी विवेकानंद जब 1893 में भारत की सनातन संस्कृति के साथ विश्व मंच पर उदित हुए तो 7000 लोगों की विशाल जनसभा मंत्र-मुग्ध होकर उनकी जय-जय कार करने लगी |

व्यालिक की बीन पर जैसे फणिधर मोहा विष्ट होकर अपना मन मोहक नृत्य प्रस्तुत करता है उसी प्रकार स्वामी जी की वाणी का वशीकरण पाश्चात्य जगत को अपने ज्ञानपाश में आबद्ध कर लेता था | विवेकानंद की भाँति ही अगस्त सन् 1920 में "द सिटी ऑफ स्पार्टा" जहाज से बोस्टन सम्मेलन के लिए भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए निकल योगानंद, भी बंगीय पृष्ठभूमि से ही आते हैं, जहाँ ज्ञान भक्ति और वैराग्य की त्रिवेणी प्रवाहित होती रही है |

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना के अविरल प्रवाह ने दोनों की दिव्य चेतना को विश्व व्यापकता प्रदान की | दोनों का जन्म आध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही गुरु कृपा से हुआ था |

भक्तिमती माता भुवनेश्वरी देवी को विश्वेश्वर भगवान ने स्वप्न में दर्शन देकर स्वयं ही उनकी कोख से अवतार लेने का आशीर्वाद प्रदान किया था | वे एक ऐसी पिता की संतान थे जो भोग और त्याग वृत्ति के समर्थक थे, किंतु माता अत्यंत धार्मिक और प्रभु भक्त थी | बाबा विश्वनाथ के प्रसाद स्वरूप अवतीर्ण बालक का देवोपम स्वरूप और विलक्षण स्मरण शक्ति का अवदान असाधारण था, कालांतर में भारत की रत्न प्रसूता धरती पर योगानंद का प्रादुर्भव 5 जनवरी 1993 को महावतार बाबा की भविष्यवाणी के फल स्वरुप माता ज्ञानप्रभा देवी की कुक्षि से हुआ था | पिता श्री भगवती चरण घोष, लाहिड़ी महाशय के अनन्य भक्त थे |

अपनी अप्रत्याशित मृत्यु के पूर्व माता ने रहस्योद्घाटन में बताया था कि "मैं तुम्हे लाहिड़ी महाशय से आशीर्वाद दिलाने के लिए उनके पास लेकर गयी थी | और उन्होंने तुम्हें अपने अंक में लेकर आध्यात्मिक दीक्षा के रूप में तुम्हारे ललाट पर अपना हाथ रख दिया था | और कहा "छोटी मां! तुम्हारा पुत्र एक योगी होगा, एक आध्यात्मिक इंजन बन कर वह अनेक आत्माओं को ईश्वर के साम्राज्य में ले जायेगा" |

सहस्त्राब्दियों से योगीश्वरो की इस धरती पर अद्भुत चमत्कारों और भविष्यवाणियों का प्रतिफलन होता रहा है | त्रिकाल दर्शी महावतार बाबा का यह चमत्कारी आदेश योगानन्द जी के गुरु श्री श्री युक्तेश्वर गिरि जी को प्राप्त हुआ था कि "स्वामी जी ! पूर्व और पश्चिम के बीच भविष्य में होने वाले सौहार्द पूर्ण आदान-प्रदान में एक भूमिका निभानी पड़ेगी" |(1)

कुछ वर्षों बाद मैं आपके पास एक शिष्य भेजूँगा, जिसे आप पश्चिम में योग का ज्ञान प्रसारित करने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं |" और अपने गुरु स्वामी युक्तेश्वर गिरि के यह कहने पर कि "तुम ही वह शिष्य हो जिसे मेरे पास भेजने का वचन बाबाजी (महावतार बाबा जी) ने कई वर्षों पूर्व दिया था|"

सर्वज्ञ महान और दिव्य आत्मायें अपनी भविष्यवाणियों को संम्प्रेषित कर देते हैं जिससे इनके साकार होने पर जन सामान्य के हृदय में ईश्वर के प्रति अधिकाधिक श्रद्धा विकसित हो सके|

---

1. योगी कथा मृत पृष्ट 23 परम हंस योगानन्द

श्री युक्तेश्वर गिरि जी द्वारा परम गुरु के आदेशानुसार "हिंदू और ईसाई धर्मग्रंथो में निहित एकता पर छोटी सी पुस्तक लिखने का संकल्प "द होली साइंस" के रूप में पूरा हुआ।

श्री युक्तेश्वर गिरि जी की आज्ञा तथा महावतार बाबा के दर्शनोंपरांत योगानंद जी स्वामी विवेकानंद जी की भाँति ही अगस्त 1920 में बोस्टन सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए अमेरिका की धरती पर पधारे।

इनका आंग्लभाषा पर एकाधिकार तो नहीं था फिर भी अपने करुणा सागर गुरु की कृपा से धारा प्रवाह ओजस्वी वक्तृता के साथ धर्म विज्ञान पर अपना सारगर्भित व्याख्यान देकर पाश्चात्य जगत को अचंम्भित कर उन्हें अपना मुरीद बना लिया।

6 अक्टूबर 1920 से 1930 तक के दशक में सहस्र- सहस्र अमेरिका वासियों को "सेल्फ रियलाजेशन-फेलोशिप" की क्रिया योग के द्वारा योग के गूढ़तम रहस्यों की दीक्षा प्रदान की।यद्यपि संस्था के मुख्य कार्यालय "माउंट वॉशिंगटन" को चलाने में अत्यधिक व्यय हो रहा था, फिर भी पूर्व और पश्चिम के बीच बढती संभावना और सद्भावना ने उन्हें हर्षित कर रखा था।

'सांग्स ऑफ़ द सोल' तथा <u>हिस्पर्स फ्राम इटर्निटी</u> के लेखन से अपनी प्रार्थनाओं और आत्म विचारों के माध्यम से उन्हें ईश्वरीय मार्ग दर्शन प्रदान किया। योगानंद जी का मुख्य ध्येय भगवान श्री कृष्ण द्वारा उपदिष्ट मूल योग और ईसा मसीह द्वारा प्रतिपादित मूल ईसाई धर्म की मूल भूत एकता और पूर्ण सांमजस्य पर प्रकाश डालना था। सभी सच्चे धर्मो के सारे पथ एक ही दिव्य राजमार्ग पर पहुंचाने वाले हैं, तथा महावतार बाबा के इस कथन को कि <u>प्राचीन योगमार्ग के माध्यम से पाश्चात्य जगत में भी ईश्वर साक्षात्कारी संत पैदा होंगे" (1)</u> की सत्यता को अक्षरश सिद्ध कर दिखाया,

इस युग मे भी न केवल भारत में वरन 50 वर्षों से अधिक समय तक अन्न-जल के बिना जीवित रहने वाली गिरि बालाजी हो (बंगाल की निराहारी संत) या पश्चिम की महान संत टेरेसा नॉयमैन, सेंट निकोलस, सेंट कैथेरिन, सन्त जोसेफ या 19वी सदी की लुइयालेटो इन संतों ने वायु और सूर्य के प्रकाश की सूक्ष्म तरंगो तथा ब्रहमांड में व्याप्त अनन्त प्रवाह से सीधे नवशक्ति प्राप्त कर दैवीय उन्नति, सनातन तेज तथा आकाश तत्व की शक्ति से जीवित रहने का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

<u>1. योगी कथामृत परमहंस योगानन्द पृष्ट 43</u>

"पूर्व और पश्चिम को एक दूसरे का अवदान लेना होगा" इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए योगानंद को परम गुरु महावतार बाबा ने पश्चिम की ओर जाने का मार्ग निर्दिष्ट किया था।

7 मार्च 1952 को विश्व के महानगुरु ने योग के मूल्य (ईश्वर प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक प्रविधियों) को जीवन में ही नहीं अपितु मृत्यु में भी प्रदर्शित किया। उनके देहावसान के कई सप्ताह बाद भी उनका अपरिवर्तनीय मुख अक्षयता की दिव्य कांति से देदीप्यमान था।

फारेस्ट लॉन मेमोरियल-पार्क, लास ऐंजेलिस (जहाँ महान गुरु का पार्थिव शरीर अस्थायी रूप से रखा गया है) के निर्देशक श्री हैरी टी० रावे ने सेल्फ रियलाइजेशन फेलोशिप को एक प्रमाणित पत्र भेजा था, उसके कुछ अंश निम्नवत हैं।

परम हंस योगानंद के पार्थिव शरीर में किसी भी प्रकार के विकार का लक्षण न दिखाई पड़ना हमारे लिए अत्यंत असाधारण और अपूर्व अनुभव है। उनकी मृत्यु के 20 दिन बाद भी उनके शरीर में किसी प्रकार की विक्रिया नहीं दिखायी पड़ी..... 27 मार्च को शवपेटिका पर काँसे के ढ़क्कन के बंद करने के पूर्व योगानंद जी का शारीरिक रूप ठीक वैसा ही था जैसा 7 मार्च को '। (1)

परमहंस योगानंद और महान युग द्रष्टा विश्ववंद्य विवेकानंद की रहस्यमयता का गोपनीय सत्य परमहंस योगानंद के परम प्रिय शिष्य श्री डिकिन्सन महोदय के उस वक्तव्य से प्रत्यक्ष हुआ जब सितम्बर 1936 में योगानंद जी भारत से पुन; अमेरिका गये। 24 दिसंबर 1936 को (आध्यात्मिक) क्रिसमस के अवसर पर विभिन्न देशों से लाये गए उपहार स्वामी योगानन्द जी द्वारा अनुरागी शिष्यों को बाँटे जा रहे थे।

श्री डिकिन्सन को स्वामी जी ने एक चाँदी का गिलास भेंट किया जिसे पाकर वे उसे एक टक निहार रहे थे। कुछ दिनों उपरांत जब वे गुरुदेव को उस चाँदी के गिलास के लिये धन्यवाद दे रहे थे, उन्होंने कहा "मैं वह गिलास खास तुम्हारे लिये ही लाया था"।

"तैतालिस वर्षों से मैं उस चाँदी के गिलास की प्रतीक्षा करता आ रहा हूँ"। और अपने अंतर मन में छिपा कर रखी इस कहानी को बताया कि "मैं पानी में डूबकर मर रहा था"। (1)

---

1. योगी कथा मृत -परमहंस योग योगानंद पृष्ट 482

2. योगी कथामृत पृष्ट 653 परमहंस योगानन्द

नेब्रास्का राज्य के छोटे से शहर में मेरे बड़े भाई ने खेल-खेल में मुझे 15 फुट गहरे गढ्ढे में धकेल दिया | मैं पाँच वर्ष का था | जब दूसरी बार पानी में डूबने लगा, तभी सारे अंतरिक्ष को प्रकाशमान करता हुआ एक बहुरंगी दीप्तमान प्रकाश प्रकट हुआ |

उस प्रकाश के बीच में एक आकृति थी | उस पुरुष की आँखें अत्यन्त शांत थी, और उसके चेहरे पर अभयदान करने वाली मुस्कान थी"| किसी तरह पास खड़े वृक्ष की डाल पकड़ कर लड़कों ने मुझे किनारे पर खींच लिया | और मेरा प्रथमो पचार किया।

वह 1893 का सितंबर महीना था | विख्यात "विश्व धर्म संसद" का अधिवेशन चल रहा था। माँ और मैं मुख्य सड़क पर पैदल

जा रहे थे की पुनः उसी प्रकार का दीप्तमान प्रकाश मेरी आंखों में कौंध गया। हम से कुछ ही कदम की दूरी पर वही पुरुष मुझे आराम से टहलता हुआ दिखाई पड़ा | जिसका मुझे वर्षो पहले डूबते समय दर्शन हुआ था | वह पुरुष एक विशाल समोगृह के पास जाकर उसके दरवाजे में से अंदर घुसकर अदृश्य हो गया | मैं चीख पड़ा "माँ यह वही आदमी था जो मेरे डूबते समय प्रकट हुआ था"| माँ और मैं तुरंत उस सभागृह में जा पहुँचे, वह पुरुष व्याख्यान मंच पर बैठा हुआ था | थोड़ी देर में हमें पता चल गया कि वह पुरुष भारत के स्वामी विवेकानंद थे"| व्याख्यान समाप्त होते ही मैं उनसे मिलने आगे गया | मुझे देखते ही वे

इस प्रकार मुस्कुराये मानो हम पुराने मित्र हो | मैं इतना छोटा था कि अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की अक्ल मुझमें अभी नहीं आई थी, परंतु मन ही मन आशा कर रहा था कि "वे मेरे गुरु बनेंगे | उन्होंने मेरे मन की बात पढ़ ली |

"नहीं बेटा! मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ"| स्वामी विवेकानंद ने अपनी सुंदर भेदक आँखों से मेंरी आँखों में देखते हुए कहा "तुम्हारे गुरु बाद में आयेगे" वो तुम्हे चाँदी का एक गिलास देंगे" |

वर्षो पर वर्ष बीत गये, कोई गुरु नहीं आया | स्वप्न में हृदय से प्रभु से गुरु को अपने पास भेजने की प्रार्थना की |

यहाँ लॉस ऐंजेलिस में मैं पहली बार आपके एक व्याख्यान में आया और उसी समय मुझे पता चल गया कि "मेरी प्रार्थना पूरी कर दी गयी है| श्री डिकिन्सन ने पुन: यह कहना शुरू किया"|

कभी कभी चाँदी के गिलास के बारे में सोचता रहता था |..... दूसरे ही क्षण मेरी आंखे अपने गुरु के उस उपहार को देख रही थी | जिसे स्वामी विवेकानन्द ने तैतालिस वर्ष पहले देखा था - चाँदी का वह गिलास |

श्री डिकिन्सन की भेट 1893 में शिकागो में विवेकानन्द से हुई थी | परमहंस योगानन्द जी का जन्म भी उसी वर्ष 5 जनवरी को गोरखपुर में हुआ था | विवेकानन्द जी को इस बात का ज्ञान था कि योगानन्द ने पुन: जन्म ले लिया है, और भारत का तत्वज्ञान सिखाने के लिये वे अमेरिका जायेगे |

इन विस्मय कारी अनुश्रुतियों का उल्लेख करना इसलिए आवश्यक था की संपूर्ण ब्रह्मांड का संचालन कुछ अदृश्य शक्तियों के मार्ग दर्शन में चल रहा है | जो सामान्य जनों की बुद्धि से परे है |

भारत में ही नहीं वरन पाश्चात्य जगत में भी ईश्वर साक्षात्कारी महान संत अवतरित हुए | संत समागम के लिए सदैव तत्पर रहने वाले योगानंद जी जब 1935 में कोनर स्रुथ में कैथोलिक संत टेरेसा नायमन से मिले जो ईसा के क्षत चिन्हों को भावावेश में अपने शरीर पर धारण कर लेती थी, और मात्र ईश्वर के प्रकाश से ही जीवित रहती थी, योगानंद जी के यह पूछने पर कि "आप केवल बारह वर्षों तक ईश्वर के प्रसाद के रूप में एक होस्ट खाकर तो 12 वर्षों तक जीवित नहीं रह सकती?

उनका उत्तर था | "आज इस पृथ्वी पर मेरे जीवित रहने का एक कारण यह सिद्ध करना भी है कि मनुष्य केवल अन्न से नहीं बल्की ईश्वर के प्रकाश से भी जीवित रहता है| 15वीं सदी के सेंट निकोलस ऑफ फ्लू, सेंट लेडविना आफ सीडाम, सेंट कैथेरिन ऑफ सिएना, डोमेंनिका लाजारी उन्नीसवी सदी की लुइयालेटो, बंग महिला गिरिबाला टेरेसा नायमन आदि का जीवन पूर्व जन्मों के पुण्यों का भी प्रति फलन रहा है |

इंद्रियांतीत सत्य की खोज में संतों की एक लंबी श्रृंखला भारत वर्ष में युगो-युगो से क्रिया शील रही है| महावतार बाबा जी के परमप्रिय शिष्य लाहिडी महाशय जो योगावतार माने जाते थे उन्होंने अपने गुरु के विषय में कहा है कि "मैंने ऐसे महापुरुष का दर्शन कर लिया है जिनके हाथों में स्वर्ग और पृथ्वी की कुंजियां है |

पृष्ट 486 योगी कथामृत परमहंस योगानन्द

क्रिया योगियो के परम गुरु लाहिड़ी महाशय के शिष्य और परमहंस योगानंद के गुरु ज्ञानावतार श्री श्री स्वामी युक्तेश्वर गिरि जी तथा योगानंद जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी जेम्स जे० लिन जिनका नामकरण जनकानंद के रूप में योगानंद जी ने किया था, उन्हें अपने शब्दों में प्रेमावतार माना | क्योंकि विश्व भ्रमण करके सभी मुमुक्षुओं को योगानंद जी ने बता दिया था कि ईश्वर साक्षात्कार आत्म प्रयास से ही संभव है | क्रिया योग रूपी कुंजी को प्रयुक्त कर अंततः स्वयं अपने में पूर्ण देवत्व का दर्शन कर सकने में समर्थ हो सकेंगे |

योगिराज पवहारी बाबा ने भी इसी जीवन में मृत्यु की बाट न जोह कर इसी लोक में तथा प्रस्तुत क्षण में ही आध्यात्मिक सत्यो का साक्षात्कार कर लेना चाहिए | इस सत्य को ही अपनी अविरल निर्जन साधना में व्यक्त किया है, कि मुक्ति आंतरिक वैराग्य से ही संभव है, वाह्य त्याग से नहीं |

संसार को साधना स्थली मानने वाले योगिराज कहते थे कि जो साधु का दर्शन करता है वह साधु ही हो जाता है यदि साधु के दर्शन का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तो साधु भी आसाधु ही है | जिस दिन पवहारी बाबा ने अपने शरीर का दाह किया उस दिन जब लोगों ने भीतर प्रवेश किया तो देखा कि साथ के कमरे में एक नाग और एक चूहा एक ही बर्तन में एक साथ दूध पी रहे हैं| पतंजलि का सूत्र है 'तत्सन्निधौ वैरत्याग' जन्मजात शत्रुता भी उनकी उपस्थिति में अदृश्य हो जाती है | इस सूत्र का यह एक स्पष्ट प्रमाण था | दूसरा प्रमाण था जब हिमालय क्षेत्र में विचरण करते हुए स्वामी विवेकानंद को एक सौम्यदर्शी सन्यासी के दर्शन हुए| वार्तालाप के मध्य "जब उन्होंने उनके मुख से सुना कि वे ही वह व्यक्ति है जो पवहारी बाबा की कुटिया में चोरी करने घुसे थे | साधु ने कहा "पवहारी बाबा ने जब मुझे नारायण ज्ञान से ओत-प्रोत ह्रदय से सर्वस्व अर्पित किया, तब मुझे अपना दोष समझ में आया और अपनी हीनता पर लज्जा का बोध हुआ और तब से ऐहिक अर्थ का त्याग कर पारमार्थिक अर्थ की खोज में निकल पड़ा" | (1)

<u>पृष्ट 624 योगी कथामृत लेखक परमहंस योगानन्द</u>

<u>पृष्ट 625-26 योगी कथामृत</u>

<u>पृष्ट 486 योगी कथामृत परमहंस योगानन्द</u>

<u>गाजीपुर के पवहारी बाबा 19वीं सदी के एक महान सन्त पूज्य स्तवन स्वामी विवेकानंद पृष्ट 6</u>

<u>पृष्ट 20 सबके स्वामी जी, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्च</u>

इस घटना ने स्वामी जी के मन पर गहरा प्रभाव डाला | पवहारी बाबा ने असन्त को भी क्षण-मात्र में संतत्व की ओर मोड़ दिया |

संयोग या श्रद्धा -

जिस स्थान पर अंतिम समय में बाबा ने अपने पार्थिव शरीर को यज्ञ कुंड की समिधाग्नि में होम किया था वहीं पर एक शिला खंड स्थापित है; एक बाबा की तथा दूसरी पूर्व वर्ती बाबा की समाधि स्थल के पास ही बाबा की परम पुनीत चरणपादुका का दर्शन कर आज भी भक्तगण भावविह्वल हो उठते हैं | कक्ष में एक पुरानी श्री रामकृष्ण देव जी की तस्वीर रखी हुई है |

अर्द्धशती से पूर्व का समस्त परिसर आज भौतिक रूप से पुर्न उद्धरित हो चुका है | पूर्व काल में भी समय-समय पर भक्तगणों की श्रद्धा की साक्षी अतिशय ऊंची-ऊंची दीवारे, शंकर बाबा दुःखउत बाबा और बध उत बाबा की समाधियाँ सिद्ध करती हैं कि जीवितावस्था का स्नेहमय सानिध्य मृत्यु के पश्चात भी बाबा का सामीप्य लाभ कर रही है |

शासन द्वारा उपलब्ध करायी गयी धनराशि जिस हेतु प्राप्त हुई, उसके द्वारा न तो मंदिर का की जीर्णोद्धार हो सका और न महायोगी की प्रतिमा ही प्रतिस्थापित हो सकी |

आज से 55 वर्ष पूर्व मोहम्मदाबाद तहसील के गोड़उर ग्राम निवासी स्व० अखिलेश नारायण राय एडवोकेट अपने परिवार के साथ जनपद में वकालत करने के लिए आए|

रेलवे स्टेशन के समीप एक मुस्लमान परिवार अपने भूखंड पर फूलों की खेती करता था | वकील साहब ने अपने मित्रों के साथ इसे खरीद लिया और भूमिहार ब्राह्मणों की बहुलता के कारण इस स्थान को राय कॉलोनी कहा जाने लगा |

कालांतर में यह धार्मिक आस्थाओं वाला परिवार जनपद के संतों की प्रसिद्ध श्रृंखला में योगिराज पवहारी बाबा के कुर्था आश्रम से जुड़ता गया | वकील साहब के बड़े भाई स्व० चंद्रवदन राय जी प्रतिवर्ष अपनी छुट्टियाँ बिताने गाजीपुर आते और गंगा स्नान के पश्चात स्टेशन रोड राय कॉलोनी स्थित आवास से पैदल ही पवहारी आश्रम का दर्शन करने के लिए जाते |

आवागमन के साधनों की कभी तथा छोटे-छोटे बच्चों की देख-रेख के कारण मैं तो प्रमुख पर्वो पर ही जा पाती थी, किंतु वकील साहब बहुधा आते-जाते रहते थे| वहाँ जाकर दर्शन-पूजन और लघु अरण्य की अद्भुत छवि, प्रकृति की मनोमुग्धकारी छटा और

बाबा की अलौकिक गाथाओं ने परिवार में श्रद्धा की ऐसी तरंग तरंगित की कि मन-प्राण आकुल होकर अवकाश के क्षणों में हम लोग कुर्था कुटीर पर पहुँच ही जाते | सर्पीली पगडंडी जैसे ही समाप्त होती पूर्वाभिमुख मार्ग के शुरू होते ही सामने मां गंगा का विस्तृत दियारा, गर्मियों में दहकती रेत के बीच श्री गंगा जी का दर्शन कर मन प्रसन्न हो जाता | सर्वत्र विस्तीर्ण वृक्षराजि, पक्षियों के मधुर कलरव के बीच आश्रम में प्रविष्ट होते ही आतप का ताप स्वतः तिरोहित हो जाता | वर्षा के दिनों में उमड़ते-घुमड़ते श्वेत-श्याम या धूसर वर्णी बादलों की गरज-तड़प के बीच हरीतिमा का साम्राज्य धान के पौधो की क्यारियों का वायुवेग से भदमस्त होकर झूमना, मां गंगा की अथाह जल राशि का दर्शन करना और कभी-कभी वर्षा में भीगते हुए आश्रम में पहुंच कर विश्रान्ति पाना सब कुछ अत्यन्त सुखद सा लगता |

शिशिर हेमन्त और वसंत की सुषमा, प्रकृति के मोहक रूप का रसपान करती हुई आंखें, चना, मटर, तीसी, सरसों के श्वेत, बैंगनी, पीले रंग की आभा से गदराये खेतों का विस्तीर्ण साम्राज्य निर्निमेष दृष्टि से निहारते हुए मनविविध भावधाराओं में बह कर सुध-बुध खो बैठता | गेहूँ और जौ की सुनहरी वालियाँ सूर्य की सुवर्ण रश्मि में दमक उठती, कहने का तात्पर्य है की सभी ऋतुओं में आश्रम अपने विशाल वृक्षों फल-फूलों और आस-पास फैले सघन द्रुमदलो के कारण संमशीतोष्णता का आभास कराता रहता क्योंकि वहाँ पहुंच कर श्री रघुनाथ जी एवं अन्य विग्रहों को दर्शन कर शीत-ताप बातास की अनुभूति को भूल कर, अन्तरमन बाबा की अकथ कहानी को सुनकर-पढ़कर और जान कर आत्म विभोर हो उठता |

किसी भी शुभ कार्य में वकील साहब के बड़े भ्राता पवहारी बाबा के वंशज स्व० रंगनाथ नाथ राकेश जी को पहले निमंत्रण पत्र आश्रम पर दे आते और मां गंगा का दर्शन कर उनके चरणों में आर्त्त भाव से अपनी श्रद्धा समर्पित कर आते | बड़े परिवार में विवाहादि होते ही रहते थे | अतः बाबा के परिवार से पधारे उनके वंशज में, मानो हम लोगों को प्रत्यक्ष रूप से उनका आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है, यह भावना उत्तरोत्तर दृढ होती रही | वर्ष 1982 में स्वामी सहजानंद महाविद्यालय के संस्थापक स्व० केशव प्रसाद शर्मा जी जो हमारे परिवार से कलकत्ता से ही जुड़े हुए थे, गाजीपुर में इस संस्था की स्थापना के पश्चात नगर के गणमान्य नागरिकों, सुधीजनों संतों और महात्माओं के दिशा निर्देश में महाविद्यालय के प्रांगण में हथिया राम मठ के महंथ बालकृष्ण यति जी महाराज के द्वारा यज्ञ का आयोजन किया गया | प्रातः स्मरणीय पवहारी बाबा का शताब्दी जयंती वर्ष चल रहा था और इस विशेष अवसर पर डॉ० विवेकी राय जैसे मूर्धन्य साहित्यकार के संपादकत्व में "गाजीपुर के पवहारी बाबा 19वीं सदी के एक महान संत" नामक पुस्तिका का प्रकाशन दुर्गेश प्रिंटर्स 34/1 नंदलाल मित्रा लेन, साल किया हाबड़ा कोलकाता से किया गया | जिसे वकील साहब हजारों की संख्या में मुद्रित कराकर लाये थे, और इस पुनीत अवसर पर इसे निःशुल्क वितरित भी किया, जिससे

कि योगिराज पवहारी बाबा की आध्यात्मिक सिद्धि और साधना से सर्व साधारण परिचित हो सके |

पवहारी बाबा ने सिद्ध संतों और योगी जनों के अंतरंग में प्रविष्ट होकर उनकी शक्ति का साक्षात्कार किया था, और अपनी भूमिगत साधना से प्राप्त आध्यात्म सिद्धि को लोक कल्याणार्थ समर्पित कर दिया था | पुस्तिका प्रकाशन का उद्देश्य भी यही था कि हम अपनी धरती के असाधारण सिद्ध संत की ऊर्जा से उर्जस्वित होकर अपनी सनातन संस्कृति स्वधर्म और चारित्रिक उन्नयन के द्वारा आत्म कल्याण के साथ-साथ जन कल्याण के प्रति भी अभिमुख हो सके |

समय अपनी गति से बीतता रहा | वर्षपर्यन्त विविध कार्यक्रमों का आयोजन जैसे रथयात्रा, विवेका नंद जयन्ती, संत समागम ज्येष्ठ अमावस्या के दिन पूर्व की भाँति विशाल भंडारे के साथ कार्तिकी मेला, कृष्ण जन्माष्टमी, और रामनवमी के पुनीत अवसर पर एकत्रित होकर बाबा के प्रति अगाध श्रद्धा को निवेदित कर भक्ति भाव से अपने जीवन की क्लान्ति को विश्रान्ति देते रहे हैं |

बाबा की पावन स्मृति में डॉ० विवेकी राय डॉ० सर्वजीत राय एडवोकेट अखिलेश नारायण राय एड० उमाशंकर राय एड० चंद्रमा राय तथा डॉ० शकुंतला राय आदि के द्वारा " पवहारी बाबा" के नाम के संम्पृक्त संस्था "पवहारी स्मृति परिषद" की स्थापना वर्ष 1988 में की गयी |

आगे चलकर वर्ष 1991-92 में संस्था ने दिव्यांगों के लिये पवहारी अंध विद्यालय एंव वर्ष 2000 में पवहारी मूक बधिर विद्यालय की आवासीय एवं अनावासीय व्यवस्था की | दिव्यांगों की यह सेवाभावी संस्था उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर होती रही |

ऋषि परंपरा में श्रद्धा रखने वाले सरस्वती के वरद पुत्र डॉ० विवेकी राय की लेखनी से नि: सृत लेख "एक सिद्ध संत की स्मृति शताब्दी" को पढ़कर उनके साहित्यिक मित्र महामहिम राज्यपाल आचार्य विष्णु कांत शास्त्री गाजीपुर के गोराबाजार स्थित स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पधारे तो अवश्य थे किंतु उद्देश्य था महान संत पवहारी बाबा के आश्रम का दर्शन करना |

सरकारी अमलो का हुजूम बाहर खड़ा था, और भीतर दो सुहृद पवहारी बाबा के समाधि स्थल पर भाव विभोर होकर महान योगी की तप:स्थली के रजकणों को मस्तक पर लगाते धरती को बारम्बार प्रणाम करते, वहाँ की समस्त ऊर्जा को अपने हृदय में आतुरता से समेटने में निमग्न थे |

आश्रम के पुजारी श्री अमरनाथ तिवारी जी ने अत्यंत भाउकता भरे क्षणों का सजीव चित्रण उनके जाने के बाद मुझसे किया |

महामहिम की अनुभूति निम्न शब्दों में व्यक्त हुई थी |

"पूजनीय पवहारी बाबा के आश्रम में आकर हार्दिक प्रसन्नता हुई | वर्षों की मनोकामना प्रभु कृपा से आज पूर्ण हुई | स्वामी विवेकानंद की रचनाओं में बाबा का अत्यंत भक्तिपूर्वक उल्लेख अनेक स्थानो पर हुआ है |

विवेकानंद जी की रचनाओं के पाठ के समय से ही यहाँ आना चाहता था | आज आ पाया | बाबा के द्वारा पूजित प्रभु विग्रहों के दर्शन किये, उनकी गुफा का द्वार देख, उनके आश्रम की परिक्रमा की, जीवन धन्य हो गया | बाबा की कृपा बनी रहे, यही प्रार्थना कर रहा हूँ |

महामहिम के आने से आवागमन में कुछ सुविधाये तो अवश्य मिली, किंतु डॉ० विवेकी राय के प्रति अनन्य श्रद्धा भाव रखने वाले तत्कालीन जिला अधिकारी श्री राजन शुक्ला ने आश्रम के पुर्ननिमाण में अपनी समस्त श्रद्धा निवेदित करते हुए मुख्य द्वार, वहाँ की सड़क, शिलापट्ट लेखन, तथा सुंदरीकरण में अपना योगदान दिया | जनपद या अन्य स्थानों पर स्थानीय जन अपने 'इष्टो' की साकार प्रतिमा स्थापना में अपना सौभाग्य मान रहे है , किंतु इतने बड़े महान संत की साकार प्रतिमा का न होना वकील साहब (स्व० अखिलेश नारायण राय) को सदैव प्रमथित करता रहता था | गुरुवर डॉ० विवेकी राय और अपने बाल-सखा तथा परम मित्र काशी विद्यापीठ के डॉ० सर्वजीत राय से वे इस विषय पर सदैव चर्चा करते रहते थे |

काल क्रम से अनेक सुहृद और श्रेष्ठ जन कालकवलित होते रहे | वर्ष 2016 में डॉ० विवेकी राय जी की मृत्यु के पश्चात वे अधीर हो उठे | उनके साथ अनेक बार आश्रम जाते, अपनी चिर अभिलाषित इच्छा व्यक्त करते, और बाबा की प्रतिमा स्थापना का आग्रह करते रहते थे | गुरुदेव के परलोक गत होने के पश्चात वर्ष 2017 में वे रोग ग्रस्त होकर 3-4 महीनों तक दिल्ली में चिकित्सको की देख-रेख में स्वस्थ होकर आए तो अपने सम्बन्धी मित्र एड० श्री शेषनाथ राय से महान गुरुदेव के ऊपर विशेषांक निकालने की चर्चा के साथ पवहारी बाबा की प्रतिमा स्थापना की भी विशद चर्चा की |

'पवहारी स्मृति परिषद्' के तत्वावधान में कुलाधिपति श्री रामभद्राचार्य जी के मंगल आशीर्वाद के फल स्वरुप डॉ० मान्धाता राय, डॉ० व्यास मुनि राय, तथा गुरुदेव के मित्रों शिष्यों और सुहृद जनों के संस्मरणों निबंधों तथा आत्मीय वार्तालापो ने आकार ग्रहण कर लिया और डॉ० विवेकी राय विशेषांक छप कर आ गया |

वर्ष 1918 में यह विशेषांक वर्तमान महामहिम राज्यपाल माननीय मनोज सिन्हा जी द्वारा डॉ विवेक राय जी की जन्म-जयन्ती पर इस विशंषक के विमोचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ |

अस्वस्थता के बीच भी विशेषांक के बारे में वे बार-बार पुस्तक को सभी सहित्याकारो तक पहुँचाने की बात पूछते रहते थे |

काल की गति धीरे धीरे निकट आती गयी | 3 जनवरी सन् 2019 में पक्षाघात से ग्रस्त वकील साहब काशी, पुन: राजस्थान और अंत में दिल्ली में अपने इलाज के लिए गये | समस्त परिवार को उनके स्वास्थ्य की अतिशय चिंता और उपचार के अनेक विधाओं का उनको स्वस्थ न कर पाना घोर निराशा और दु:ख में डाले रहता था | किंतु वे तो बस अपने अति प्रिय सम्बन्धी श्री सच्चिदानंद राय जी के साथ अपने मुख्य और प्रियविषय कि 'पवहारी बाबा' की प्रतिमा कब और कैसे बनेगी की ही चिंता में निमग्न रहते थे |

मैं भी यही समझाती थी कि "आप जैसे स्वस्थ होकर गाजीपुर चलेंगे हम लोग पहला काम 'बाबा' की मूर्ति स्थापना का ही करेंगे |

नेताजी ! (श्री सच्चिदानंद राय हमारे समधी साहब का उपनाम) वे प्रतिदिन हॉस्पिटल आते और घंटो बैठकर अपने स्नेहिलस्पर्श और आश्वस्ति भरे स्वर में कहते "वकील साहब आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेंगे और गाजीपुर चलकर पहला कार्य यही करेंगे" |

जनवरी से लेकर सितंबर तक रोग का प्रकोप झेलते रूग्णावस्था में भी "हे पवहारी शरण तिहारी, राखोलाज हमारी" की पंक्तियाँ दुहराते मुझसे और दिव्या से यही कहते कि "बेटा! अब मुझे गाज़ीपुर ले चलो |"

अपने जामात श्री दीपक राय जी के यह अनुरोध करने पर कि "पिता श्री वहाँ आपका इलाज कैसे हो पायेगा ? तो हँस कर कहते "फिर आ जाऊँगा" |

अन्तत: डॉक्टरो के पैनल ने अपना क्रूर निर्णय सुना दिया कि अब आप लोग घर पर ही उनकी सेवा करें दवाओं की लम्बी लिस्ट देकर सहानुभूति पूर्वक नेताजी तथा मेरी पुत्री दिव्या को सत्यता का बोध करा कर एम्स के डॉक्टरो ने हमे विदा दी |

मेरे बड़े सुपुत्र शैलेन्द्र अमेरिका से आ चुके थे - 8 सितंबर सन् 2019 को अश्रुसिक्त अपने परिवार से विदा लेकर एम्बुलेंस से हम घर लौट आये| डबडबाती आंखो और अवरुद्ध कंठ से अपने दौहित्र देवांश के यह पूछने पर की "नानाजी ! गाजीपुर में आप कैसे अच्छे हो पायेगे: इसलिए वहाँ मत जाइये"! उसके मस्तक पर आशीष की मुद्रा में हाथ

रखकर हंसते हुए बोले ! "तो बेटा मैं फिर तुम्हारे पास आ जाऊँगा !" अपनी धरती अपने घर या अपनी कर्मभूमि पर लौटने की खुशी थी या "पवहारी बाबा" की अक्षुण्य कृपा पाने की अभिलाषा ? मेरा अन्तरमन तो काँप रहा था |

9 सितंबर 2019 की रात 1:00 बजे घर आकर विश्रान्ति के क्षण बीते तो भोर में पंछियों की चहचहाहट तथा रश्मिरथी की किरणों के स्पर्श से जगकर प्रसन्न मुद्रा में कहने लगे "पवहारी आश्रम से पंडित जी को बुला लेना"|

मैंने दिल्ली में कहा भी था कि गाजीपुर पहुँचकर अविलम्ब पवहारी आश्रम से पंडित अमरनाथ तिवारी जी से मैं "पवहारी बाबा" की प्रतिमा का शिलासंकल्प प्रतिष्ठापन का कार्य संपन्न करवा दूंगी| किंतु परिवार में मेरे जेठ जी की ज्येष्ठ बहू का निधन हो जाने से सूतक समाप्ति तक यह शुभ कार्य संपन्न नहीं हो सकता था | उन्हें इस घटना से अवगत नहीं कराया गया था |

त्रयोदशाह की समाप्ति हो गई थी | वृहस्पतिवार को पवहारी बाबा की प्रतिमा स्थापना हेतु संकल्पित शिला पूजन का समस्त कार्य पंडित अमरनाथ तिवारी जी द्वारा विधिवत संपन्न हुआ | मेरे समधी साहब तथा अन्य सुहृद इस अवसर पर उपस्थित थे |

स्वस्ति वाचन के अवसर पर पंडित अमरनाथ तिवारी जी के चरणों का स्पर्श करते हुए, हृदय की असीम प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहने लगे "बाबा" आज मेरा संकल्प पूरा हुआ ! आगे सारा कार्य आप लोग देखेंगे" |

शायद यह संकेत ज्येष्ठ पुत्र शैलेन्द्र नेता जी श्री सच्चिदानंद राय आश्रम के पुजारी आदरणीय तिवारी जी और मेरे लिये ही था |

आँखों में भर आये अश्रुकणों को रोकना अति कठिन था फिर भी मैं उठकर बाहर चली गयी | कौन जानता था कि एक सद्गृहस्थ, वकालत जैसे पेशे से आजीविका अर्जित करने वाला व्यक्ति आपनी नि: स्पृह निष्ठा और योगिराज के चरणों में अपनी श्रद्धा को इस प्रकार निवेदित करने के लिए नौ महीने के लंबे प्रवास के बाद मात्र 9 दिन पूर्व ही इस संकल्प शिला की स्थापना की बाट जोहता हुआ बाबा के चरण-रज को स्पर्श करने के लिए ही आतुरभाव से उनकी शरण में आ पहुँचा |

हमारे परिवार पर सदैव अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखने वाले पुजारी जी, योगिराज के चरणों से स्पर्शित रजकण (मिट्टी) और आश्रम की पाँच ईंटों को अपने साथ आश्रम से लेकर

आए थे और उन्हें वकील साहब से स्पर्श कराकर पूर्ण विधिविधान से इस शुभ कार्य को संपन्न कराया |

अगले ही दिन शैलेन्द्र और श्री सच्चिदानंद राय जी वाराणसी जाकर जैन परिवार द्वारा स्थापित मूर्ति कला केंद्र में योगिराज 'पवहारी बाबा' की वियतनामी पत्थरों से बनने वाली मूर्ति का आर्डर देकर आ गये |

शैलेंद्र द्वारा यह बताये जाने पर की "बाबा" की प्रतिमा बनने जा रही है, उनके नेत्र सजल हो उठे | धीर गंभीर मुखा-कृत पर संतुष्टि का भाव उभर आया |

शैलेन्द्र ने कहा पिताजी आप अच्छे हो जाइए, तब हम लोग बनारस जाकर उनकी मिट्टी द्वारा बनायी गयी "डमी" को देखकर आ जायेगें |

अगले वृहस्पतिवार को वह तिमिराच्छादित कालरात्रि आ पहुंची | 20 सितंबर की सुबह एम्स के डॉक्टरों ने सभी रिपोर्ट के साथ मेरी पुत्री दिव्या को बुलाया था

किंतु यह क्या एटेन्डेन्ट नेबुलाइजर दे रहा था | मैं पैरों को दबा रही थी मृगेन्द्र पास ही खड़ा कोई दवा लाया था डा०M.D.सिंह से पूछकर | शैलेंद्र सिरहाने खड़े होकर कह रहे थे, पिताजी "जरा मुंह को बंद कर लीजिये, तभी तो दवा भीतर तक जा सकेगी |

लगता था इसे क्षण की प्रतीक्षा थी | आंखों के सामने जो कुछ घटित हुआ वह सर्वथा अकल्पनीय था | मात्र एक हिचकी आई और सबकुछ समाप्त हो गया | परमतत्व का आश्रय लेकर गयी हुई स्वास स्तम्भित हो चुकी थी | बिना किसी शारीरिक कष्ट के चिरनिद्रा में निमग्न निश्चेष्ट नि: शब्द और नि:स्पन्द काया को देखकर ह्रदय चीत्कार कर उठा | शोकसन्तप्त परिवार का करुण क्रन्दन करता ह्रदय शोक की लहरों में डूबता जा रहा था | गीता के श्लोक जो कभी दूसरों को सुनाया करती थी , मुझे कुछ भी स्मरण नहीं रहा | मैं भी एक सामान्य अवला थी | गयी हुई स्वास कभी वापस नहीं आती पढा था किन्तु समझ नहीं सकी | सब कुछ तो यथावत सामने उपस्थित था | फिर यह कैसा विलाप ? और जिसके लिए आर्त ह्रदय हाहाकार कर रहा था, वह तो मेरे सामने था | शोक के गहरेभंवर में बड़े वेग से डूबती जा रही थी | कुछ संज्ञा लौटी तो देखा कि चिर अभिलषित सत् संकल्प की परितृप्ति का भाव मुख पर व्याप्त था | सारे बधंनों को तोड़कर आत्मा अपने प्रियतम से मिलने के लिये प्रयाण कर चुकी थी |

रीते जीवन के कठिन क्षण निर्ममता पूर्वक बीत रहे थे | गिरते स्वास्थ और शुगर ने आंखों की रोशनी पर गहरा प्रभाव डाला| अमेरिका से लौटे मेरे छोटे

भाई उमेश कु० राय और भावज सुषमा राय मुझे लेकर दिल्ली आ गए, जहाँ से उपचारों परांत मैं दिव्या के परिवार के साथ कुछ समय बिताकर गाजीपुर आ गयी।

2020 के प्रारंभ में ही विश्वव्यापिनी व्याधि कोरोना का प्रसार होने लगा था। मार्च आते-आते व्याधि विद्रूपता कि ऐसी लहर आयी कि देखते-देखते संपूर्ण जन जीवन ठप्प हो गया।

परिवार का कोई भी सदस्य मुझे गाजीपुर लौटने नहीं देना चाहता था, किंतु अपने अंर्तमन की बात कैसे बताती कि 'उनके' संकल्प सिद्धि के कार्य के लिए (योगिराज पवहारी बाबा) मेरा यहाँ आना अति आवश्यक था, तब तक भारत में कोविड-19 जनवरी के प्रारंभ से ही प्रभावी हो चुका था।

25 मार्च 2020 को लॉकडाउन की घोषणा के साथ सभी कार्यों तथा जन- जीवन को अवरोधित करने वाली इस महामारी ने पूरे विश्व में ऐसी तबाही मचाई की लाखों लोग काल कवलित होने लगे।

लॉकडाउन की शीघ्र घोषणा ने कोरोना के आगोश में आने से लोगों को बचाया तो अवश्य किंतु बेरोजगारी और विकास के मार्ग में भारी अवरोध उपस्थित हो गया।

मार्च 2021 में कोरोना की दूसरी लहर की विनाशकारी लीला ने जन-धन की अपार क्षति की।

उन दिनों घर से बाहर निकल कर आश्रम जाना और निर्माण कार्य को गति प्रदान करना असंभव सा हो गया था।

पंडित अमरनाथ तिवारी जी से फोन पर वार्ता होती रहती थी। वे भी बार-बार संक्रमण की भयावहता देखते हुए मना करते रहे। अपने मन की व्यग्रता और कचोट ने गहरे अवसाद में डाल दिया।

जैसे ही स्थितियाँ कुछ सामान्य हुयी, भवन निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री तो पहुँचायी जा रही थी किंतु कभी नक्शा कभी जमीन के कार्य का विलंब तो कभी मजदूर-मिस्त्रियों का अभाव निर्माण कार्य में बाधा पहुँचाता रहा। वर्ष पर्यंत सभी ऋतुओं का प्रहार झेलना तो स्वाभाविक ही था।

कभी मंदिर के नक्शे को लेकर महीनों विचार-विमर्श चलता रहा कभी पत्थरों की क्वालिटी रंग और ग्रेनाइट से लेकर उन्हें लगाने वालों के क्रिया-कलाप को देखने, पारिश्रमिक अदा करने और सबसे अधिक पूर्व के जर्जर निर्माण को, बिना क्षति पहुंचाये हुए, नये निर्माण का जोखिम भी कम नहीं था।

हाँ! मेरे मन ने प्रकृति के साथ खूब रमण किया | कभी गाड़ी, कभी बाइक, कभी ऑटो, जब भी जो भी साधन मिला उससे आश्रम पर जा पहुँचती|

कान्वेंट स्कूल के चौराहे से लेकर बड़ा महादेवा तक तो मार्ग कुछ अच्छा था, किंतु इसके बाद सीवर की पाइप लाइन बिछाने के कार्य के लिए खोदी गई सड़कों का हाल देखकर हिम्मत पस्त हो जाती | सभी अवरोधों ने अनेक मार्गों से होकर बाबा के आश्रम तक जाने के लिए नित्य नये अन्वेषणों के द्वार खोल दिये | नये-नये आविष्कृत मार्गों से होकर गुजरने का आनंद तो कुछ और ही था, असीम आनंद में गोते लगाती मैं सभी कष्टों को भूल जाती | जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आने वाली सभी बाधायें नगण्य हो जाती है |

बड़े महादेवा से मार्ग दो भागों में विभक्त हो जाता है, एक मार्ग एस० पी० साहब के बँगले से होकर जगत तारिणी मां गंगा के किनारे-किनारे होता हुआ, खेतों की हरियाली और सघन वनराजि की भीनी-भीनी मधुर सुगंध की मादकता में मन सराबोर होता चला जाता | दो-दो वसन्तो में उधर से गुजरी तो अमराईयों की गूँजती कोयल की मधुरिम स्वर लहरी, और फागुन की फगुनहट में बौराये आम्रवृक्षो की मजंरियों की दिव्य सुगंध मदहोश ही नहीं करती वरन समस्त क्लान्ति को भी हर लेती थी | सरसों के फूलों का बासन्तिक वितान नेत्रों को अद्भुत सुखद शान्ति प्रदान करता |

प्रकृति की यह रम्यता नगरीय जुगुप्सा (जो निर्माण कार्य के लिए खोदी गयी नालियों कीचड़ से सनी सड़कों डंपर तथा जे सी बी की घरघराहट से उपजता था) को हर लेती थीं गंगे तव दर्शनात मुक्ति;" की सुखद परिकल्पना का प्रवल आकर्षण इस मार्ग से अति सुलभ थी। रवि रश्मियों की प्रखर किरणों से समस्त बालुका तट रजतमय हो उठता था

इस रसानुभूति में डूबे मन को, टूटी-फूटी छिन्न-भिन्न कोलतार की क्षीण काया सड़कों पर बने बड़े-बड़े गढ़ों का आघात पुनः यथार्थ की धरती पर ला पटकता।

कभी कभी दिन के 8:00 बजे, कभी 10:00 या कभी सांय के 5:00 बजे मैं आश्रम पहुँचती| यह अकथनीय आनंद मेरे जीवन की महानिधि बन कर मेरे विरही मन को असीम शांति प्रदान करता रहा |

आश्रम पर पहुँच कर कार्य का निरीक्षण तो बाद में होता, पंडित जी की कृपा से श्री विग्रहों का दर्शन-पूजन करने के उपरांत द्वार पर बैठकर मन की समस्त विह्वलता आंसुओं के वेग में फूट पड़ती |

क्षणार्ध के लिए भी उस महाद्वार पर बैठकर मैं अपनी समस्त व्यथा को योगिराज के चरणों में निवेदित कर देती| पंडित जी का राज मिस्त्रियों और मजदूरों के लिए सेवाभावी व्यवहार, कभी प्रसाद, कभी चाय, और दोपहर में भोजन की व्यवस्था में बाहर भीतर आती-जाती प्रक्रिया में प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता था |

सबसे मारक क्षण तो तब उपस्थित होता जब पुरातन निर्माण को हटा कर ही नवीन निर्माण करना होता | वर्षो पुराने जीर्ण-शीर्ण द्वार उकठते आम, आँवले के वृक्षों की डालियाँ ,दीवारों के भरभरा कर गिरते प्लास्टर या बाबा का वह विश्राम स्थल जो चबूतरे के रूप में दिखाई पड़ता था, जहाँ बाबा बैठकर ध्यान मग्न हो जाते थे, या शांत क्षणों में अपने रचना संसार को मूर्त रूप प्रदान करते थे, चारों खम्भों पर टिका यह निर्माण जर्जरित हो चुका था| इसको हटाये बिना नवीन निर्माण संभव नहीं था |

संभ्रम में पड़े मन को आर्तभाव से समझाते और अन्तरयामी बाबा से क्षमा माँगते हुए कि "हे महाप्रभु जिस स्थान का कण-कण आपके पावन संस्पर्श से परम पवित्र है, उसे हम भला कैसे छुए ? पंडित जी का अनुरागी चित्त भी मानो बाबा से आज्ञा लेकर ही इस कार्य को मूर्त रूप देने में प्रवृत्त हुआ था, और परिसर के नक्शे के अनुसार निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ विघ्न बाधाओं के अनेक क्षण आए |

किंतु योगिराज पवहारी बाबा की अदृश्य शक्ति और असीम कृपा पल-पल अनुभव करता मन कार्य सिद्धि का प्रसाद पाता रहा | लगभग डेढ़ वर्षो का यह समय कब बीत गया पता ही नहीं चला |

सबसे अधिक विघ्न तो तब उपस्थित हुआ जब बाहरी दीवार से सट कर निर्मित रथ रखने के स्थान को हटाये बिना उस छोटे से द्वार को जिसका वर्णन स्वामी विवेकानंद ने भी किया था, नवीन निर्माण, संभव ही नहीं था | मंदिर के पीछे पश्चिम की ओर रथ को रखने के लिए नये कक्ष का निर्माण करा उसे स्थानांतरित करने के बाद ही उस जर्जरित दीवार को तोड़कर चारों ओर की दीवारों को एक साथ मिलाने के बाद नये और विशाल प्रवेश द्वार का निर्माण हो सका |

पूर्व की निर्मित स्मृतियों को मिटाना ही पड़ा और यह व्यामोह मन को हर पल मथता रहा | राजस्थानी प्रस्तर कला के निपुण कारीगरों की टोली ने प्रवेश द्वार के ऊपर की सज्जा में अपना अमूल्य योगदान दिया और आश्रम के पुनरुद्धार के साथ वाराणसी से पधारी बाबा की वियतनामी प्रस्तरो से निर्मित शुभ्र धवल वर्णी प्रतिमा को यहाँ लाने का दिन भी नियत हो गया |

बीच-बीच में मैं, मृगेन्द्र और तिवारी जी वाराणसी जाते रहे, मिट्टी से बने आकार की त्रुटियों को सुधारने का परामर्श देकर आई तो दूसरी बार कोई नई त्रुटि निकल आती। कभी तर्जनी उंगली के काफी बड़ा बना देते कभी कौपीन को यथावत न पाकर तिवारी जी उन्हे निर्देश ही नहीं देते वरन-विभिन्न संप्रदायों की तिलक लगाने की परंपरा का वैशिष्ट्य समझाते हुए , अपने मनोनुकूल निर्माण का आदेश देकर हम लोग वापस लौट आते।

बीच-बीच में कभी मिस्त्री और मजदूर गायब हो जाते ,कभी दुकान वाले घटिया सामान रात में गिराकर चल देते, और कभी प्रकृति के अनेक झंझावातो में मूसलाधार वर्षा के घटाटोप अंधियारे, कभी कृष्णवर्णी तो कभी धूसर वर्णी बादलो की श्यामल घटा घंटो आश्रम परिसर में रोक लेती।

वर्षाकाल में मां गंगा की उत्ताल तरंगों का नर्तन तो नयनाभिराम दृश्य उपस्थित करता ही था ,हरहराती गंग धारा आश्रम तक आ पहुँचती। दरस-परस की साध पूरी हो जाती, सीढियों के नीचे आकर हम मां के जल का आचमन कर कह उठते गंगे तव दर्शनातमुक्ति।

कभी शस्यश्यामला धरती के गोद में हरियाली का साम्राज्य बिछाती धानो की वालियाँ वायु वेग में झूमती हुई, नबवधू सी सकुचाती और शरमाती एक दूसरे के आलिगंन पाश में बंधकर वर्षा की बूंदों की मुक्तामाला पहनकर विहँसती दिखाई पड़ती। पुलकित मन से विशाल पीपल वृक्ष की जगत पर बैठ जाती और कल्पनालोक में विश्व वंद्य विवेकानंद को शत-शत प्रणाम निवेदित करते हुए कह उठती कि "धन्य हो स्वामी धन्य हो। इस धराधाम पर पधार कर आपने ही तो मेरे बाबा को घोर अज्ञानान्धकार में डूबे इन संसारी लोगों के बीच प्रतिष्ठित किया वरना कुर्था आश्रम के महायोगी की कहाँ इच्छा थी कि भौतिक जगत में लोग उन्हें जाने।

स्वामी जी की परम प्रिय शिष्यामगिनी निवेदिता कि ये पंक्तियाँ - **So pass the some twelve months then Swami went away to Ghazipur to visit pawahari Baba that saint who me he always held second only to Rama Krishna.**

भगिनी निवेदिता की ये पंक्तियाँ इगित करती हैं कि परमहंस रामकृष्ण देव की माँ काली की अनन्य उपासना का सम्मोहन जन-जन को आत्मविभोर कर रहा था, अपने गुरु के संकीर्तन और विज्ञान पर अध्यात्म के गूढ़ रहस्य का साक्षात्कार कर ही विवेकानंद कुर्था आश्रम के पवहारी बाबा के सुरम्य कुटीर पर उनका आशीर्वाद लेकर ही पाश्चात्य जगत में आध्यात्मिकता का डंका बजाने के लिए यहाँ पधारे थे।

The master as -9-saw him by sister Nivedita page. 37

27 मई को पंडित अमरनाथ तिवारी जी के पौरोहित्व में सायं काल मां गंगा के पूजनोंत्सव का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ब्रिगेडियर श्री उमेश कुमार राय अपनी धर्म पत्नी श्रीमती सुषमा राय के साथ गंगा पूजन के लिए स्वजनों के साथ उसी तट पर उपस्थित थे, जहाँ कभी पवहारी बाबा के आदेशानुसार निमंत्रण पत्र-फल मिष्ठान्न, व वस्त्रादि के साथ भेट सामग्री अर्पित कर मां सुरसरि को यज्ञ में निमंत्रित किया गया था।

आज पुन: पतित पावनी मां गंगा के तट पर विविव पूजन सामग्री के साथ श्रद्धा के अतिरेक में भाव विह्वल होकर सभी जन माँ को नमन तथा निमंत्रित करने आए थे। आज उन्ही के अनन्य भक्त और प्रिय पुत्र का यह अनुष्ठान उनकी कृपा के बिना कैसे संपन्न हो पाता ?

संपूर्ण परिवेश एक अदृश्य सम्मोहन में बँधा दिखाई दे रहा था। धूमिल संध्या का मनोमुग्धकारी परिदृश्य, नीड़ को लौटते पक्षियों का कलरव और उन्मत्त लहरों का आलिंगन रत केलिकल्लोल मन और नेत्रों को असीम शान्ति प्रदान कर रहा था।

मन ही मन माँ सुरसरि को स्मरण कर छलछलाती आंखों से अश्रुकण की कुछ बँदे तप्त बालुका कणों में गिर कर विलुप्त हो गयी। बस इतना ही कहा था माँ! तुम्ही प्रत्यक्ष देवि हो! मेरे बाबा के यज्ञ को सफल बना देना। मुझ अकिंचन पर सदैव अपनी कृपा बनाये रखना।

पूजनोंपरांत सभी लोग आश्रम में आ चुके थे। आनंदानुभूति में डूबा मन घने अंधकार में चमकते विद्युत प्रकाश की आभा से जगमगाते परिसर को मुग्ध भाव से देख रहा था। प्रसाद ग्रहण कर रात्रि के 9:00 बजे तक सभी लोग घर वापस लौटे।

योगिराज पवहारी बाबा के अनन्य भक्तों की श्रृंखला में बधें सभी भक्तजनों को उनका दायित्व सौपा जाने लगा। श्री सच्चिदानंद राय जी के सत्प्रयास से सभी संतो से मिलकर उन्हें आमंत्रित करने लाने और ले जाने का कार्य प्रमुख रूप से उन्हें सौपा गया।

मैं स्वत: पीठाधीश्वर हथियाराम मठ के स्वामी भवानीनंदन यति जी महाराज को समारोह की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित करने गयी। उनका आशीर्वाद प्राप्त कर अतीव हर्ष की अनुभूति हुई। परमपूज्यपाद हंस परिब्राज़काचार्य श्रद्धेय श्री स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज श्री कृष्ण योगमाया शक्तिपीठ, विंध्याचल, दण्डी स्वामी श्री प्रकाश देव जी महाराज आश्रम चौसठ्ठी मठ वाराणसी, श्री गोपाल जी (आनंद जी) महाराज पीथापुर गाजीपुर

श्री रामकृष्ण मिशन वाराणसी से परिब्राजकाचार्यों की टोली को आमंत्रित करने का कार्य श्री सच्चिदानंद राय जी को तथा वेदपाठी ब्राह्मणों और बटुको द्वारा पूजन-अर्चन और यज्ञादि की व्यवस्था का समस्त भार पंडित अमरनाथ तिवारी जी को सौंपा गया।

संत शिरोमणि श्री राम नरेशाचार्य एवं गाजियाबाद के सिद्ध सुदर्शन धाम के आचार्य श्री रामकृपाल जी महाराज को आमंत्रित किया गया किंतु उनके विदेश में रहने के कारण वे यहाँ नहीं आ सके।

श्री राम नरेशाचार्य जी ने अपना "शुभ संदेश" भेज कर पवहारी बाबा के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित की। नियत तिथि से पूर्व दिल्ली से एडवोकेट श्रीमती संगीता त्यागी, श्रीमती दिव्या राय, कु० सौम्या राय, श्रीमती सुषमा राय, ब्रिगेडियर उमेश कुमार राय, जोधपुर से श्री ओमप्रकाश राय, लखनऊ से श्रीमती मानवी द्विवेदी, श्री प्रमोद द्विवेदी, तथा आजमगढ़ से श्री कृष्ण मोहन जी दो दिन पूर्व से ही आकर समारोह की तैयारी में जुटे हुए थे।

अन्ततः चिर प्रतीक्षित वह बेला भी 30 मई सन् 2022 की आ गयी।

श्रीमती अर्चना राय एवं श्री मृगेन्द्र कुमार राय ने वैदिक रीति से वेदपाठी ब्राह्मणों द्वारा प्रातः 6:00 बजे से लेकर 11:00 बजे तक प्रतिमा प्रतिस्थापन पूजन-अर्चन यज्ञ-हवन आदि के समग्र कार्य विधि विधान से संपन्न कराया।

स्व० अखिलेश नारायण राय जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री शैलेंद्र कुमार राय, पत्नी की अस्वस्थता के कारण अमेरिका से नहीं आ सके थे, अतः उनके छोटे सुपुत्र श्री मृगेंद्र कुमार राय और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अर्चना राय ने पंडित श्री अमरनाथ तिवारी जी के पौरोहित्य में समस्त मांगलिक कार्यों को संपन्न कराया।

विश्राम गृह में विराजित सभी संतो को वेदोंच्चरित मंत्रों तथा शंख ध्वनि के बीच प्रतिमा प्रतिस्थापन स्थल पर ले जाया गया। विशाल परिसर में श्रद्धा और भक्ति से भरे भक्तजनों का सैलाब उमंड़ रहा था।

श्वेत और गेरुआ वस्त्र धारी संत समाज के मध्य रेशमी काषाय परिधानों को धारण किये हुए बटुको का निरंतर वेदोंच्चरित करता समूह मंडप में विराजित योगिराज की आवृत्त प्रतिमा के समीप आ पहुँचा। अनावरण काल का वह अलौकिक और अद्भुत क्षण अवर्णनीय था।

योगीश्वर पवहारी बाबा का यह सिद्धाश्रम कभी उनके द्वारा संपन्न किए गए महायज्ञ के अवसर पर अनेक साधुओं, संतों, सिद्धों और भक्तगणों से सुशोभित हुआ था, आज लगभग 130 वर्षों उपरांत चतुर्दिक प्रसरित यज्ञ धूम संत संगम और दूरस्थ क्षेत्रों से पधारे भक्तजनों की जय-जय कार से गुँज रहा था | मृंदग, भेरी, शंख ध्वनि के तुमुल कोलाहल के मध्य पुष्प पराग, अंगराग और कुमकुम की यत्र-तत्र बिखरी राशि, खचाखच भरे प्रांगण में मैं अपनी मन मंजूषा के बिखरे भाव कणों के अननुभूत सत्य का साकार रूप देखकर मुग्ध थी |

वर्षों की अभिलाषा को आज मूर्त रूप जो मिला था | भाव विह्वल मन का सम्मोहन तो तब टूटा जब रामकृष्ण मठ से पधारे स्वामी अलोकानंद जी महाराज प्रतिमा का अनावरण करने जा रहे थे, भवानीनन्दन यति जी महाराज मुझे बुला रहे थे | स्वामी ज्ञानानन्द जी, स्वामी प्रकाश देव जी, और गोपाल जी महाराज की समुपस्थिति में मेरा संकोची मन उन क्षणों को सुध-बुध खोकर अपने नेत्रों से अपलक निहारने में ही तत्पर था | अहोभाग्य ! जो उन्होंने मेरी सुधि ली |

कृष्णवर्णी प्रस्तर खंड पर स्वर्णाक्षरों में अंकित, साधु समाज का परिचय और समारोह में उनकी उपस्थिति के साथ संकल्प शिला के स्थापना का वह दृश्य जो मेरे स्वामी ने लिया था आज पूर्ण हुआ | परिसर में स्थापित योगीश्वर पवहारी बाबा की धवल वर्णी प्रतिमा पर विराजित श्वेत रेशमी दुकूल, चन्दन की माला के साथ गुलाब और बेला के फूलों से गुंथे पुष्पहारो से ढ़क सी गई प्रतिमा पर इंद्रधनुषी ज्योति का झिलमिलाता प्रकाश अत्यंत मनोहारी लग रहा था |

परिसर परिक्रमा तथा मंदिर में स्थापित देव विग्रहों के दर्शन के पश्चात जन समूह संत जनों के पीछे-पीछे मंच की ओर बढ़ रहा था | डॉ० व्यास मुनि राय ने माइक से सभी को सुनिश्चित स्थान पर आसीन होने का ब्रम निवेदन किया |

स्वामी सहजानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ० मान्धाता राय, समारोह के संयोजक तथा इस कार्यक्रम में अग्रणी भूमिका निभाने वाले श्री सच्चिदानंद राय, एड० श्री शेषनाथ राय, एड० श्री शम्भू नाथ राय, पूर्व कुलाधिपति श्री सिंह साहब, प्रधानाचार्य श्री पारसनाथ राय आदि ने संतों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए उन्हें स्थान ग्रहण करने में सहयोग प्रदान किया |

काशी से पधारे हिंदी साहित्य मर्मज्ञ डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० विनीत राय, पूर्व राज्यमंत्री डॉ० संगीता बलवंत, पूर्व विधायक श्री पशुपति नाथ राय, एवं प्रख्यात साहित्यकार आनंद जी का स्वागत समिति के द्वारा हार्दिक स्वागत और अभिनंदन किया गया |

सुदूर क्षेत्रों से आने वाले श्रद्धालुजनों की उमड़ती भीड़ परिसर में बढ़ती जा रही थी| मार्गदर्शक मंडल, स्वागत समिति के सदस्य गण तथा कार्यकर्ताओं की टोली द्रुतगति से बाहर से पधारने वालों को ससम्मान यथा स्थान बैठने का आग्रह कर रही थे | नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष श्री विनोद कुमार अग्रवाल जी प्यास बुझाने के लिए टैंकरों से जलापूर्ति की व्यवस्था संभालने में व्यस्त थे, तो प्रशासनिक अधिकारी व पुलिस बल सुरक्षा में तैनात था | भगवान सूर्य नारायण की प्रखर किरणों का मानो किसी को भान ही नहीं था |

मंचासीन साधु समाज की शोभा अवर्णनीय थी | एक ओर आश्रम के वृक्षों पर अंगारे की तरह दहकते पुष्पो की छटा निराली थी तो दूसरी ओर काषाय वस्त्रधारी संत समाज का दिव्य समागम योगिराज के उत्सव की पावनता को पराकाष्ठा पर पहुँच रहा था |

कही हिंदी और भोजपुरी साहित्य के मूर्धन्य कवि भोलानाथ गहमरी जी की लिखित पंक्तियाँ,

दिगंत व्यापी बाबा की कीर्ति का यशोगान कर रही थीं.....

जय-जय गाधिपुरी की जय हो |

जय धरती बलिहारी ||

दिशा-दिशा में गूँज रहा |

जय महासन्त पवहारी ||

कभी मंच से डॉ० व्यास मुनि राय की यह उद्घोषणा की "स्वागत समिति के लोग, संत समाज को योगाधिराज पवहारी बाबा के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन में सहयोग करें | यह दृश्य अत्यंत मनोरम था | सभी संतो ने बाबा के चित्र पर केशर, कुमकुम, रोली, अक्षत, चंदन, का तिलक लगाकर उन्हें पुष्पहार अर्पित कर दीप प्रज्वलन के पश्चात् अपना स्थान ग्रहण किया|

कु० सौम्या राय, मानवी द्विवेदी, दिव्या राय, संगीता त्यागी आदि ने सभी संतो को पुष्पहार पुष्पगुच्छ और अंगवस्त्रम् अर्पित कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया | डॉ० मान्धाता राय, डॉ० व्यास मुनि राय, एड० शेषनाथ राय ने संतजनों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया |

कार्यक्रम के सूत्रधार और संयोजक श्री सच्चिदानंद राय ने काशी से पधारे विशिष्ट अतिथि डॉ० अवधेश प्रधान जी को माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया | डॉ० विनीत राय ने स्वामी

भवानी नंदन यति जी महाराज की शिष्या किरण बाला जी को पुष्पहार तथा दिव्या राय ने अंगवस्त्रम् प्रदान कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया | श्री उमेश कु० राय ने प्रधान जी को स्मृति चिन्ह तथा पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया | बीच-बीच में झुंड के झुंड आते भक्तों का जनरव का आहलाद मुखर होता जा रहा था | सभी संतो के शिष्यगण अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धा निवेदित करते हुए उनकी जय-जय कार कर रहे थे | इसी के मध्य उन्हें पवहारी बाबा के प्रति व्यक्त विविध उद्गारों को अभिव्यक्त करने वाला 'पत्रक' वितरित कर बाबा के पावन चरित से परिचित होने का सुअवसर प्रदान किया गया | सभी साधु संतों और अतिथियों को पीतांबर पट्ट तथा स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया |

काशी से पधारे बटुकों द्वारा स्वस्ति वाचन के पश्चात मंचस्थ संतों की अमृत वाणी का रसपान करता हुआ भक्त समुदाय भुवन भाष्कर की तप्त किरणों का आतप अत्यंत शांति और श्रद्धा से सहन कर रहा था |

प्रथम सम्बोधन रामकृष्ण मिशन और मठ से पधारे स्वामी आलोकानंद जी का था| उन्होंने बताया कि विश्वाचार्य स्वामी विवेकानंद जी ने महान संत पवहारी बाबा के सानिध्य में कुछ दिन गाजीपुर में स्थित उनकी कुटिया में बिताए थे | उन दिनों का संस्मरण स्वामी जी के कथनों और लेखो में उपलब्ध है | पवहारी बाबा के पावन चरित्र और तपस्या मय जीवन से स्वामी जी अत्यंत आकृष्ट और प्रभावित हुए थे | चौसठ्ठी मठ वाराणसी से पधारे विशिष्ट अतिथि दण्डी स्वामी, श्री प्रकाश देव जी, महाराज की तेजोमयी वाणी में आध्यात्म की व्याख्या, मूर्तिपूजन रहस्य और पवहारी बाबा के विराट व्यक्तित्व की चर्चा अत्यंत चकितकारी रूप में श्रद्धा भक्ति से भावित जनसमूह ग्रहण कर रहा था |

श्री कृष्ण योगमाया शक्तिपीठ विंध्याचल से पधारे परमपूज्यपाद हंस परिब्राजकाचार्य श्रद्धेय श्री स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज का स्वागत जन समूह हर्षातिरेक से अभिभूत होकर कर रहा था| क्योंकि वर्षो पूर्व कुर्था आश्रम से नातिदूर उनकी यज्ञशाला में यज्ञ-कर्म करते हुए जन-जन ने अपने को धन्य किया था | उन्हें आज अपने बीच पाकर आनंद मग्न हो उठे थे | गाधिपुरी के ग्राम पीथापुर के रहने वाले जन-जन के हृदय में अपनी सहजता, सरलता, मित भाषिता, तथा उनके हृदय में आनंद का उत्स प्रवाहित करने वाले गीता मर्मज्ञ आचार्य श्री गोपाल जी, (आनंद जी) को प्रत्यज्ञ पाकर सभी भक्तगण परम आनंद की अनुभूति कर रहे थे |

विवेकानंद जी की भाँति ही पश्चिमी जगत के भोगवादी जनसमूह को अपनी अजस्र ज्ञान धारा में बहा ले जाने की क्षमता का साक्षात दर्शन, उनके अमेरिका के प्रवास काल में मैंने स्वयं किया था | वर्ष 2005 में मेरे और मेरे पतिदेव (वकील साहब) के अनुरोध पर

आप शिकागो की फ्लुएन्टन हाल में ठीक उसी स्थान पर उसी माइक के साथ स्टेज पर खड़े होकर वर्तुलाकार सभागार में

"ॐ पूर्ण मदः पूर्ण मिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते ॥

श्लोक का अपनी मधुर वाणी में पाठ कर रहे थे । भीषण शीत की लहरों में मात्र एक अधोवस्त्र और उत्तरीय को लपेट, गौरवर्णी ललाट पर अंगराग और चंदन मिश्रित खौर धारण किये, भारतीय ऋषि परंपरा में प्रयुक्त कृष्णवर्णी पावन पादुका धारण कर एक संन्यासी बरवस लोगों को अपनी ओर आकृष्ट ही नहीं कर रहा था, वरन उनके सम्मोहन में बंधकर साश्चर्य निहार रहा था, कि यह दूसरा विवेकानंद आज इस परिसर में पुनः कहाँ से आ गया ?

मेरी चिराभिलाषा पूर्ण हुई । आज मैं एक दूसरे योगी के साथ उस स्थल पर खड़ी थी जहाँ से स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमी जगत को आध्यात्म की दिव्य ज्योति प्रदान की थी ।

पश्चिमी जगत का अप्रतिम स्नेह कितना सार्थक है| वर्ष 1893 से लेकर आज तक उन क्षणों को इन लोगों ने सहेज कर रखा था| यद्यपि वह विशाल अट्टालिका या भवन आज विश्व धरोहर के रूप में भव्य म्यूजियम के रूप में परिणत हो गई है ।

अपनी मधुरवाणी का सम्मोहन डालते हुए, योगीश्वर पवहारी बाबा के जीवन रहस्य के बारे में सार गर्भित व्याख्यान देकर इस आश्रम के सेवाभाव की विशद चर्चा की । जिन महान सन्तो तपस्वियो, यतियों, सिद्धों, और आचार्यो की तपश्चार्य से गाधिपुरी की धरती परम पवित्र हुई है, उनमें एक हथियराम मठ के वर्तमान पीठाधीश्वर स्वामी भवानी नंदन यति जी महाराज जो इस समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे, उनके उद्बोधन तथा आशीर्वाद की आकांक्षा से मंत्राविष्ट श्रद्धालु भक्तगणों का असीम धैर्य अत्यंत सराहनीय था ।

ज्येष्ठ माह की तपती धूप में बैठे श्रद्धालु जन तपश्चर्या की अग्नि में स्वयं को तपाकर कुंदन की भाँति निखरने वाले संतजनों के प्रति अगाध श्रद्धा की अनुभूति में ऊभ-चूभँ हो रहे थे| गर्मी की दाहकता बढ़ती जा रही थी । और मन में अत्यंत ग्लानि भी हो रही थी, प्रकृति की कठोर परीक्षा में श्रद्धा भाव की पराकाष्ठा पर पहुँचे जन-मन सभी निश्चल भाव से शांत और संयत होकर यति महाराज की अमृत वाणी का रसपान करने के लिए आतुर हो रहे थे|

"संत हृदय नवनीत समाना" योगिराज पवहारी बाबा के प्रतिमा अनावरण समारोह के अध्यक्ष पद पर विराजित यति जी महाराज का हृदय भाव विभोर था | सभी कठिनाइयों को अनुभव करते हुए, उनके एक-एक शब्द हृदय को छू रहे थे, उन्होंने सर्वप्रथम यह कहा कि ये लोग "राजपुरुषों की सभाओं में बलपूर्वक प्रलोभित करके लाये गए, श्रोतागण नहीं है, वरन आत्मप्रेरित, श्रद्धाभिभूत, धर्म के मर्म को हृदयंगम करने के लिए उपस्थित हुए हैं | योगिराज पवहारी बाबा के इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर हम लोग भी अतीव आनंद का अनुभव कर रहे हैं | सनातन धर्म की सारगर्भित व्याख्या, से जन समुदाय को अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हुए अनेक रोचक प्रसंगों की व्याख्या ने वातावरण को सजीवता और सरसता प्रदान की |

सेवा भावी स्वयं सेवकों, आयोजन में पधारे सभी साधु सन्यासियों और सुदूर क्षेत्रों से आए, यज्ञ कर्म में अपनी उपस्थिति से आयोजन को सफल बनाने वालों को अपना हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया |

उनके अध्यक्षीय संबोधन की मर्मस्पर्शी बातों को श्रवण कर गलदाश्रु श्रोतागण अपने को धन्य मानते हुए भक्ति रस में आकंठ निमग्न थे | कार्यक्रम का समापन करते हुए डॉ० अवधेश प्रधान जी का सारगर्भित संबोधन तथा संतों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन अत्यंत समीचीन तथा मार्मिक था | आपने इन क्षणों की सार्थकता तथा सन्त समाज के दुर्लभ सत्संग को बारम्बार घटित होने की विनती योगिराज पवहारी बाबा के चरणों में निवेदित की |

वकील साहब की बड़े सुपुत्र यद्यपि इस अवसर पर उपस्थित नहीं थे, फिर भी उन्होंने पवहारी बाबा के चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित करते हुए एक संदेश-पत्र प्रेषित किया, जिसमें उन्होंने चंद शब्दों में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की "मेरे पिताजी की सांसारिक वस्तुओं के प्रति कोई बड़ी आकांक्षाये नहीं थी | उनकी आवश्यकताये भी अत्यल्प थी | उनकी विशेष आकांक्षा पवहारी बाबा की प्रतिमा स्थापना की ही थी जो लगभग सवा सौ वर्षो तक आश्रम में स्थापित नहीं हो सकी थी |

मृत्यु के मात्र आठ दिन पूर्व संकल्पशिला के प्रतिस्थापन पर उनका मुख मंडल अत्यंत परितोष से दमक रहा था | परिवार के सभी सदस्य और सहयोगी भी उनके इस आह्लादक प्रसंग से अत्यंत प्रसन्न थे | हम लोगों को यह कहाँ पता था कि जिस बृहस्पतिवार को चार घंटे के पूजन-अर्चन को पंडित अमरनाथ तिवारी जी के पौरोहित्य में उन्होंने संपन्न कराया, ठीक उसके आठवें दिन रात्रि 11:30 बजे दूसरे बृहस्पतिवार को निर्वाण को प्राप्त हो जायेगें | "अपने पिता की पुण्य स्मृति को प्रणाम करते हुए, पवहारी बाबा के चरणों में अपनी हार्दिक श्रद्धा निवेदित करता हूँ" |

शैलेन्द्र कुमार राय

डॉ० शकुंतला राय के छोटे भाई उमेश कुमार राय ने अत्यंत भावुक होते हुए पत्र को पढ़ा और अपनी श्रद्धा निवेदित की |

कार्यक्रम समाप्ति की ओर था सभी साधु संन्यासी और महात्मा लोगों की विदावेला आ गयी | ज्येष्ठ अमावस्या का व्रत रहने के कारण, कई लोग दान-दक्षिणा और फलाहार ग्रहण कर अपना आशीर्वाद देते हुए सभास्थल से प्रस्थान किये |

सांय प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी भोग-भंडारे की वृहद व्यवस्था आश्रम की ओर से की गई थी | दिन के 3:00 बजे से रात्रि के 12:00 बजे तक नगर तथा ग्राम के लोग प्रसाद पाते रहें | इस दिव्य और भव्य आयोजन का वर्णन शब्दातीत है | आगन्तुकों की विदाई करके, घर से पुन: आने पर रात्रि का जो दृश्य वर्षों से देखती आ रही थी, उसमें आज बाबा की साक्षात उपस्थित की प्रतीति प्रतिमा के समीप जाने पर हो रही थी |

बाबा की धवल वर्णी प्रतिमा विद्युत झालरों तथा विविध वर्णी प्रकाश की किरणों से जगमगा रही थी | प्रकाश के साथ संगीत का मधुर स्वर भी गूँज रहा था | संपूर्ण परिसर बेले की लड़ियों और विद्युत झालरों के दिव्य प्रकाश से झिलमिला रहा था | उद्यान के पुष्पित वृक्ष, लतिकाये और उनकी शाखोंओं पर सुनहले, हरे, नीले गुलाबी और रक्तवर्णी बिजली के बल्बों का मोहक प्रकाश फैला हुआ था | बाहर की भारी भीड़ रह-रह कर बाबा की जय-जय कार कर रही थी, क्यों कि आज उन्हें, बाबा का साक्षात दर्शन भी तो प्राप्त हो रहा था | मैं अपनी पुत्री दिव्या राय दौहित्री सौम्या राय तथा दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, आजमगढ़, जोधपुर, कलकत्ता से पधारे स्वजनों और संबन्धियो के साथ अलौकिक और दिव्य अनुभूति को ह्रदयंगमकर रही थी | अमावस की रात का अंधकार दिव्य प्रकाश से हार सा गया था | ये भाव भरे क्षण किसी को अश्रुसिक्त कर रहे थे, तो किसी को रात्रि के सघन अंधकार में झिलमिलाती इंद्रधनुषी आभा रोमांचित कर रही थी | बाबा का स्नेह सिक्त स्वर सुनायी पड़ा | "आप लोग प्रसाद तो ग्रहण कर ले

न चाहते हुए भी प्रसाद पाने के उपरांत घर आना ही पड़ा | आंखों में बसी यह अनुपम छवि वर्षों की साध ही नहीं पूरी कर रही थी, वरन मन: प्रवृतियों को परिष्कृत कर अपने जीवन का नया अध्याय प्रारम्भकरने का मार्ग भी निर्दिष्ट कर रही थी |

योगिराज पवहारी बाबा की पावन स्मृति आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। कर्मरूपी लेखनी से पूर्वकृत कर्मों का क्षय हो जाने से प्रारब्ध के समस्त दोषों का परिहार होना संभव है | और उत्तम सौभाग्य की प्राप्ति से व्यक्ति नर से नारायण और जीव से शिव बन जाता है |

सृजनात्मकता की सामर्थ्य सर्वोपरि है, और सबसे बड़ी सृजनात्मकता अपने व्यक्तित्व का परिष्कार है । आचार्य श्री राम शर्मा के शब्दों में "अपना सुधार ही संसार की सबसे बड़ी सेवा है"। अतः हृदय की अज्ञान ग्रंथि का नाश ही मोक्षदायी है । कर्म की धारा को ईश्वरोन्मुख करके ही व्यक्ति की भावनाओं का रूपांतरण भक्ति में होना सम्भव है। आत्मा में निरंतर परमात्मा का अनुभव करने से मन की वासना का नाश होता है | वासनाओं की दाहकता साधना से ही बुझेगी| समस्त कल्मषो से निवृत्त मन पर विशुद्ध ज्ञान की सत्ता स्थापित होने पर आत्मा की प्राप्ति होती है | और सभी जीवो को आत्मवत् मानने की शिक्षा ही योगिराज के जीवन का सार रहा है | विश्व ब्राह्माण्ड के रूप में प्रकट हो रहे ईश्वर की सेवा ? जीवों की सेवा, प्राणियों की सेवा, नर नारी आबाल वृद्धजनों की सेवा के रूप में अभिव्यक्त हो रहे नारायण की सेवा, उपासना, साधना और आराधना से सब कुछ सुलभ हो जाता है, जो बड़ी-बड़ी कष्टकारी साधनाओं से प्राप्त नहीं हो पाता | "वासुदेव: सर्वमिति" | को ध्यान में रखकर संत तो सदा सर्वदा सबकी सेवा ही करते हैं, और असन्त सेवा करवाते हैं | योगिराज पवहारी बाबा का संपूर्ण जीवन, हमें अपनी मन: प्रवृत्तियों को परिष्कृत करने की प्रेरणा देता रहेगा |

योगाधिराज पवहारी बाबा के पावन पाद्-पद्मों में सश्रद्ध कोटिश: नमन एवं वन्दन !

हम सभी पर बाबा की अहैतुकी कृपा बनी रहे, इन्हीं अनन्त मंगल कामनाओं के साथ |

दर्शनार्थियों के अभिमत

02-03-2006

पौहारी आश्रम गाजीपुर पधार कर अद्भुत आनंद और विस्मय का बोध हुआ | स्वामी विवेकानंद जिनके दर्शन के लिए महीनों तक धरना देते रहे, और जिनके आदेशो की अवहेलना करना जगत तारिणी गंगा भी नहीं कर सकती थी, उन पौहारी बाबा की साधना भूमि को स्पर्श कर अद्भुत आनंद का अनुभव करता रहा धन्य हुए थे स्वामी विवेकानंद जिनके दर्शन से, उन पौहारी बाबा को मेरा शत-शत प्रणाम |

2 मार्च 2006

बकलम मोहम्मद इसराइल अंसारी

कार्यकारी संपादक

दैनिक "भारत मित्र" कोलकाता

मैं अपने आपको सौभाग्य शाली मानता हूँ कि आज मैंने भारत के महान सन्त पवहारी बाबा के आश्रम का दर्शन किया | 'इस महान साधक ने भारतीय संस्कृति एंव धार्मिक साधना के विकास में जो योगदान दिया वह अद्भुत है |

(डा० टी० मोहन सिंह उस्मानिया विश्व

विद्यालय, हैदरा बाद)

ॐ भू भुर्व :स्व:

साधना से सिद्धि का अनुपम स्वार्णिम साधना स्थली का दर्शन करके हम सब कृतार्थ हुए | श्री श्री 1008 संत शिरोमणि पवहारी बाबा जी की लीला स्थली एवं साधना स्थली आगे आने वाले प्रज्ञा युग में विद्याविस्तार के लिये अन्तर्रीष्ट्रीय भूमिका निभाये ऐसी निष्कलंक प्रभु प्रज्ञावतार से प्रार्थना है, मंगल कामना है, यह सिद्ध साधना स्थली युगों-युगों तक जन समुदाय को साधना के क्षेत्र में प्रविष्ट होने की प्रेरणा देती रहेगी | इस स्थान की आध्यात्मिक चेतना की अनुभूति हुई | सूक्ष्म शरीर से पूज्य बाबा की चेतना यहाँ निवास करती है | हम सभी को उनकी आत्मा की उपस्थिति की अनुभूति हुई | अनेकों वर्षों से इस पवित्र स्थान के दर्शन की कामना पूर्ण हुई |

7-2-2008

(प्रो०विश्व प्रकाश त्रिपाठी

भुत पूर्व डीन एंव हेडकुमाऊँ विश्व नैनीताल

परिब्राजक शान्ति कुंज हरीद्वार)

पौहारी बाबा के आश्रम में आकर आज मुझे परम हर्ष एवं शांति की अनुभूति हो रही है। बाबा हमें जीवन में सफल होने एवं कर्तव्यों कि निर्वहन हेतु आशीर्वाद प्रदान करें।

(विजय कुमार वर्मा अपर जिला जज गाज़ीपुर)

पौहारी बाबा के आश्रम में आकर मैं अपना जीवन धन्य समझता हूँ। मुझे यहाँ आकर अपार शांति एवं सुख के अनुभूति हो रही है।

(अरविन्द कुमार यादव सिविल जज गाजीपुर)

14.2 2009

आज दिनांक 15-2-2009 को पवहारी बाबा के तपस्थली का दर्शन कर मन गद गद हुआ तथा परम सुख शांति का अनुभव हुआ। मैं कामना करता हूँ, कि ऐसे महान संत की शरण में बार-बार आने का शुभ अवसर प्राप्त हो।

(इफराक अहमद सिविल जज (जु० डी० सैदपुर गाजीपुर)

स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन वृतान्त पढ़ते हुए महान सन्त व् मनीषी पवहारी बाबा के अलौकिक शक्ति से अवगत हुआ आज मैं अपनी पत्नी श्रीमती अनुराधा सिंह, पुत्री कु० आकांक्षा सिंह एवं स्नेहिल जनों के साथ पवहारी बाबा के समाधि का दर्शन कर हम सभी अपने को धन्य समझते हैं।

नि:सन्देह पवहारी बाबा एक महान संत एवं अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण रहे हैं। उन्हें किसी के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं

(टी० बी० सिंह न्यायाधीश)

दिनांक 24-6-2011

11-7-2020 ये मेरी चौथी यात्रा प्रभु दर्शन के लिये हुई | पवहारी बाबा की अद्भुत कृपा संपूर्ण मानवता पर बनी रहे | प्रभु कृपा से मैं सदैव अभिभूत रहता हूँ |

(श्री बाबा के श्री चरणों में उनका दास प्रमोद से द्विवेदी U.S.A.)

मो०नं०.9454321022

सौभाग्यवश गाजीपुर आगमन के बाद आज बाबा पवहारी आश्रम का दर्शन हुआ | हरि कृपा रही तो बारम्बार आगमन का सौभाग्य मिलता रहेगा | बाबा की ऊर्जा इस केंद्र में महसूस होती है | लाभान्वित होने की कामना है |

(विश्व भूषण मिश्रा उप-जिलाधिकारी गाजीपुर)

हम ब्रह्मचारी तारक चैतन्य, ब्रह्मचारी विम्वेश्वर चैतन्य और स्वामी सुप्रियानंद आज पवहारी बाबा जी का आश्रम देखने का सौभाग्य मिला है |

(स्वामी सुप्रियानंद रामकृष्ण मिशन, मलेशिया

I am greatful to my hero Swami Vivekananda for making it possible for me to the here today. I am equally greatful to Mrs. Shakuntala Rai for bringing me physically here. I think shri Amarnath Tiwari for his great hospitality.

I feel blessed by taking Baba's best wishes. I am sure only the lucky once reach this sacred spot. I feel specially happiness during meditation here.

K. Vikram Rao director deptt of disability

affairs govt. India New Delhi

28.6.2016 12:58 P.M.

आज 17-02-2018 को पू० पवहारी बाबा की कुटिया में आकर मेरे आनंद की सीमा नहीं | बचपन में स्वामी विवेकानंद साहित्य में बाबा के बारे में पढ़ा था | आज मैं सौभाग्यशाली अपने को मान रहा हूँ कि उनकी तपस्थली को प्रत्यक्ष प्रणाम कर सका |

बाबा की मेरे ऊपर कृपा बनी रहे और उस कृपा से पूर्णान्चल वि०वि० को भारतीय संस्कृति के मानको के अनुरूप विकसित कर सकेंगे| ऐसा विश्वास है | स्वामी विवेकानंद, पू० पवहारी बाबा की जय हो |

प्रोफेसर डॉ० राजाराम यादव कुलपति-वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय जौनपुर उ०प्र०

आज मैं और सरोज परम पूज्य बाबा के स्थान पर उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ | यह स्थान बहुत पवित्र है और यहाँ Positive Energy का प्रवास है, जिसका आभास यहाँ आने पर हुआ है |

(डॉ० जे०पी० पांडेय कुलपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

प्राविधिक विश्वविद्यालय लखनऊ)

परम पूज्य पवहारी बाबा की समाधिस्थल पर एक विभिन्न ऊर्जा एवं शान्ति की अनुभूति हुई | बाबा जी के बारे में एवं उनके द्वारा स्वामी विवेकानंद जी के साथ बिताए हुए समय के बारे में जानकर एक अलग तरह की प्रसन्नता की अनुभूति हुई | ऐतिहासिक, आध्यात्मिक स्थली एवं पवहारी बाबा की समाधि को शत-शत नमन|

(14-12-2024 डॉ० हर्षिता तिवारी डिप्टी कलेक्टर गाज़ीपुर)

02-01-2025

Pawahari Baba Temple. I have visited today after hearing about it from almost 10 years I am thankful to baba ji for the chance to visited this seared place and to Krishna ogha who introduce me to this seared place. Coming here made my life full of peace.

thanks again. Navika Mhullar

18-08-78 को लिखे गणेश दत्त अग्निहोत्री जी का पत्र जो आश्रम के पुजारी जी को लिखा गया था उसमें स्वामी निर्वेदानन्द जी को अभिवादन पवहारी बाबा की पुस्तकों को पूर्णत: सुरक्षित रखने तथा चित्रों की आभा को अक्षुण्य रखने के लिये भारतीय कला भवन में उनके उपचार की व्यवस्था का वर्णन आया हैं |

बाबा के इस पवित्र परिसर में पहुँचते ही मैं अद्भुत विद्युत तरंगों से आवेष्टित अनुभव करने लगा, ऐसा लगा जैसे भीतर से पूरा-पूरा स्नान हो गया और अब कई गुना अधिक ऊर्जान्वित होता हुआ कुछ विशेष अदृश्य निर्देश प्राप्त कर रहा हूँ | लगता है, वे निर्देश भावी जीवन की धारा को गहनता से प्रभावित करेंगे | जिनके बारे में आने वाले समय में सही समय पर बाबा के आदेशानुसार कुछ कह सकूँगा | फिर शीघ्र इस स्थल पर बाबा के चरणों-चरणों में पहुँचने की प्रबल आकांक्षाओं के साथ.....

आचार्य राम कृपाल जी 20- 03-2004

श्री विवेकानंद से प्रेरित होकर पवहारी बाबा के दर्शन आज यहाँ हुए, जीवन धन्य हो गया | बाबा के बहुत-बहुत प्रणाम और नतमस्तक होकर उनकी छवि हृदय में लेकर जा रहे हैं |

असरानी

04-11-2004

03-12-2007

It is our great good furtune to be here today the month and hospitality of Amarnath ji Tiwari.

Immediately made us feel well come and at home.

our feel great to Pawahari Baba ji for reigions to Amarnath ji Tiwari for talking careful respectfully. Your humble servant of the lord.

Mrs Sabra Aswani England

We are here today due to the great of Baba ji. His presence is tangi every where and we can considered our selves blessed hearing visited this holy place. We are great full to Amarnath ji for his information our on Baba ji.

उक्तियाँ

पवहारी बाबा के वचन है

(1). दास तो स्वयं ही भूगर्भ में ही पड़ा रहता है | वह दुसरे को क्या मार्ग दिखा सकता है ?

(2). मानव को प्रत्येक श्वास लेने पर हरि नाम लेना चाहिए |

(3). उपासना छोड़नी नहीं चाहिए | आराध्य और आराधक का संबंध उच्च है |

(4). योग ही संसार में एक वस्तु है |

(5). संसार सागर से दुख नौका सरलता से पार हो सकती है, किंतु काल के सामने सभी नौकाये टूट जाती हैं, (मृत्यु अनिवार्य है)

(6). जिस प्रकार सूर्य अपना प्रकाश सभी को दान देता है उसी प्रकार मनुष्य को भी धर्म दान करना चाहिए |

(7). महाप्रभु चैतन्य की भक्ति महाभाव को विकसित करती है, ऐसे ही भक्ति करनी चाहिए |

(8). प्रेम और नेम (नियम विधि) जानकर करना चाहिए |

(9). संसार साधन का एक स्थान है |

(10). प्रवृत्ति ही सबसे बड़ा बल है | प्रवृत्ति का हनन नहीं करना चाहिए | अपने स्थान पर ही सभी कार्य ठीक होते हैं |

(11). जो साधु का दर्शन करता है, वह साधु हो ही जाता हैं यदि साधु के दर्शन का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तो साधु भी असाधु ही है |

(12). साधन के बिना किसी की भी सिद्धि नहीं होती है, गुरु से दीक्षा ले लेने पर उसका पालन दृढ़ व्रत से करना चाहिए, संदिग्ध चित से कोई कार्य नहीं होता है, बिना अध्यावसाय के भी साधन सिद्ध नहीं हो सकता है | साधना जिस प्रकार कठिन है उसी प्रकार सहज भी, चित- वृतियों को एकत्र करके संयम पूर्वक साधन करना चाहिए | एक ही बार में चित पर संयम कोई नहीं कर सकता है, धीरे-धीरे जिस प्रकार कठिन रस्सी के धागे बाँटे जाते हैं, उसी प्रकार चित को बाँधना चाहिए | अनवरत चेष्ठा करने पर सिद्धि लाभ हो जायेगा |

(13). विघ्न बाधाओं के भय से साधन न त्याग देना चाहिए, अंधकार के बाद ही प्रकाश होता है |

(14). सिद्धि की अपेक्षा साधन उच्च है, साधन में जो आनंद रहता है वह सिद्धि में नहीं ।

(15). भगवान पर सोलहो आना विश्वास करके साधना करनी चाहिए, जिस प्रकार (मार्जर शिशु) बिल्ली का बच्चा माता पर निर्भर होकर सभी कार्य करता है, बिल्ली का बच्चा छोटा रहने पर अपनी माता के ऊपर ही आश्रित रहता है, उसी प्रकार सभी चिंताओं को त्याग कर भगवान के ऊपर दृढ़ विश्वास करना चाहिए ।

(16). मनुष्य को शत्रु से डरना नहीं चाहिए
वह तो सदैव सजग ही करता रहता है|

(17). गाय का बछड़ा भूख लगने पर बाँ-बाँ करता है, गाय उसे दूध पिला देती है, वैसे ही भगवान भी भक्तजनों के पास ही रहता है ।

Phone PBX :
~~(033) 2654-1144 / 4180~~
(033) 2654-9581 / 9681
FAX : (033) 2654-4346
Email : [illegible] @belurmath.org

Website : www.belurmath.org

RAMAKRISHNA MATH &
RAMAKRISHNA MISSION
(The Headquarters)
P.O. BELUR MATH, DIST. HOWRAH
WEST BENGAL : 711202
INDIA

संदेश

विश्वाचार्य स्वामी विवेकानन्दजी के जीवन से परिचित सभी व्यक्ति जानते हैं कि महान संत पवहारी बाबा के सान्निध्य में स्वामीजी ने कुछ दिन गाजीपुर में स्थित उनकी कुटिया में बिताये थे। उन दिनों का संस्मरण स्वामीजी के कथन और लेखों में उपलब्ध हैं। पवहारी बाबा के पावन चरित्र और तपस्यामय जीवन से स्वामीजी अत्यन्त आकृष्ट और प्रभावित हुए थे।

पवहारी स्मृति परिषद् के द्वारा आगामी 30 मई 2022 को पवहारी बाबा की मूर्ति स्थापित हो रही है। यह श्रद्धालु जनों के लिये अत्यन्त आनन्द का विषय है।

श्रीभगवान से हमारी प्रार्थना है कि प्रतिमा-प्रतिष्ठापन उत्सव सुचारुरूप से सम्पन्न हो।

शुभाकांक्षी

स्वामी स्मरणानन्द

(स्वामी स्मरणानन्द)
अध्यक्ष
रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन
बेलुड़ मठ